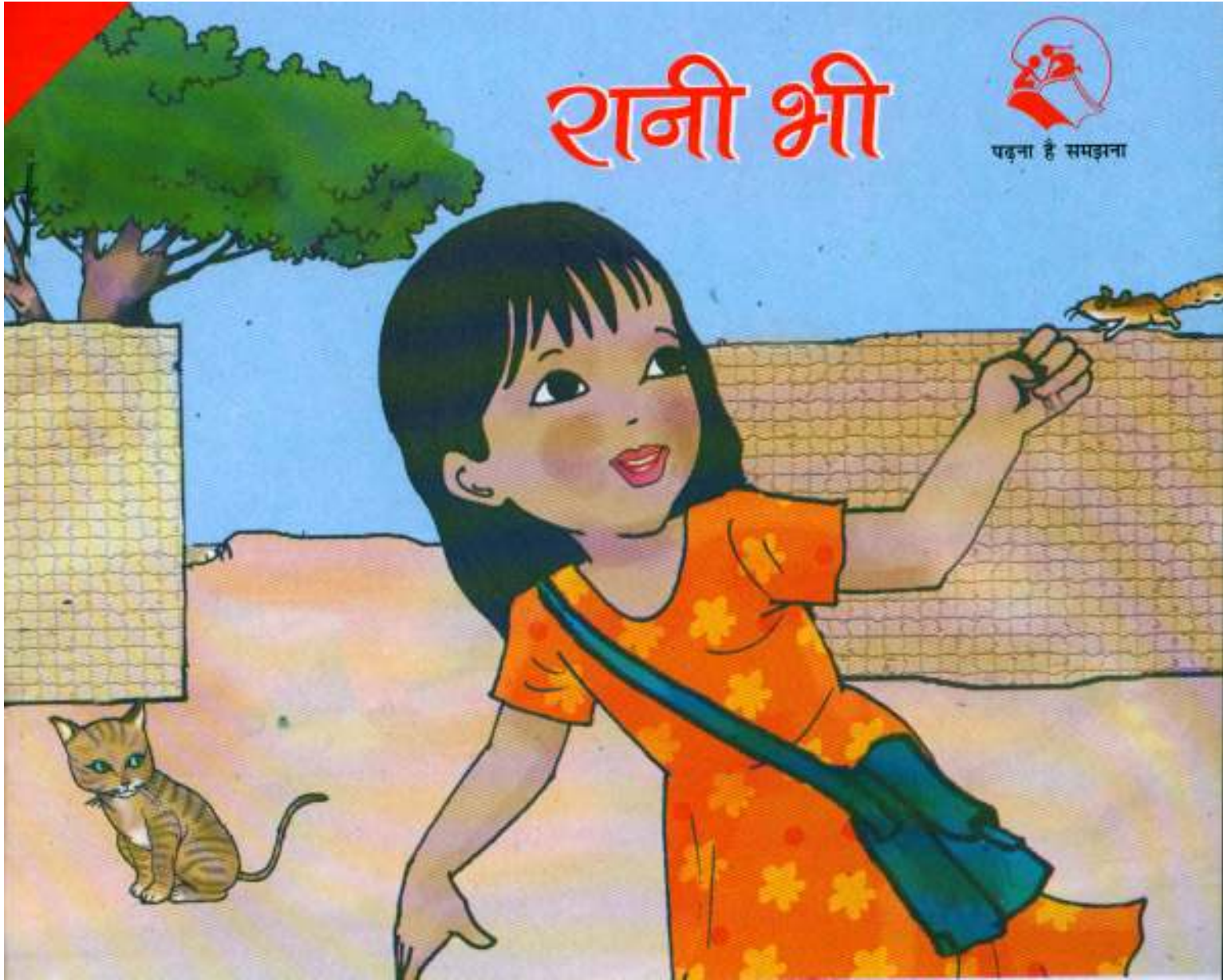


# रानी भी



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता षण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - जोएल गिल

संज्ञा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, चैतन चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, धावा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुल माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्या; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वादे, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एक.एस., मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, खे-28, इन्डियन एजुकेशन, साइट-ए, मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बस्ता-बैट)  
978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 108 फ्लैट रोड, हेर्ली एम्प्लोयर्स, होस्टेल्, बरलाघाटी III फ्लैट, जयपुर 360 085  
फ़ोन : 089-26725746
- नवजीवन टुन्डू भवन, राजस्थान नवजीवन, अजमेरवाड 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकुल बस स्टॉप पवित्रटी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25510454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगौन, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2678869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार  
मुख्य संपादक : रवींद्र ठाकुर

मुख्य तैयारी अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यवहार अधिकारी : शैलम ताम्बो



# रानी भी



रानी



रमा



रमा और रानी दो बहनें हैं।



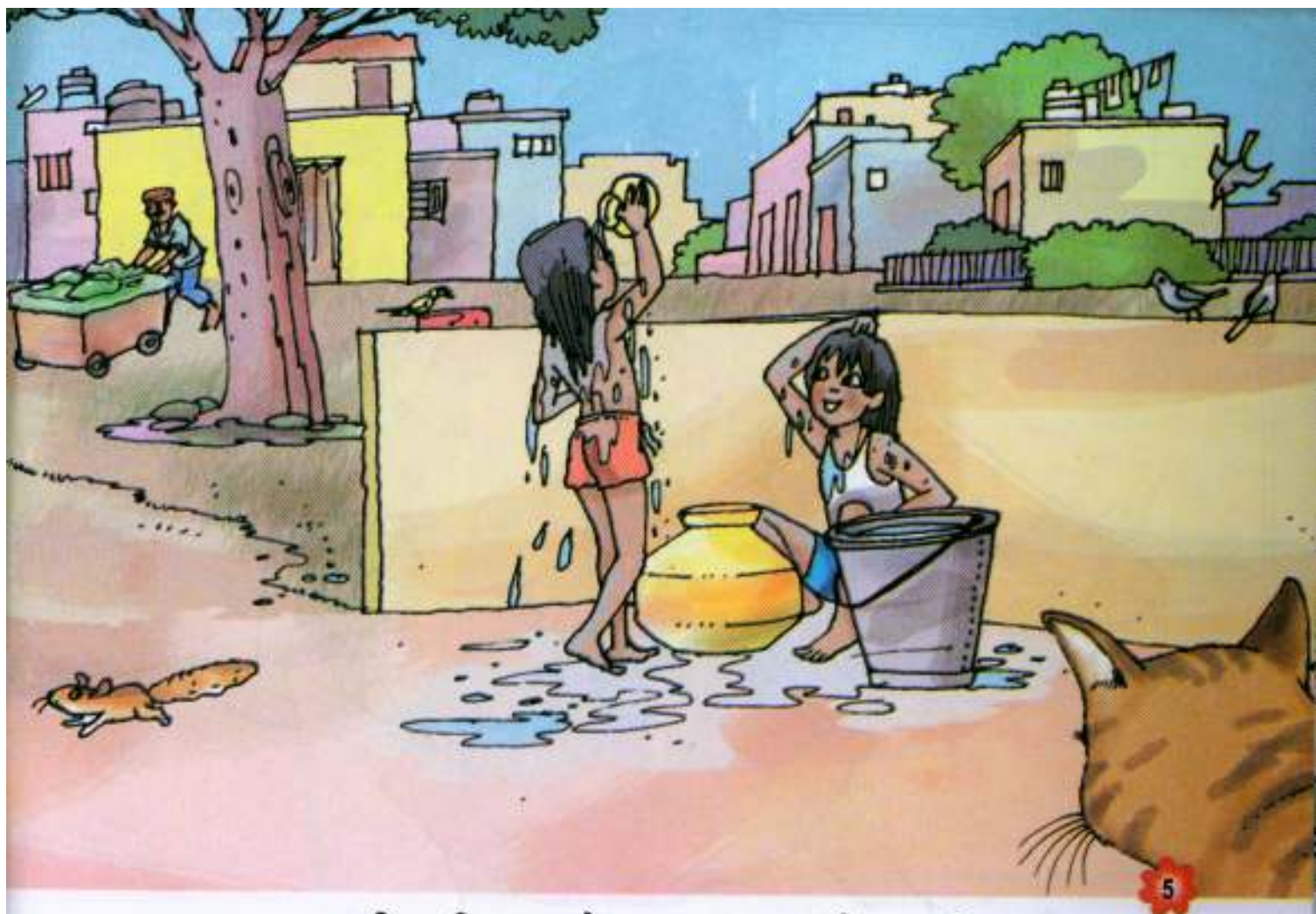


रानी हमेशा रमा के साथ रहती है।



एक दिन रमा नहा रही थी।





रानी भी उसके साथ नहाने लगी।



6

रमा ने फूलों वाली फ्रॉक पहनी।





रानी ने भी फूलों वाली फ्रॉक पहन ली।



8

रमा ने अपने बालों में कंघी की।





रानी ने भी अपने बालों में कंघी की।







रानी ने भी चप्पल पहन ली।



रमा ने अपना बस्ता उठाया।





रानी ने भी एक झोला उठा लिया।



रमा स्कूल जाने लगी।





मम्मी ने रानी को स्कूल नहीं जाने दिया।



रानी अभी बहुत छोटी है।





2057



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)  
978-81-7450-858-4

# मुनमुन

# और मुन्नू



पढ़ना है समझना





**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मलवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, मुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक -** लतिका गुप्ता

**चित्रांकन -** जोएल मिल्

**सज्जा तथा आवरण -** निधि बाधवा

**डॉ.टी.पी. ऑफ़सेटर -** अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी अंशुल गुप्ता

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजय शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महारणा गांधी आंतराष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वधो; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वचंद, रोडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 बी.एस.एस. रोल पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, गेट-28, इंदिरापुरा एरिया, सड़क-ए,  
मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-859-1

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, यशोनी, फोटोप्रतिनिधि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पृथक् द्विग उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एच.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 पीट रोड, सेलै पारमोन्तन, होम्बोकेन, बरालकरी III स्ट्रेज, बंगलुरु 560 085  
फ़ोन : 080-26725740
- नववीथन ट्रस्ट पवन, डाकघर नववीथन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैम्प, निकटः धनकल बस स्टॉप पनितरी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, सलीमबाग, मुंबई 400 021 फ़ोन : 0361-2674889

**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार  
मुख्य संपादक : शंकर ठाकुर

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यापार अधिकारी : नीलम मंगुली

# मुनमुन और मुन्नू



रमा



मुनमुन

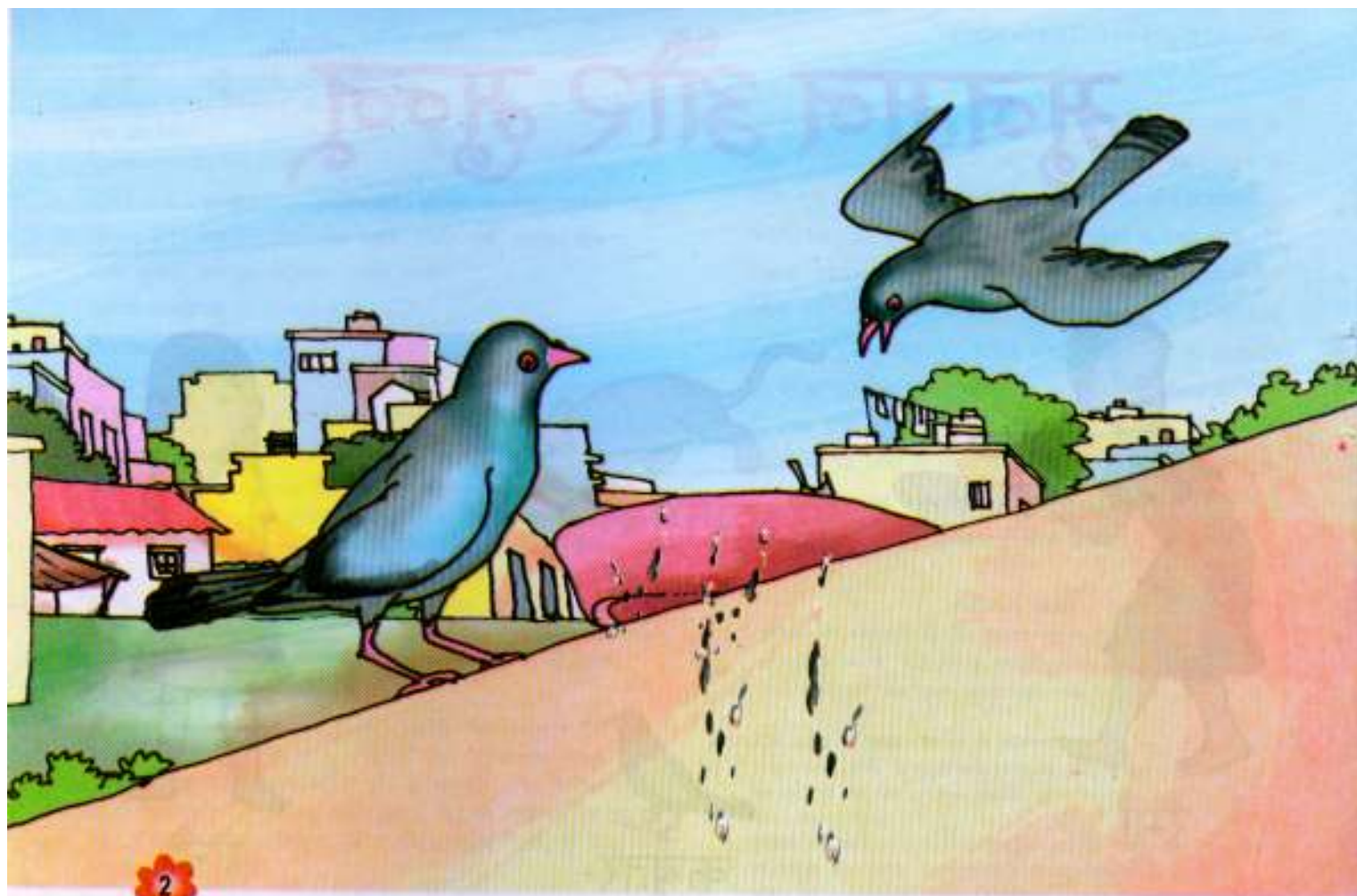


कबूतर



रानी





2

एक दिन रमा के घर में दो कबूतर आ गए।



रमा उन्हें देखने आँगन में आ गई।





4

रमा को कबूतरों का घोंसला दिखा।



रमा ऊपर चढ़कर घोंसला देखने लगी।





रानी भी घोंसला देखने आ गई।



घोंसले में अंडा देखकर दोनों बहुत खुश हुईं।





8

रानी ने देखा कि मुनमुन भी वहाँ थी।



रमा ने मुनमुन को वहाँ से भगा दिया।





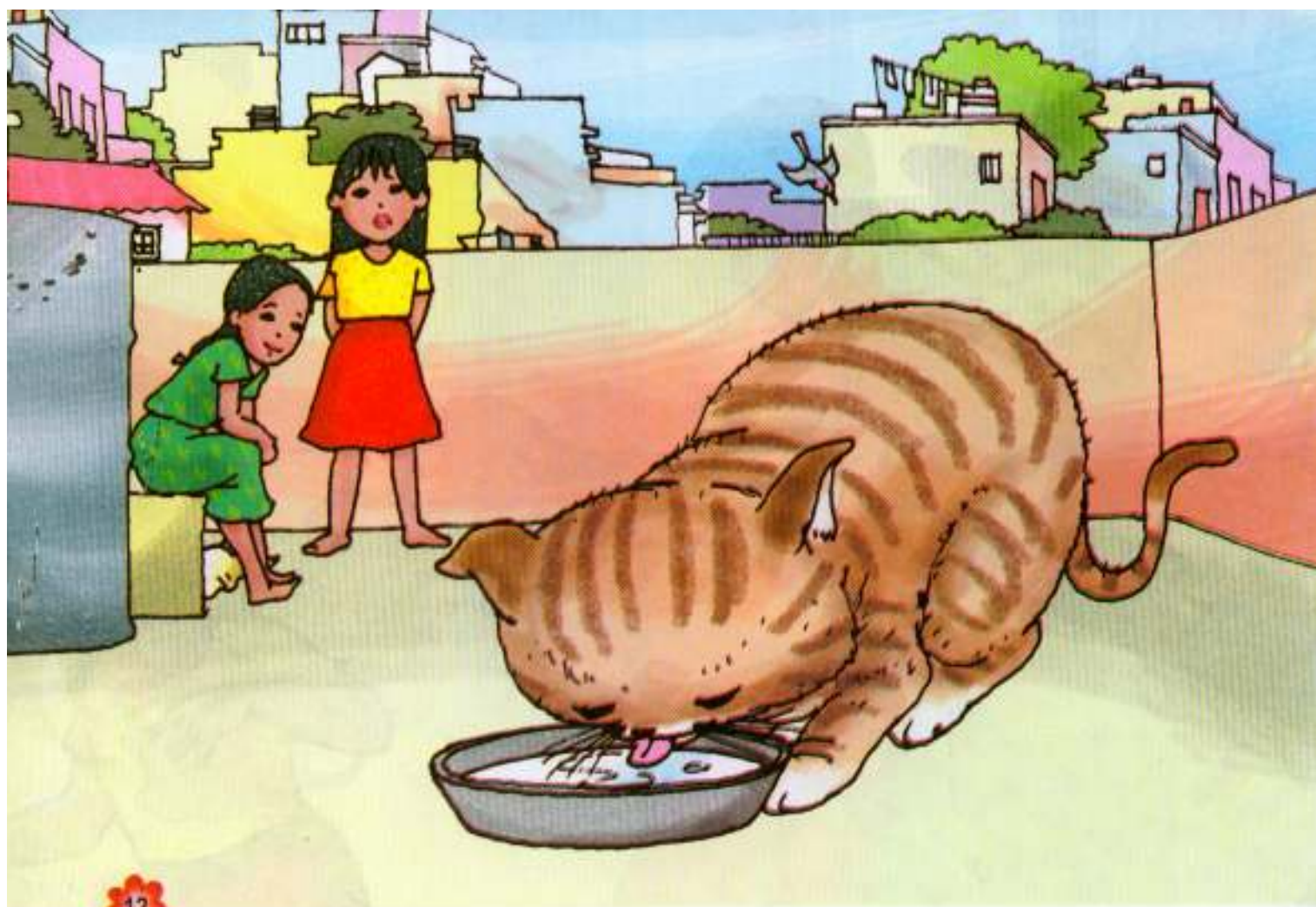
10

मुनमुन फिर से लौट आई।



रमा ने मुनमुन को दूध पिलाया।



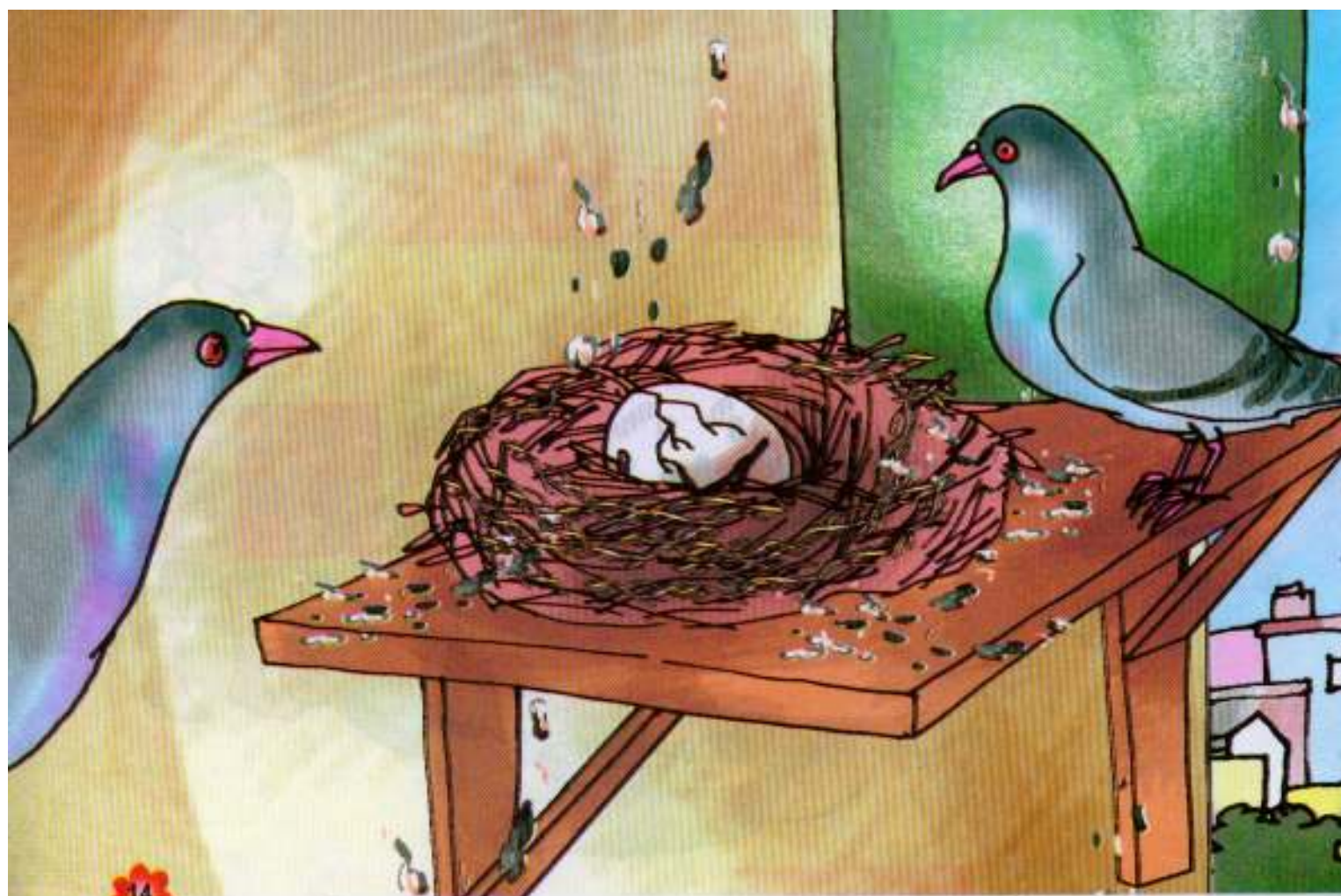


वे मुनमुन को रोज़ दूध देने लगीं।



मुनमुन रोज़ दूध पीती और चली जाती।





रमा और रानी को एक दिन अंडे में दरारें दिखीं।

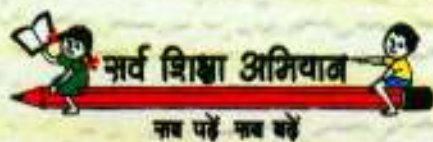


अंडे में से बच्चा निकल आया।





रमा और रानी ने उसका नाम मुन्नू रख दिया।



2058



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बद्ध-सैट)  
978-81-7450-859-1





पढ़ना है समझना

# मिठाई



प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, तुलतुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कृतिका एस. नरुला

सज्जा तथा आवरण - निधि चाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्त, मानसी सिन्हा, अंशुल गुप्त

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रयोगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामचन्द्र शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक चावपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, कर्घा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वचंद, रोडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शम्भुम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल, एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुतन हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंत, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द खर्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाशक प्रेम, डी-28, इंदिराप्रियत एरिया, सहित-ए, मधुब 281004 द्वारा मुद्रित।

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' को सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन तथा इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री आरविंद खर्ग, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 109 फीट रोड, रोली एक्सप्रेसवे, इंदिरापुरा, नया दिल्ली 110 085 फोन : 080-26725740
- नवसेन इस्ट गेट, इकपा नवसेन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- मो.उल्हास, सी. कैपल, निकट: धनकर बस स्टॉप पच्छी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.उल्हास, सी. कैपल, नवी दिल्ली, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674849

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार मुख्य उत्पन्न अधिकारी : सिध कुमार्  
मुख्य संपादक : स्वर्ण ज्योति मुख्य उत्पन्न अधिकारी : रीतम तंगुली



# मिठाई



गधा



मिठाई



2

एक दिन गधे का मन मीठा खाने का हुआ।





गधे ने दोस्तों से कुछ मीठा खाने को माँगा।



4

भालू ने कहा – शहद खा लो।





गधे ने मना कर दिया।



खरगोश ने कहा – गाजर खा लो।





गधे ने मना कर दिया।



8

चींटे ने कहा – गुड़ खा लो।







हाथी ने कहा – गन्ना खा लो।





गधे ने मना कर दिया।



गिलहरी ने कहा – आम खा लो।





गधे ने मना कर दिया।



14

बिल्ली बोली – हलवाई की दुकान पर चलो।



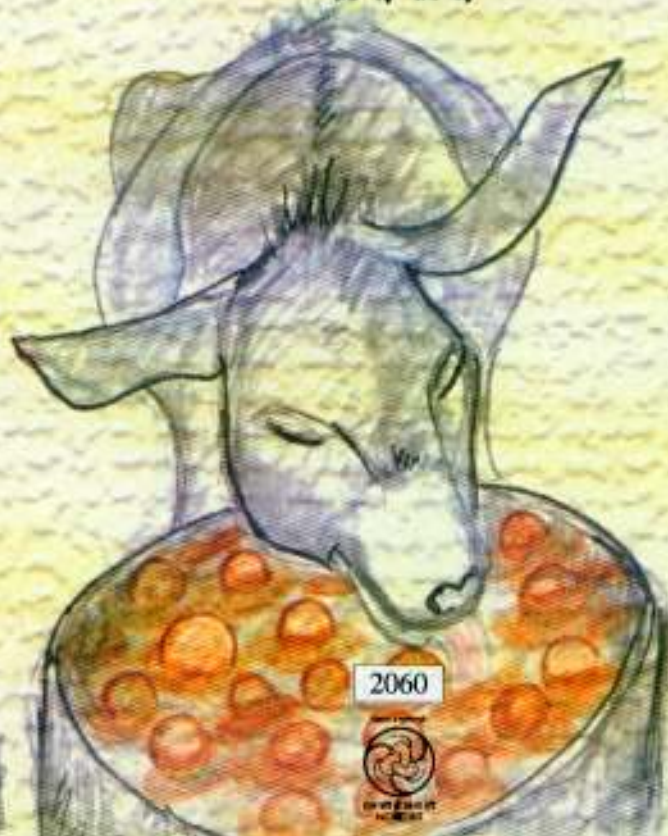


गधे को यह बात पसंद आ गई।



सब मिठाई खाने चल पड़े।





रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बगला-सेट)  
978-81-7450-861-4

# गिल्ली-डंडा



पढ़ना है समझना





पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पृष्ठ 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

#### पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - ललितिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि बाधवा

सज्जा तथा आवरण - निधि बाधवा

डि.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

#### आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशासकीय संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामबन्धु शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला मधुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

#### राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक चावधेवी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, कर्ना; प्रोफेसर फरीद, अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रोडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम मिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री मुवहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री आरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, सी-28, इंदिराप्रस्थ एरिया, साइट-ए, मधुब 281004 द्वारा मुद्रित।

978-81-7450-862-1

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोसमरा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रिंटिंग, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री आरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फोर्ड रोड, इंदी एक्सप्रेस, होबलेकरे, बंगलूरु III ब्लॉक, बंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवजीवन टूरट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, बिल्डिंग: पंचकल वस स्टॉप चण्डी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मल्लार्ग, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार	मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उष्यल	मुख्य व्यवहार अधिकारी : गौतम गर्गुली

# गिल्ली-डंडा



जीत



बबली





2

एक दिन सब गिल्ली-डंडा खेल रहे थे।





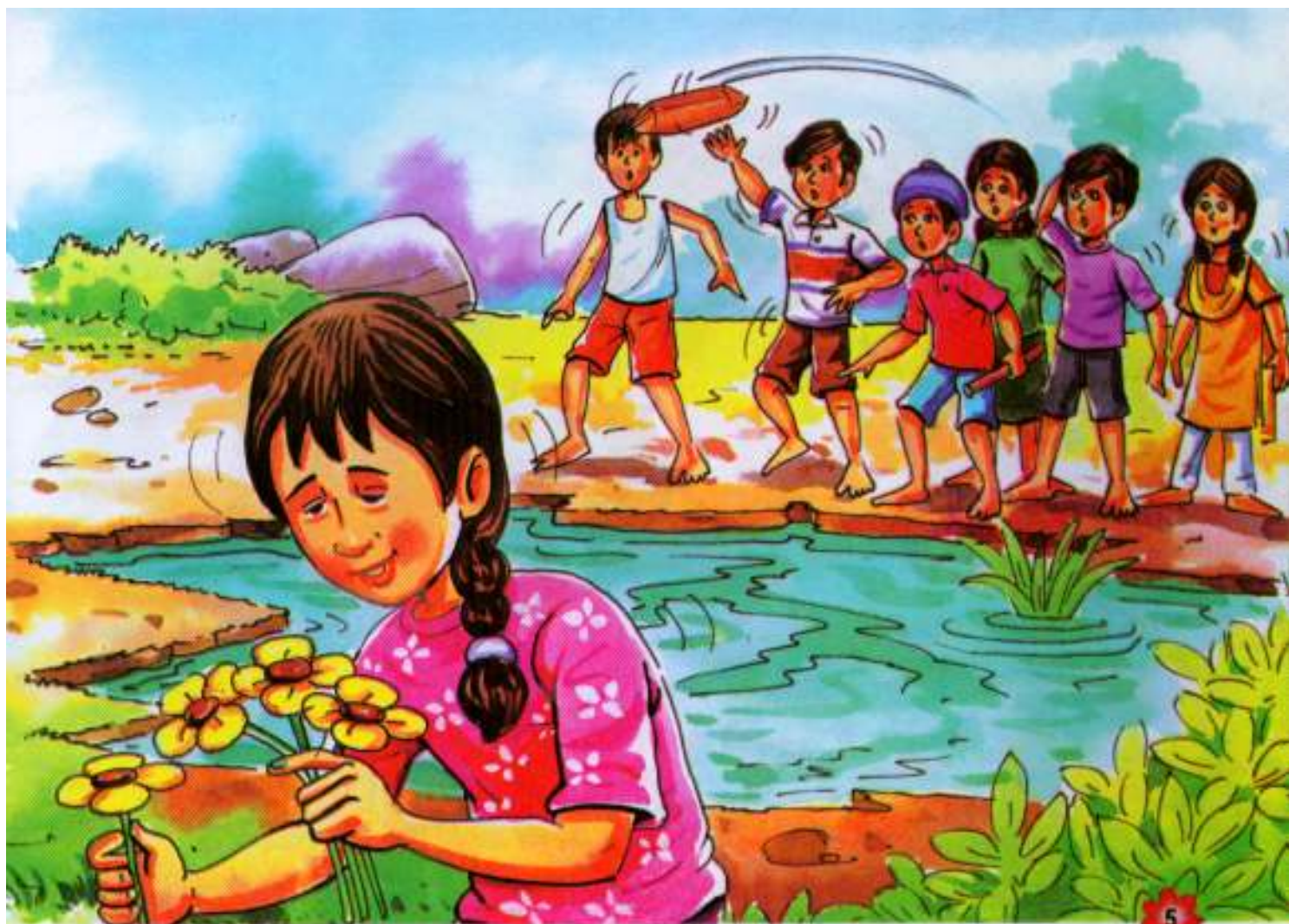
जीत ने गिल्ली को उछाला।





4

सब लोग उसे पकड़ने दौड़े।



गिल्ली तालाब के पार चली गई।





गिल्ली बबली के पास जा गिरी।



बबली ने गिल्ली उठाई।





बबली उसे तालाब के पार फेंकने लगी।



गिल्ली तालाब में गिर गई।



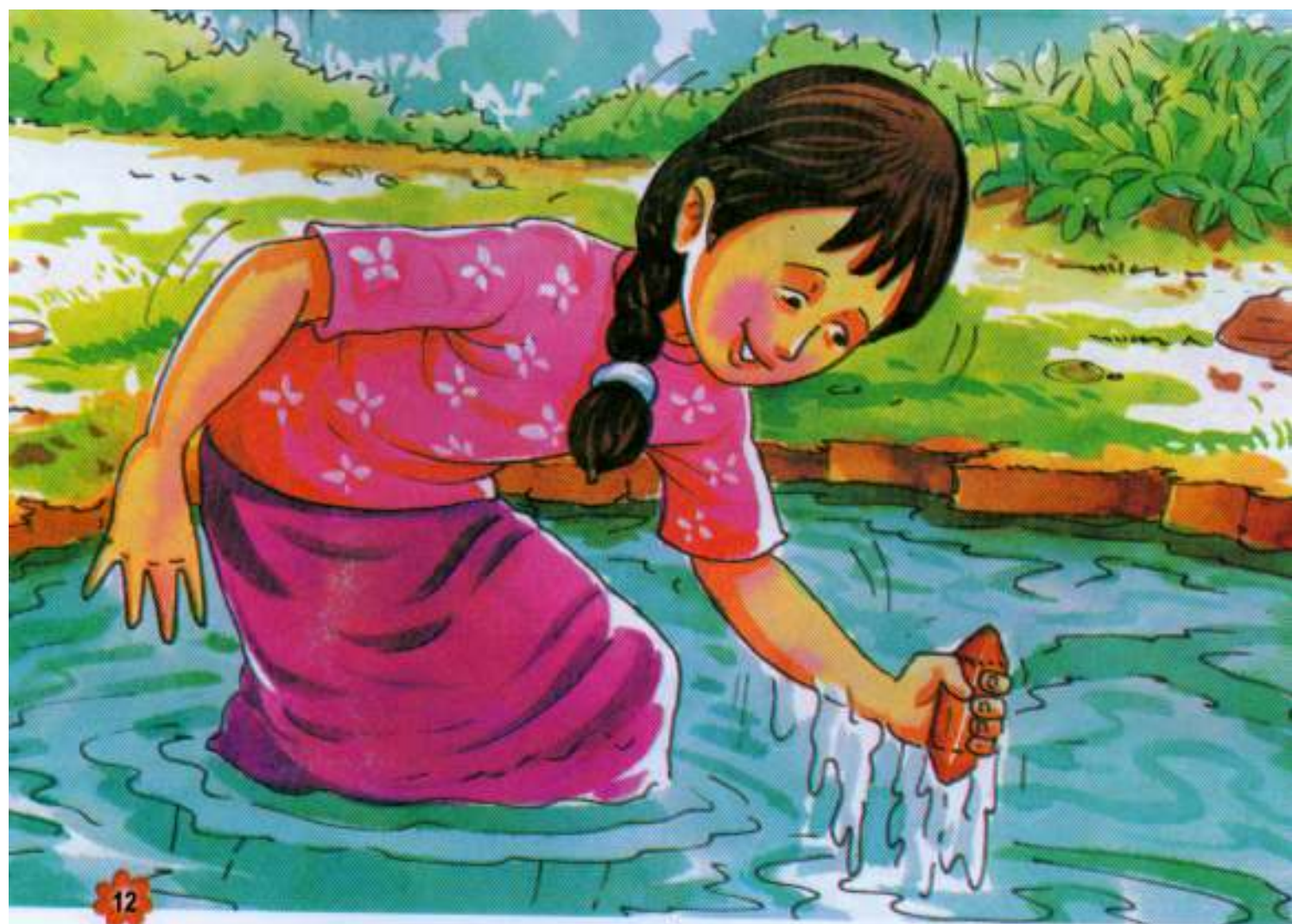


सब गिल्ली को लेकर परेशान हो गए।



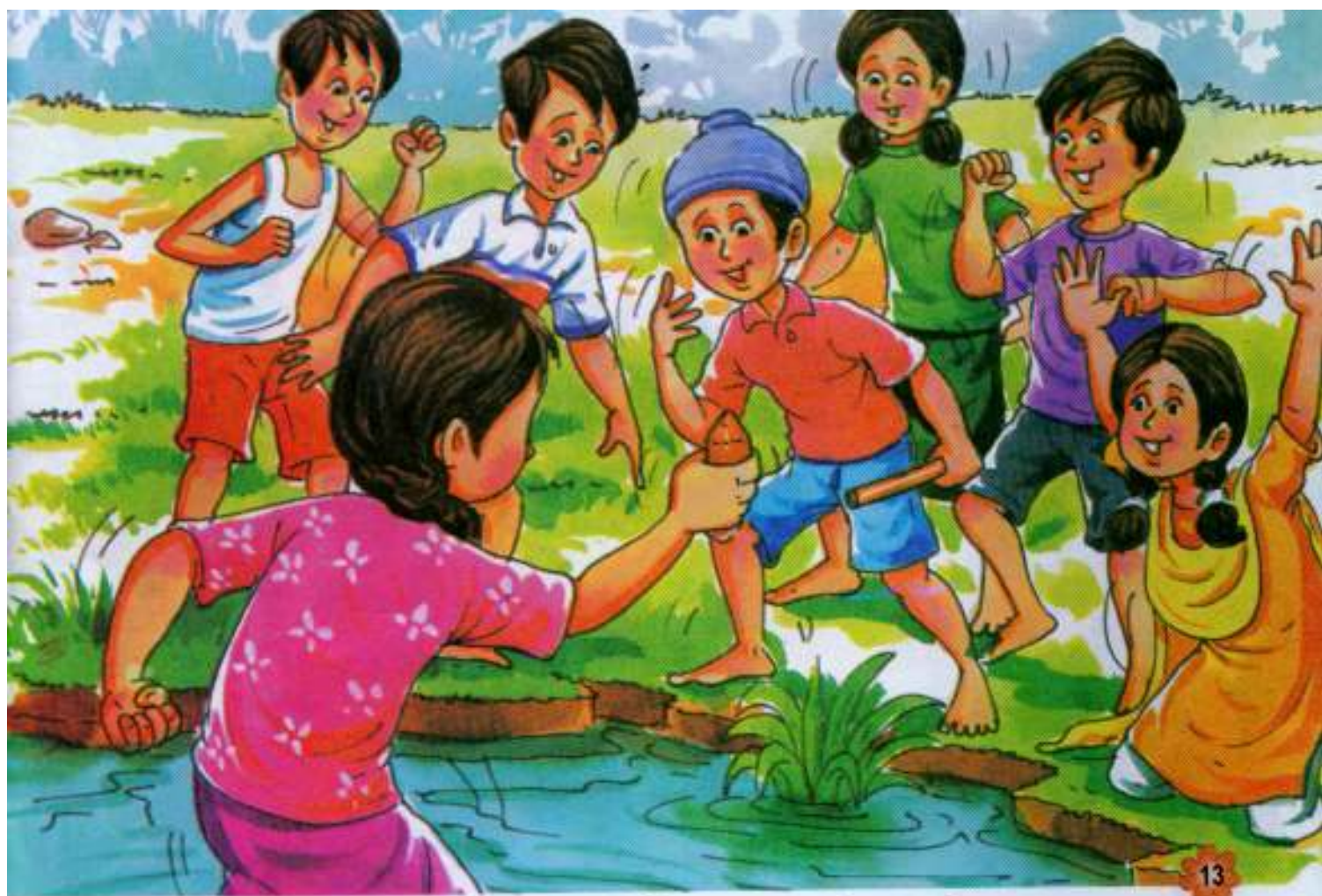
बबली को तैरना आता था।





12

वह तालाब में कूदी और गिल्ली ले आई।



सब खुशी से चिल्लाने लगे।



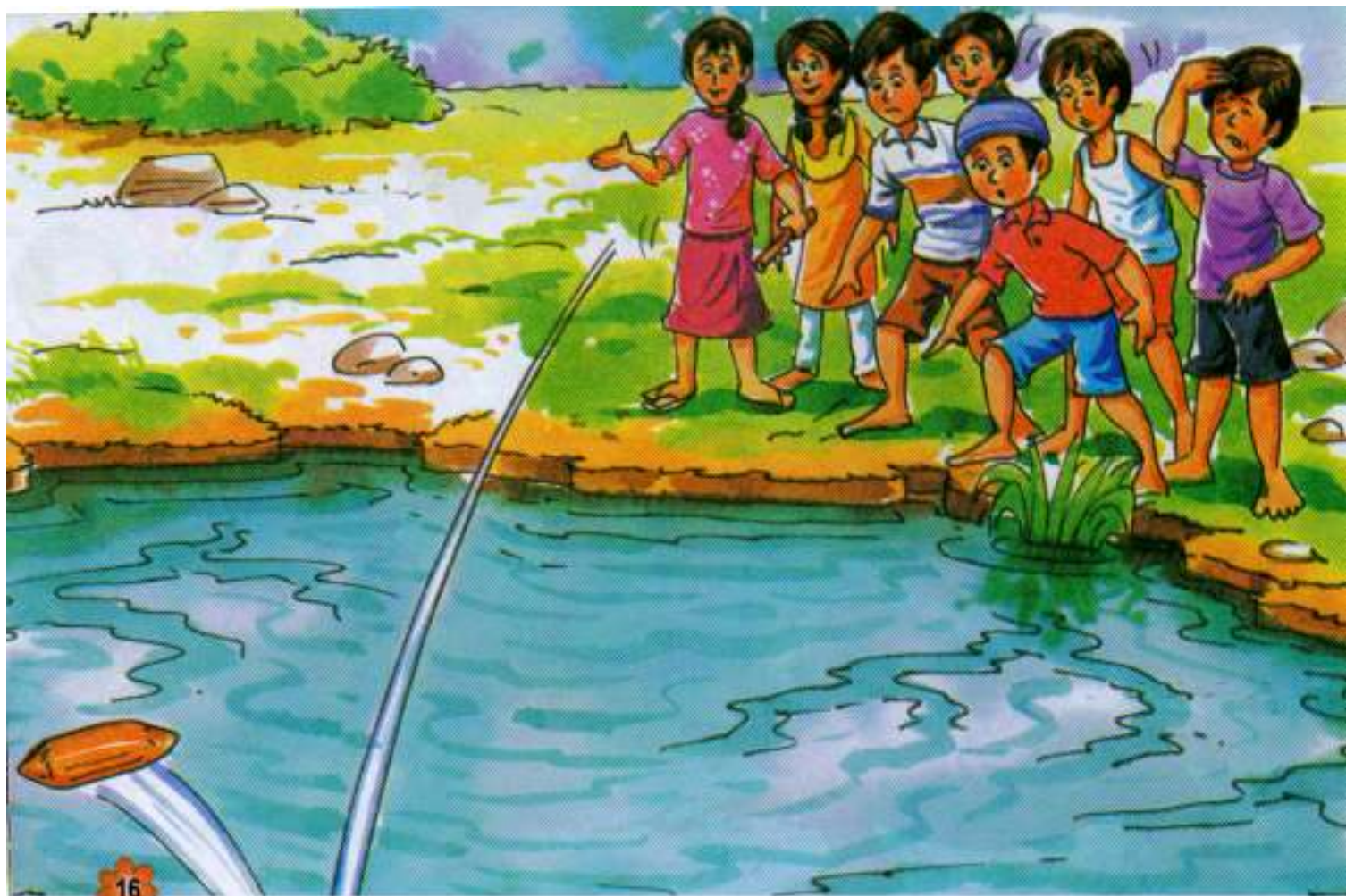


बबली सबके साथ गिल्ली-डंडा खेलने लगी।



बबली ने ज़ोर से डंडा घुमाया।





गिल्ली फिर तालाब के पार चली गई।



2061



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बद्धा-सैट)  
978-81-7450-862-1



# छुपन-छुपाई



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सोमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि बाधवा

सम्पादक तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, मावसी सिन्हा, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर जसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोमोशिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामनन्दा शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर संजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक बाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, कर्घी; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वचंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.राबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुवहत हसन, निदेशक, वैश्वज्ञान बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 जी.एस.एस. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, सी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए,  
मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-863-8

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. केम्प, श्री अरविन्द मार्ग, पनो दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फोन रोड, इंदी एम्बेडेशन, होम्सेकर, बनारसकरी III ब्लॉक, बनारस 560 085 फोन : 050-26725740
- नवरोजन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवरोजन, अहमदनगर 430 014 फोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. केम्प, निबटः धनकल बन स्टॉप पॉस्ट, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530434
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालागुनि, मुंबई 400 021 फोन : 0261-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार मुख्तार उपखान अधिकारी : सित कुमार  
मुख्य संपादक : इमरत उमर मुख्तार व्यापार अधिकारी : सौम्य राहुल



# छुपन-छुपाई



बबली

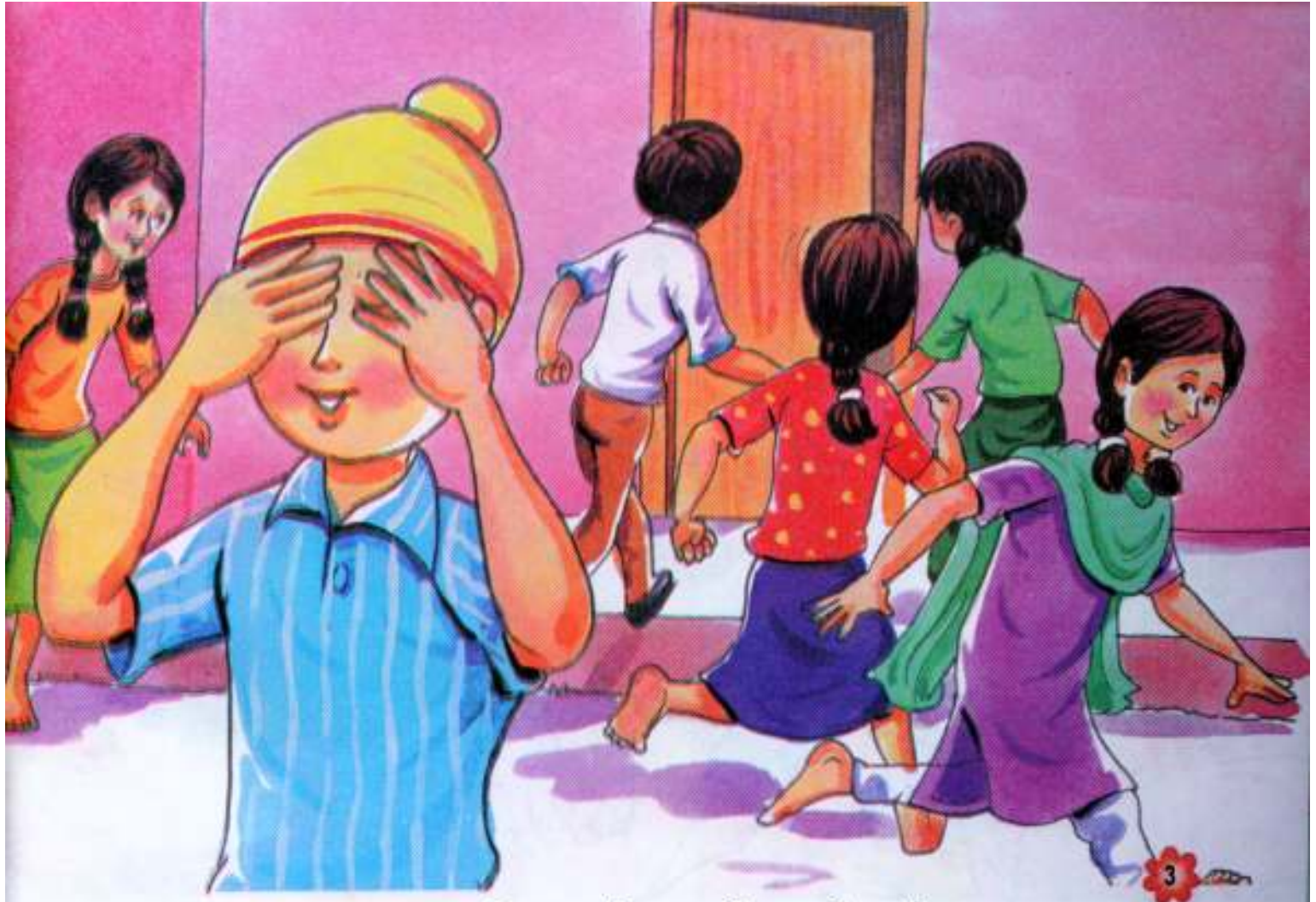


जीत



एक दिन सब छुपन-छुपाई खेल रहे थे।





उस दिन जीत की बारी थी।



जीत सौ तक गिन कर सबको ढूँढ़ने निकला।





मोहित दरवाज़े के पीछे ही मिल गया।



6

जीत बाकी सबको कमरे में ढूँढ़ने लगा।



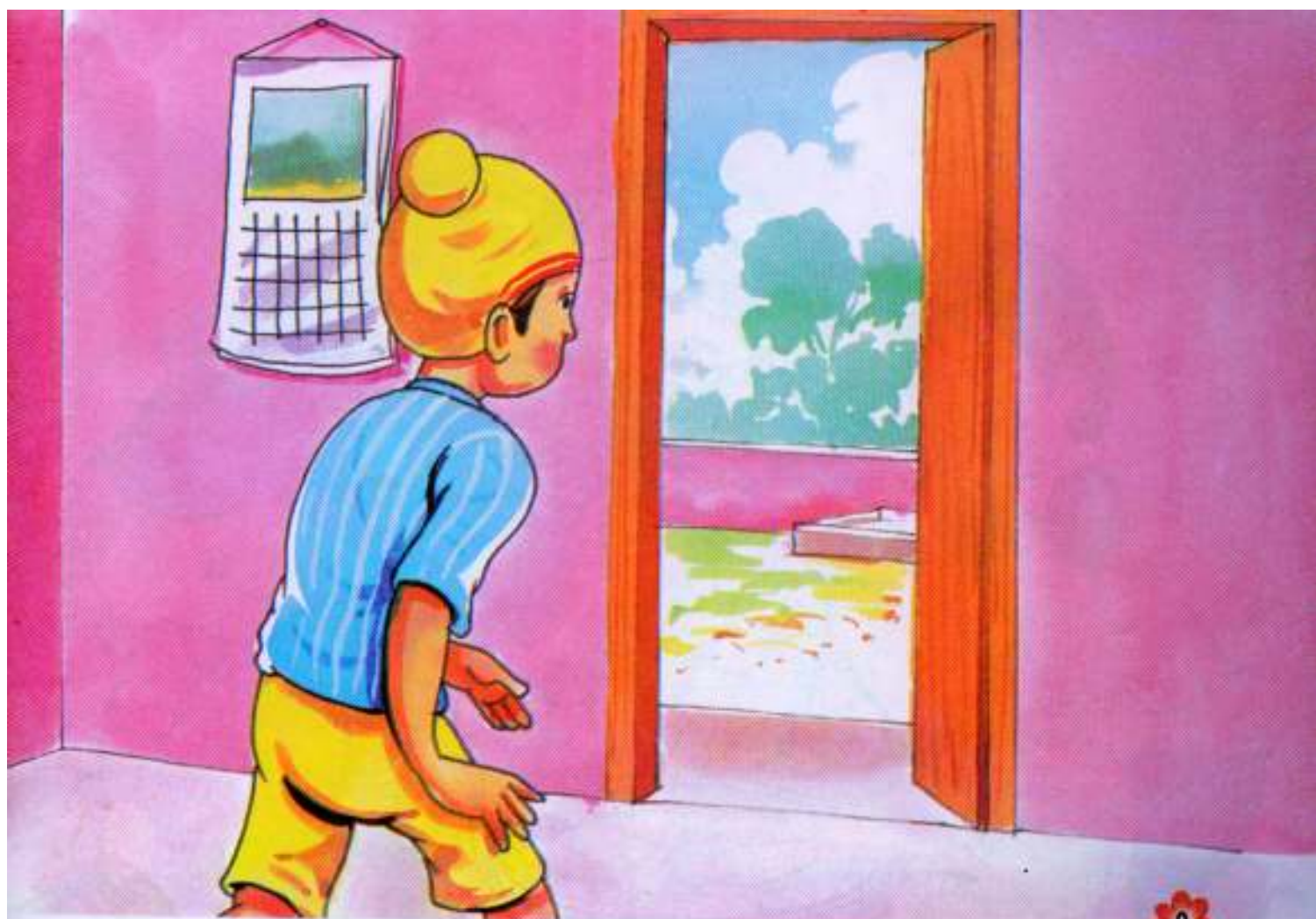


बबली अलमारी के पीछे मिल गई।

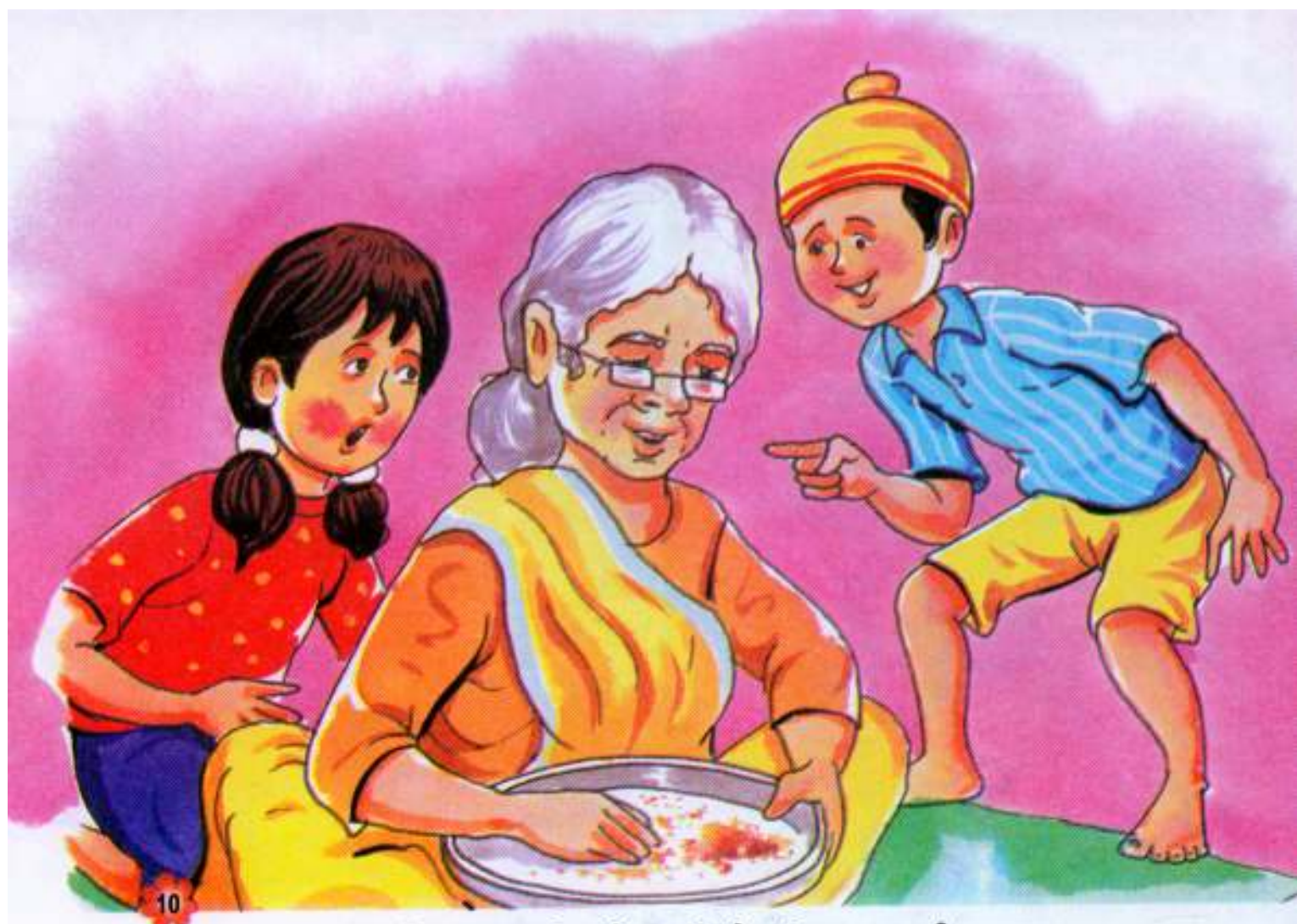


उमा पलंग के नीचे मिल गई।





उसके बाद जीत आँगन की तरफ़ गया।



मीता दादी के पीछे मिल गई।





जीत नाज़िया को आँगन में ढूँढ़ने लगा।



जीत ने नाज़िया को चादर के पीछे ढूँढ़ा।





जीत नाज़िया को ढूँढ़ने के लिए बाहर आया।



14

वह पेड़ के नीचे खड़ा होकर सोचने लगा।





नाज़िया ने ऊपर से कूदकर उसे धप्पा कर दिया।







2062



रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)  
978-81-7450-863-8



पढ़ना है समझना

# मज़ा आ गया





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति चर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सोमा कुमारी, सौनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – ततिका गुप्ता

चित्रांकन – कनक शर्मा

सज्जा तथा आवरण – निधि बाबवा

डि.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, मानसी सिन्हा, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला साधु, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरुणा; प्रोफेसर फरीद अहमदुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. राबिनम सिन्हा, सो.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुवहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 सी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए,  
मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-864-5

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोचकता की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में सज्जतात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापक तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिनिधि, रिप्रॉड्यूसिबल अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

इन्.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 106 फीर रोड, इली एक्सप्रेसवे, होस्तेकरे, कालकरी III स्टेट, कोलार 560 085  
फ़ोन : 089-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: चन्नकल बस स्टॉप चिन्हरी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- से.जयधनु.सी. चट्टोपाध्याय, कालीगंज, मुंबाई 761 021 फ़ोन : 0361-2634869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार मुख्य उत्पन्न अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : श्रेष्ठ उत्पन्न मुख्य व्यापार अधिकारी : शीतल गंगुली

# મજા આ થયા



ચિડિયા



ઇલ્લી



પેડ





तोसिया और मिली को एक पेड़ पसंद था।



वे उस पेड़ के पास रोज़ खेलने जाती थीं।





4

पेड़ पर एक चिड़िया और इल्ली रहती थी।



उनको पेड़ पर बहुत मज़ा आता था।





एक दिन जोर से हवा चली।



पेड़ कभी दाएँ कभी बाएँ झूलने लगा।





8

इल्ली और चिड़िया का घर भी झूलने लगा।



इल्ली भी पेड़ के साथ-साथ झूल रही थी।





चिड़िया अपने घोंसले से बाहर आ गई।



पेड़ बहुत ज़ोर से दाएँ-बाएँ झूल रहा था।





इल्ली को मज़ा आ रहा था।



चिड़िया पेड़ के चारों तरफ़ उड़ रही थी।





14

थोड़ी देर में हवा रुक गई।



चिड़िया को घोंसले में जाकर राहत मिली।





16

तोसिया और मिली फिर से खेलने लगीं।



2063



रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)  
978-81-7450-864-5



# मिली का गुब्बारा



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, खारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कनक राशि

सम्पादक और आवरण - निधि बाधवा

डि.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, मानसी सिन्हा, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोजेक्टों की  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामचन्द्र शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जम्मिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. राजनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 बी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द वर्मा,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, पी-28, इंदिरापुरम एरिया, साइट-ए,  
पथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-865-2

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्णअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापण तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिनिधि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी., कैपस, श्री आर्चिड मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फोर्ट रोड, डेसी एक्सप्रेसवे, होमसेक्रे, बनारस 221 005  
फ़ोन : 0522-26725740
- नवनील टुस्ट भवन, बाबूपर नवनील, जयपुर 302 014 फ़ोन : 079-27541445
- श्री.बन्धु.सी. कैपस, निजट, धनकुल जस स्टॉप पश्चिमी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- श्री.बन्धु.सी. कॉम्प्लेक्स, मायोंगई, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सङ्क्षेप

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार  
मुख्य संपादक : श्वेता उपाध्याय

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यापार अधिकारी : रीतम सगुल्लू



# मिली का गुब्बारा





एक दिन मिली के पापा गुब्बारा लाए।





मिली ने गुब्बारा हवा में उछाल दिया।



4

गुब्बारे की हवा धीरे-धीरे निकलने लगी।





पिचकता हुआ गुब्बारा छत से टकराया।



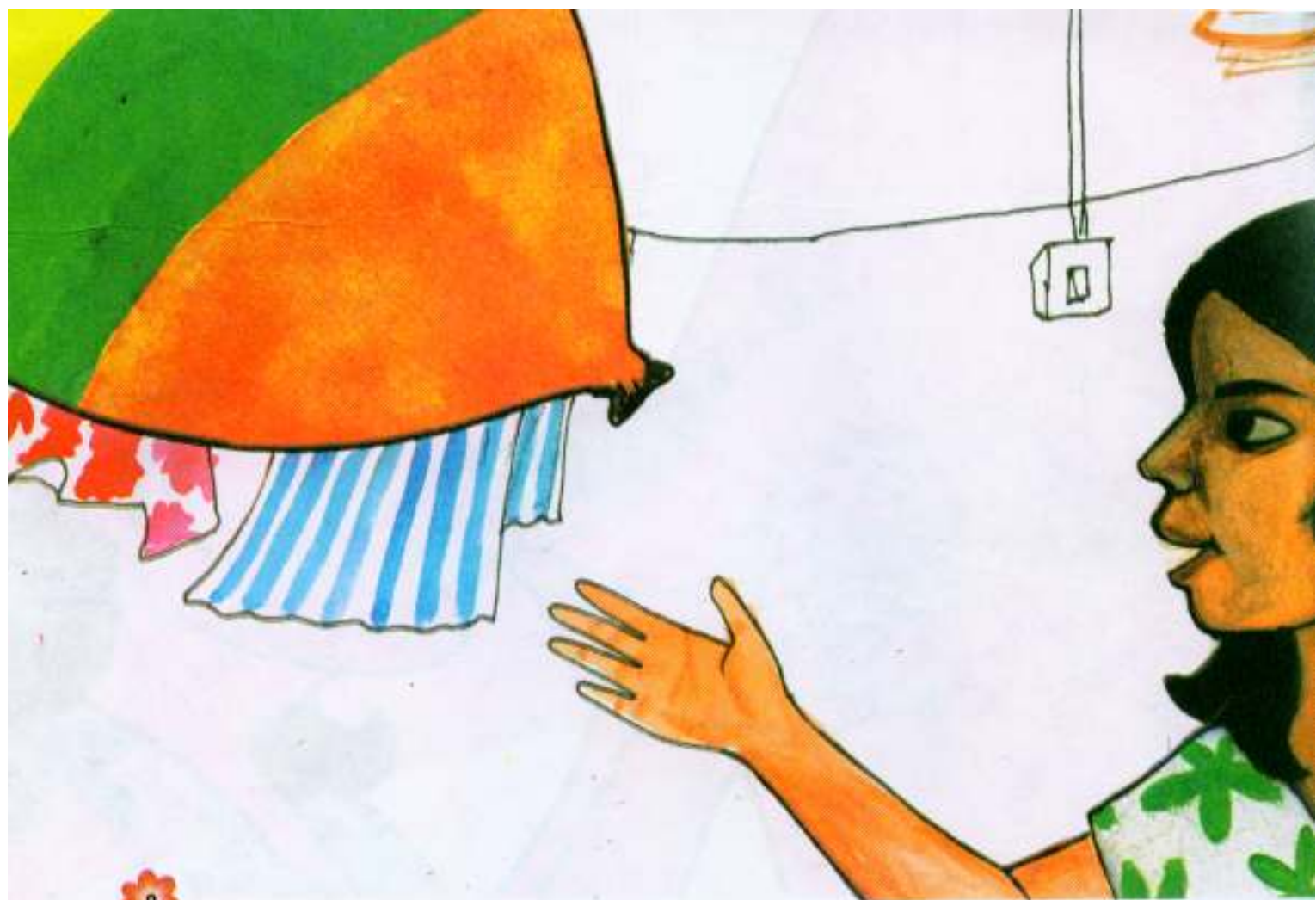
6

गुब्बारा पिचक कर नीचे गिर गया।





मिली ने गुब्बारा फिर से फुलाया।



8

मिली ने गुब्बारा फिर से हवा में उछाल दिया।





गुब्बारा सूँ-सूँ-सूँ की आवाज़ करने लगा।



10

मिली गुब्बारे की आवाज़ से बहुत खुश हुई।





मिली ने पापा को वह आवाज़ सुनवाई।



पापा ने गुब्बारे को फिर से फुलाया।





पापा उस पर धागा बाँधने लगे।



मिली ने धागा बाँधने नहीं दिया।





धागा बाँधने से आवाज़ नहीं निकलती।



मिली को पिचकते हुए गुब्बारे की आवाज़ पसंद है।





2064

संस्कृत संस्करण



एन सी ई आर टी ई

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

रु.10.00

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)  
978-81-7450-865-2



पढ़ना है समझना

# मीठे-मीठे गुलगुले





प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दलदल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सौमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि बाधवा

सन्ना तन्ना आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सौमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशासिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीटर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शम्भुनाथ सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.  
मुंबई; सुश्री नुलका इसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. केस पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द वर्मा,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, सैफ्ट-ए,  
मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)  
978-81-7450-866-9

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापव तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिनिधि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस, श्री अरविंद वर्मा, नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेल्थ एक्सपोज़न, होल्डको, कलकत्ता III स्टेज, बंगलुरु 560 085  
फ़ोन : 080-26725740
- नववीर टाइट भवन, डाकघर नववीर, जयपुरकान 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस, निकट: फलकन बस स्टॉप पतिहटी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- से.उज्जयिनी कॉम्प्लेक्स, मालतीनगर, गुजराती 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार  
मुख्य संपादक : श्वेता उपाध्याय

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यापार अधिकारी : योनिता तनुजो

# मीठे-मीठे गुलगुले



मदन



मम्मी



जमाल





2

एक दिन जमाल की मम्मी आटा गूँध रही थीं।



जमाल पास ही बैठा हुआ था।





4

पड़ोस का मदन मम्मी से एक सवाल पूछने आया।



मम्मी मदन को सवाल समझाने लगीं।





6

जमाल आटा गूँधने लगा।



उसके हाथों में आटा चिपक गया।





जमाल ने आटे में पानी मिलाया।



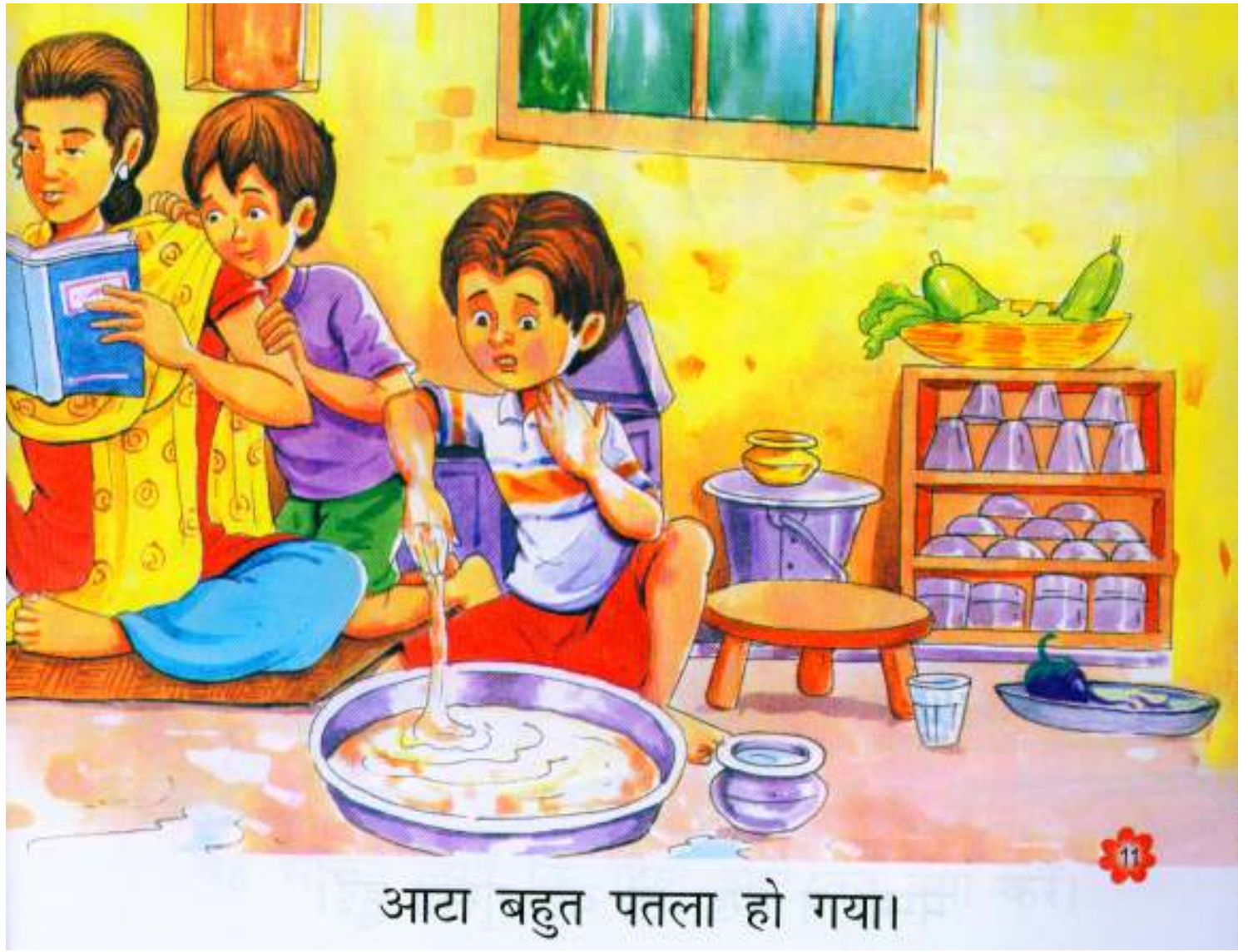
उसके हाथों में आटा और चिपक गया।





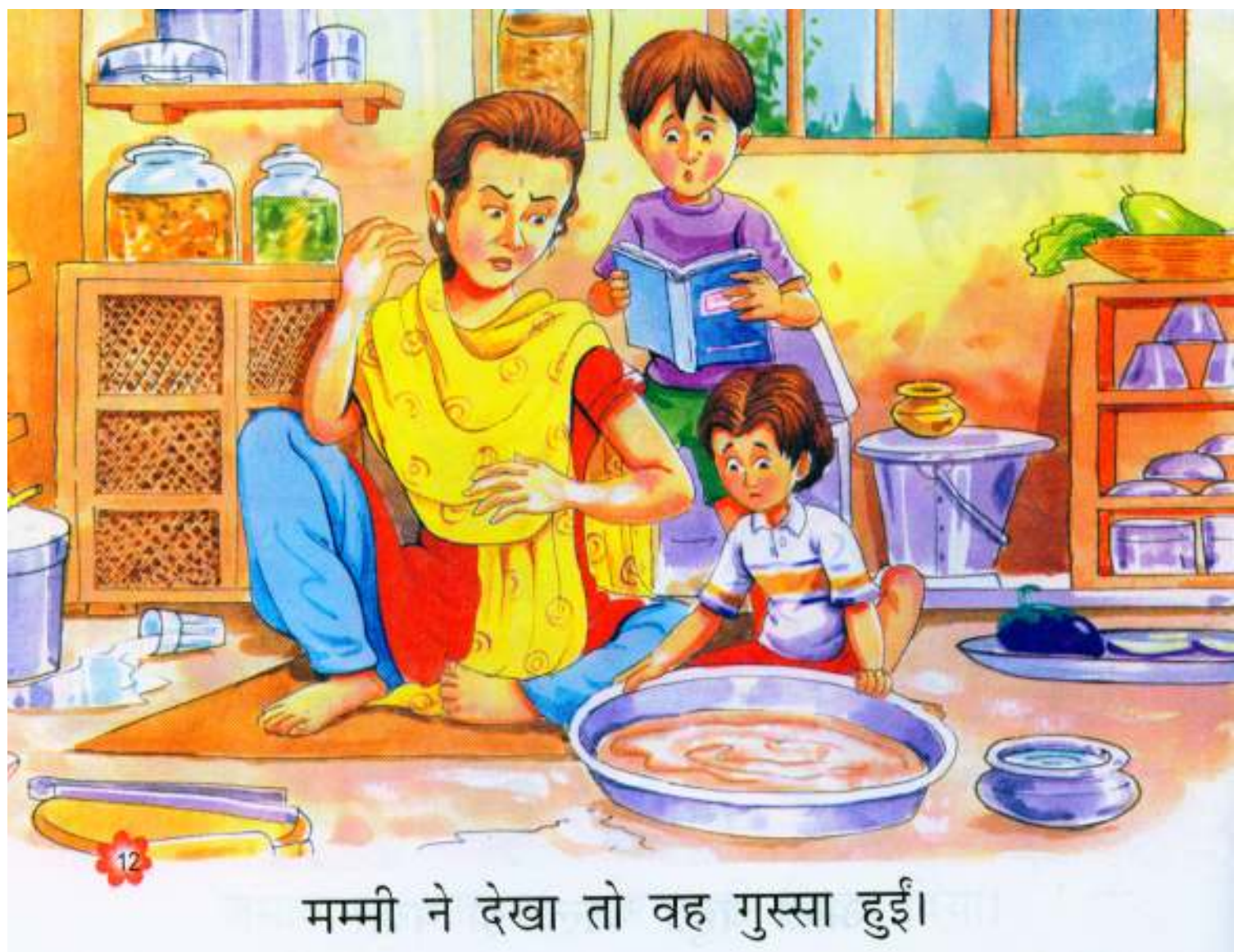
10

जमाल ने आटे में और पानी मिला दिया।



आटा बहुत पतला हो गया।





मम्मी ने देखा तो वह गुस्सा हुई।



वह सोचने लगीं कि गीले आटे का क्या करें।





14

मम्मी ने आटे में सौंफ और गुड़ मिला दिया।



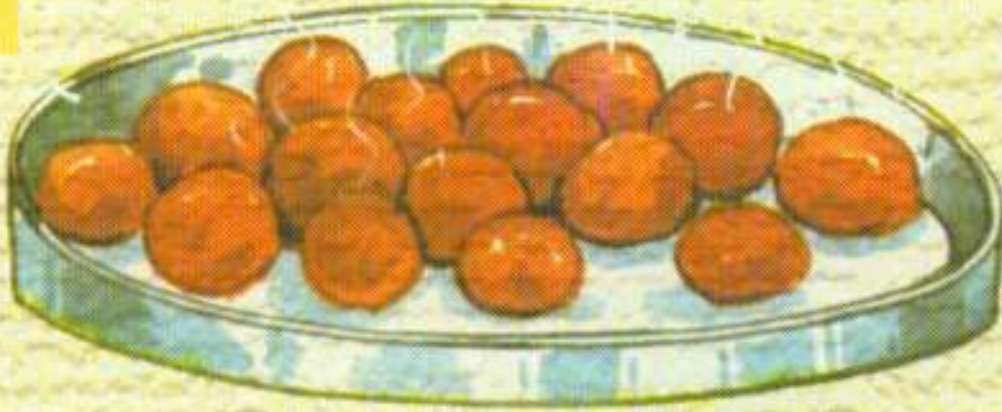
उन्होंने खूब सारे गुलगुले तले।





16

जमाल और मदन ने खूब सारे गुलगुले खाए।



2065



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

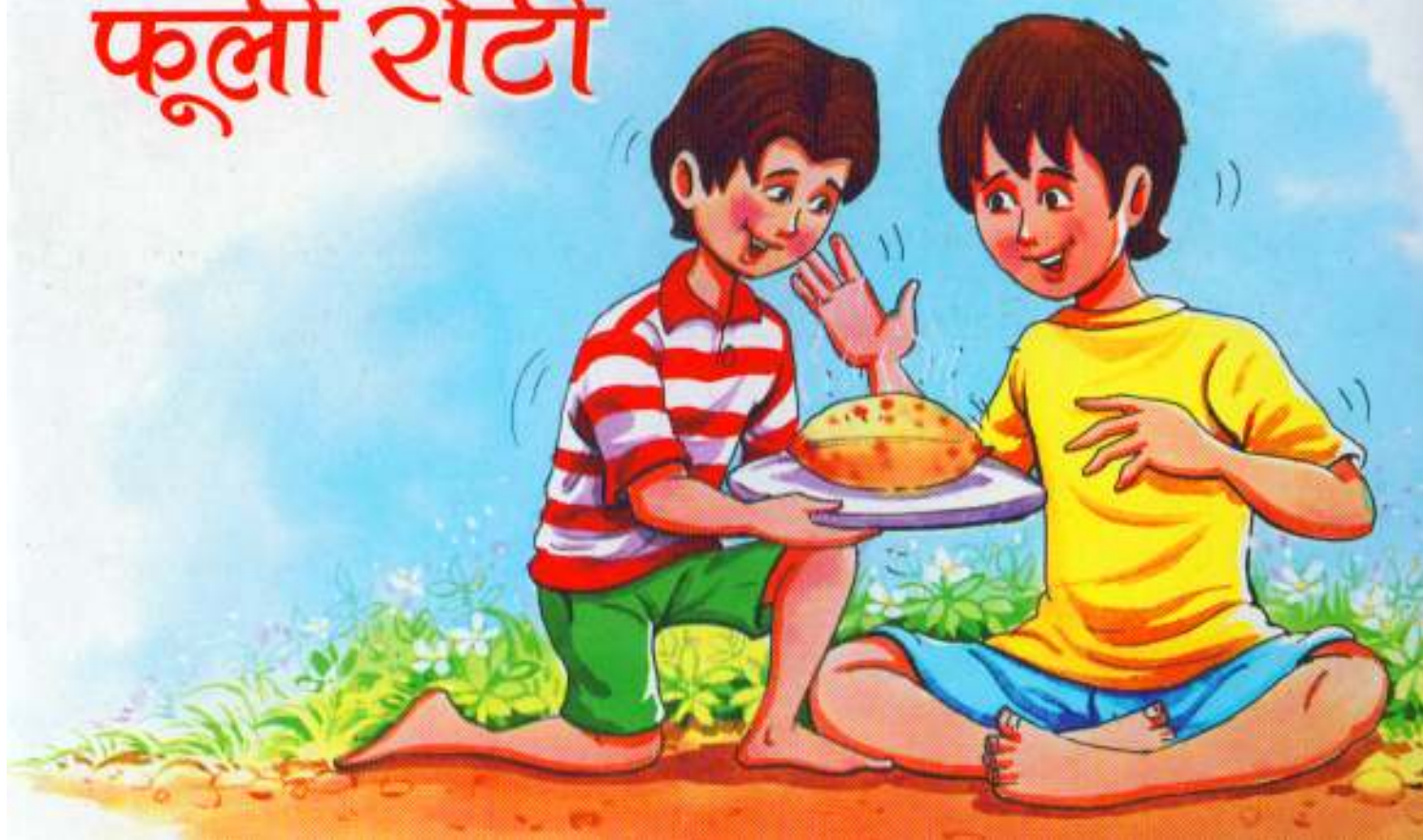
ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-संस्कृत)  
978-81-7450-866-9





पढ़ना है समझना

# फूली रोटी



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सवस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – निधि वाधवा

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशासकीय  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्य शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुल मथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जमिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वचंद, रौडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. राबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुजहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संपिब, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए,  
मधुग 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)  
978-81-7450-867-6

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रिंटिंग, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, टेली रेसमटेरल, हाउसिंग, कनालवरी III स्टेशन, बंगलुरु 560 085  
फोन : 080-26725740
- नवबीबन टावर भवन, डाकघर नवबीबन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकटः धनकुल बस स्टॉप पिनकोड, कोलकाता 700 114  
फोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, बालीगोब, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार मुख्य उत्पादन अधिकारी : रमेश कुमार  
मुख्य संपादक : शकेत उमरल मुख्य व्यापार अधिकारी : रमेश गुप्ता



# फूली शोटी



मम्मी



जमाल



2

एक दिन मम्मी रोटी बना रही थीं।





जमाल भी रोटी बनाना चाहता था।



उसने मम्मी से आटा माँगा।





मम्मी ने उसे छोटी-सी लोई दे दी।



6

जमाल रोटी बेलने लगा।





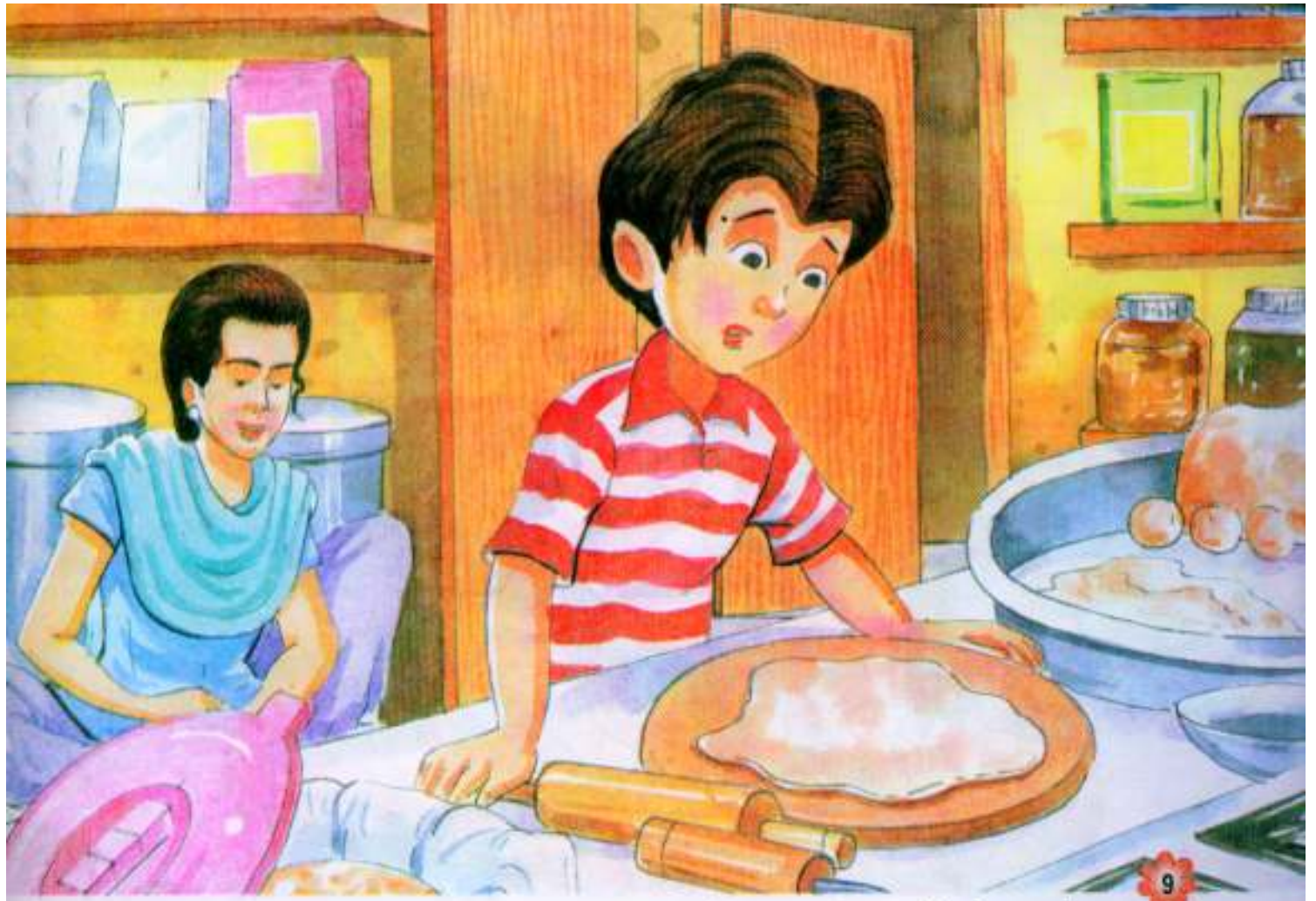
उसने रोटी में सूखा आटा लगाया।



8

जमाल से रोटी गोल नहीं बन रही थी।





जमाल सोचने लगा कि रोटी गोल कैसे बने।



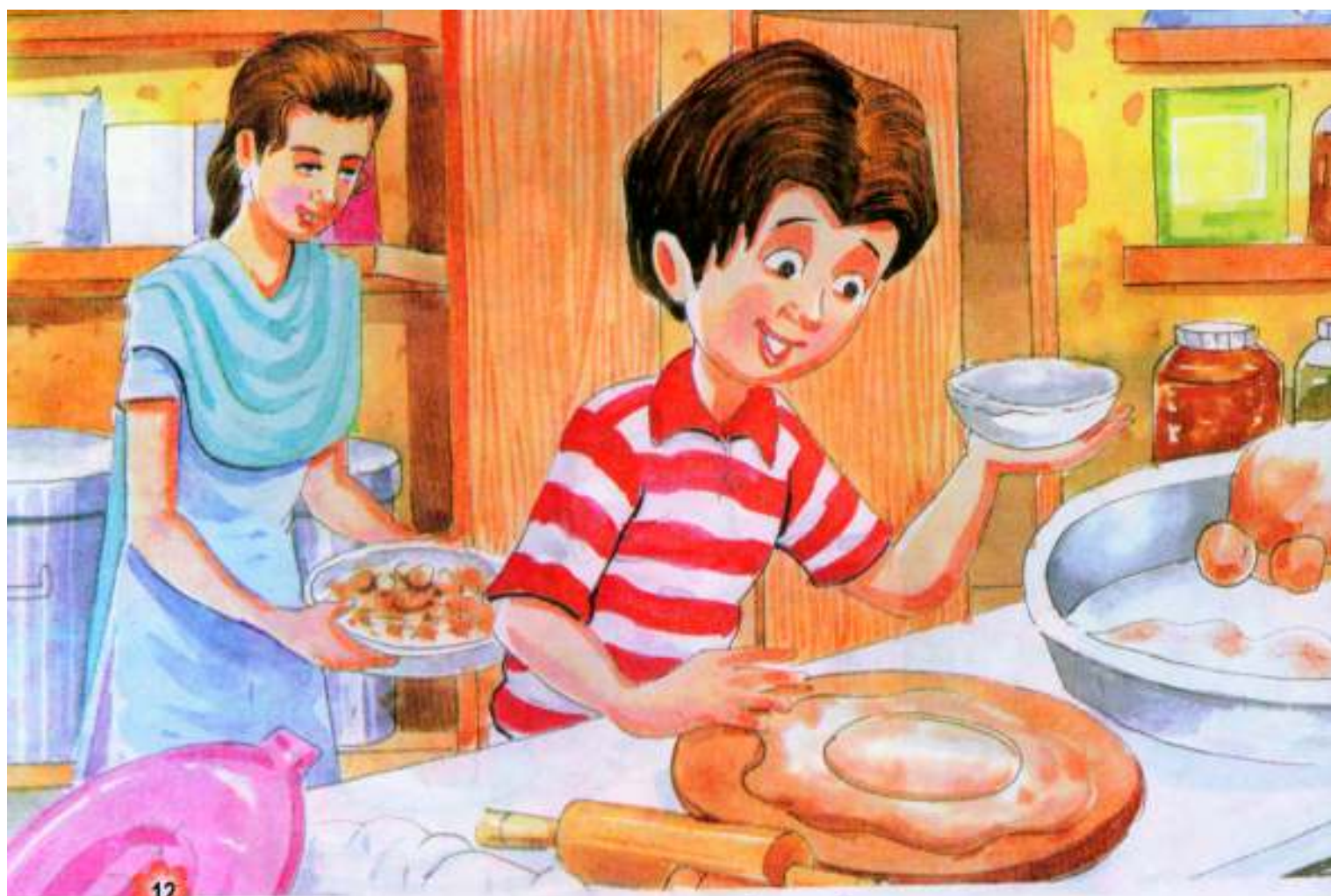
उसने एक कटोरी उठाई।



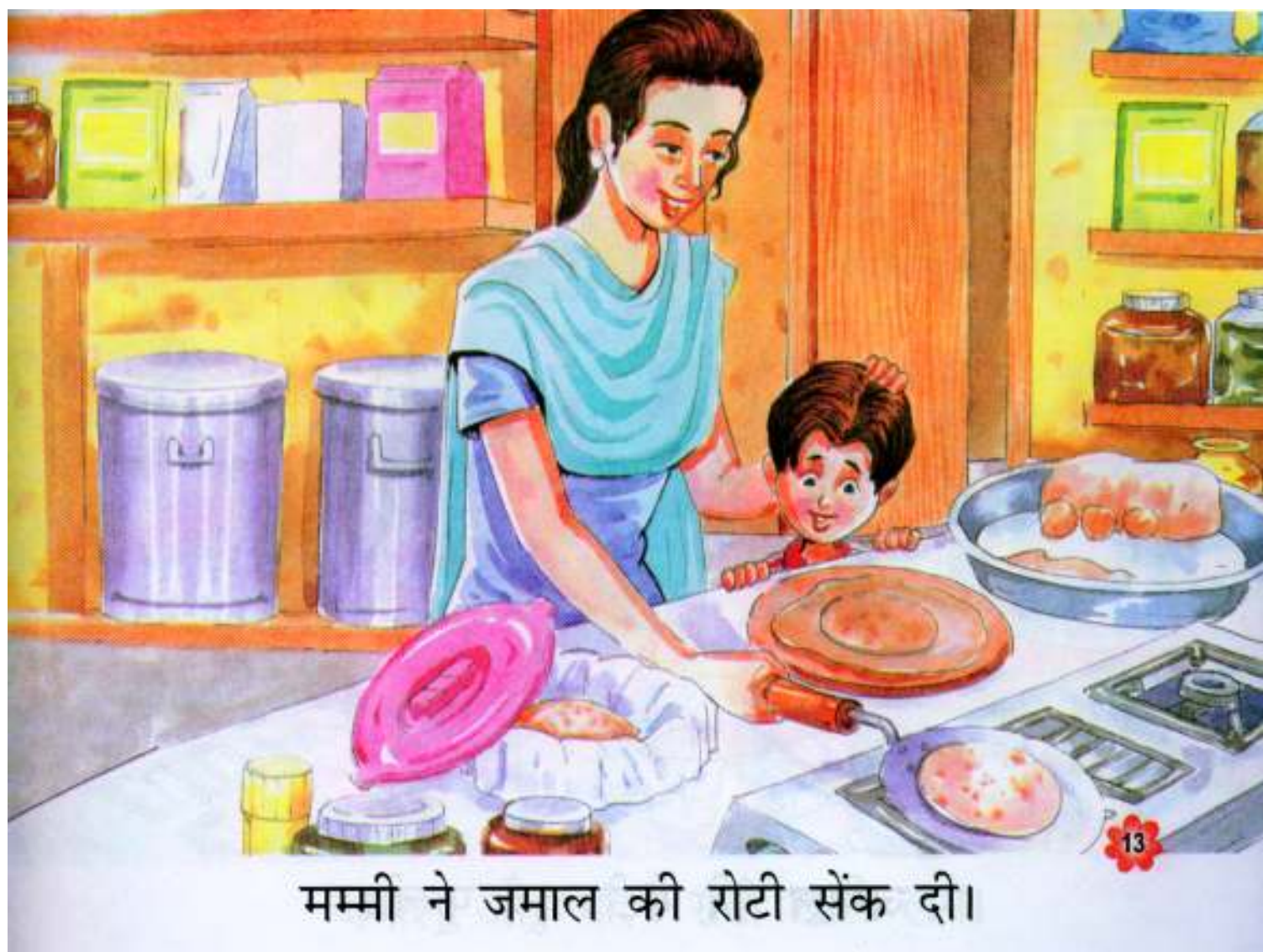


11

जमाल ने कटोरी रोटी पर रखकर घुमा दी।







मम्मी ने जमाल की रोटी सेंक दी।

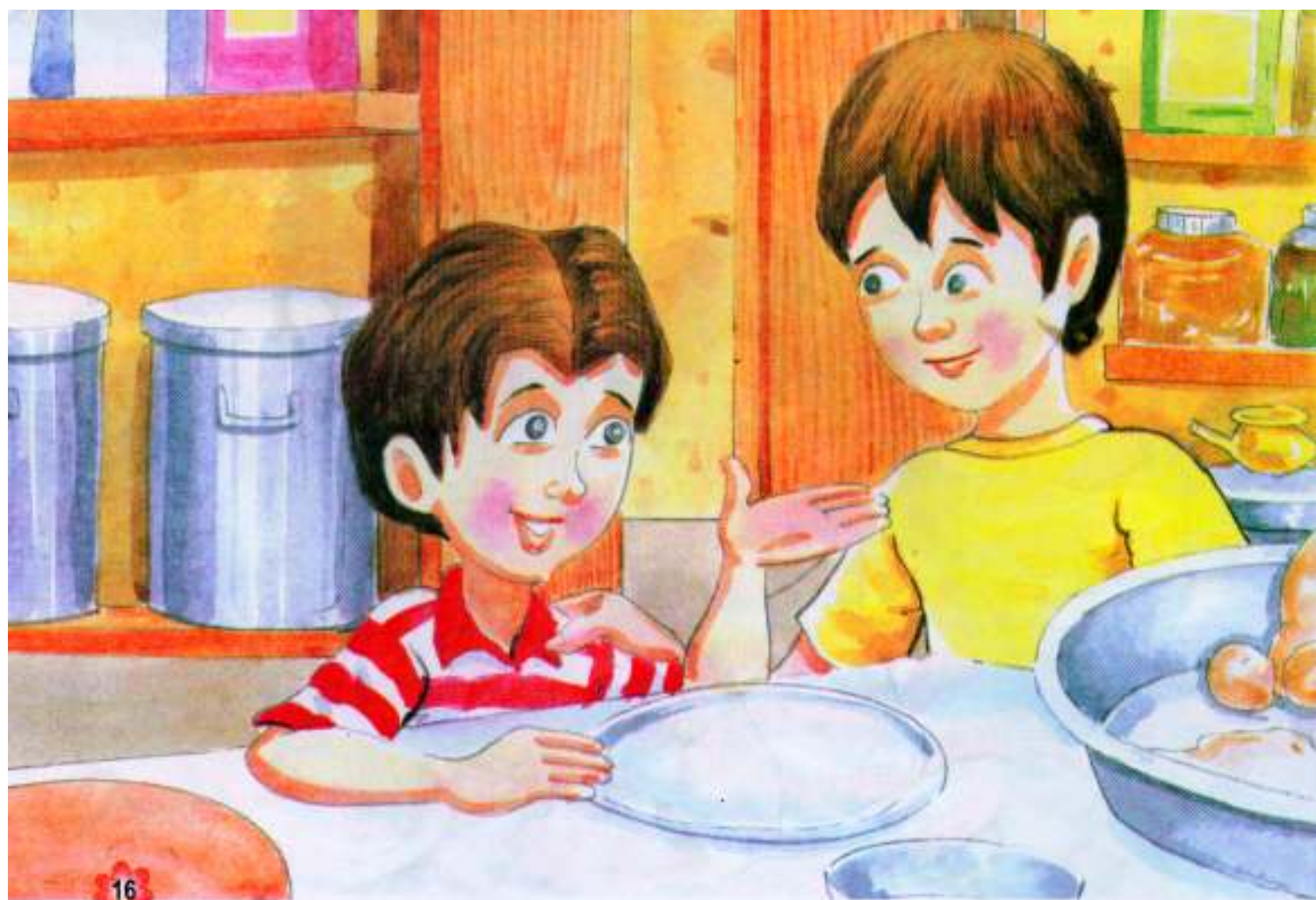


जमाल की रोटी खूब फूली।



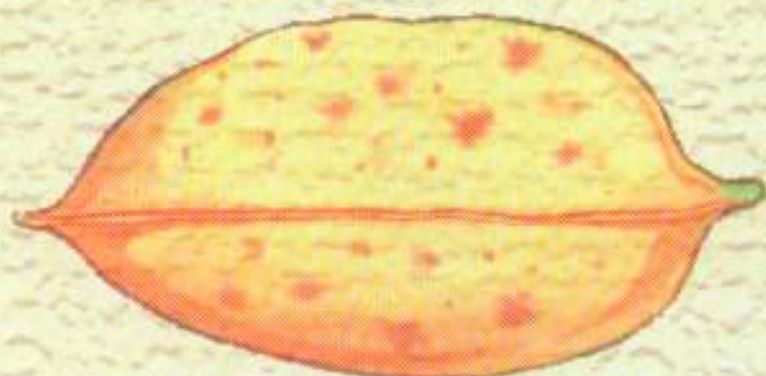


जमाल और मदन रोटी खाने लगे।



जमाल बोला कि रोटी उसने बनाई है।





2066



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (वरखा-सेट)  
978-81-7450-867-6



पढ़ना है समझना



ऊन का  
गोला



प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, तुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, स्मरिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशासिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक कावपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरुवा; प्रोफेसर फरीदा अख्तुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंत, जबपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अश्विनी शर्मा,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा फंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंदिरापुरा एरिया, झंड-ए,  
मधु 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)  
978-81-7450-868-3

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्चा के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापा तथा इलेक्ट्रॉनिकी, फोटो, फोटोकॉपी, डिजिटल अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस, सी अरबिन् मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26362708
- 108, 100 फीट रोड, डेली एक्स्प्रेस, सोवर्नोरे, बनारस 221 005 फोन : 0551-26725340
- नवरोज टाइट भवन, डाकघर नवरोज, जलमधु 380 014 फोन : 079-27541446
- से.इ.ए.सी. कैम्पस, निकट: धनकुल घस स्टॉप पोल्टी, बोलकाल 700 114 फोन : 033-25550454
- सी.इ.ए.सी. कॉम्प्लेक्स, मल्लिकार्जुन, गुड्डाली 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार	मुख्य उत्प्रेषण अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संयोजक : इंदुल उत्प्रेषण	मुख्य व्यापार अधिकारी : नीलम गणुनी

# ऊन का गोल्ला



नानी



मुनमुन





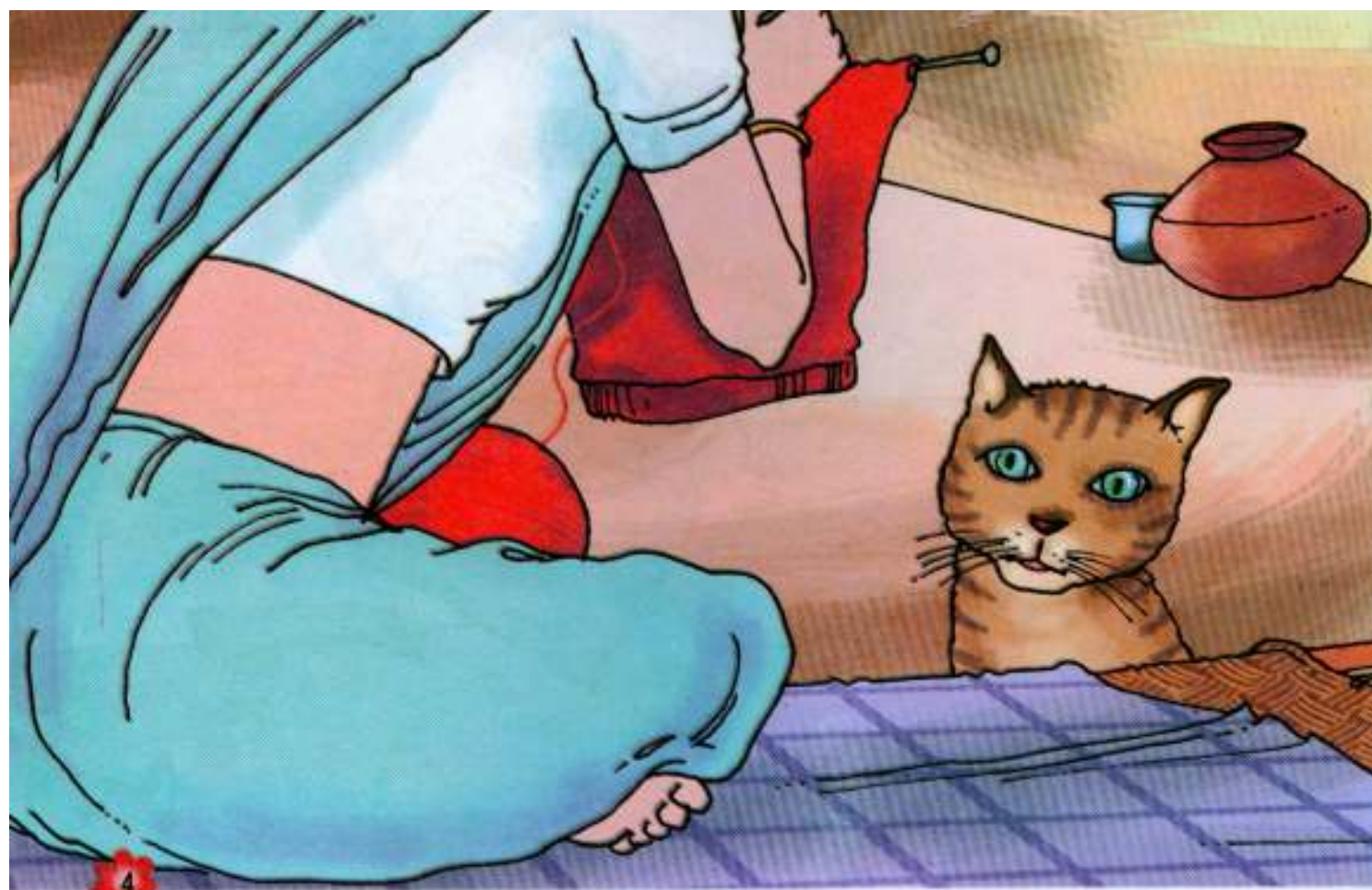
2

एक दिन मेरी नानी धूप में स्वेटर बुन रही थीं।  
नानी के पास लाल ऊन का गोला था।



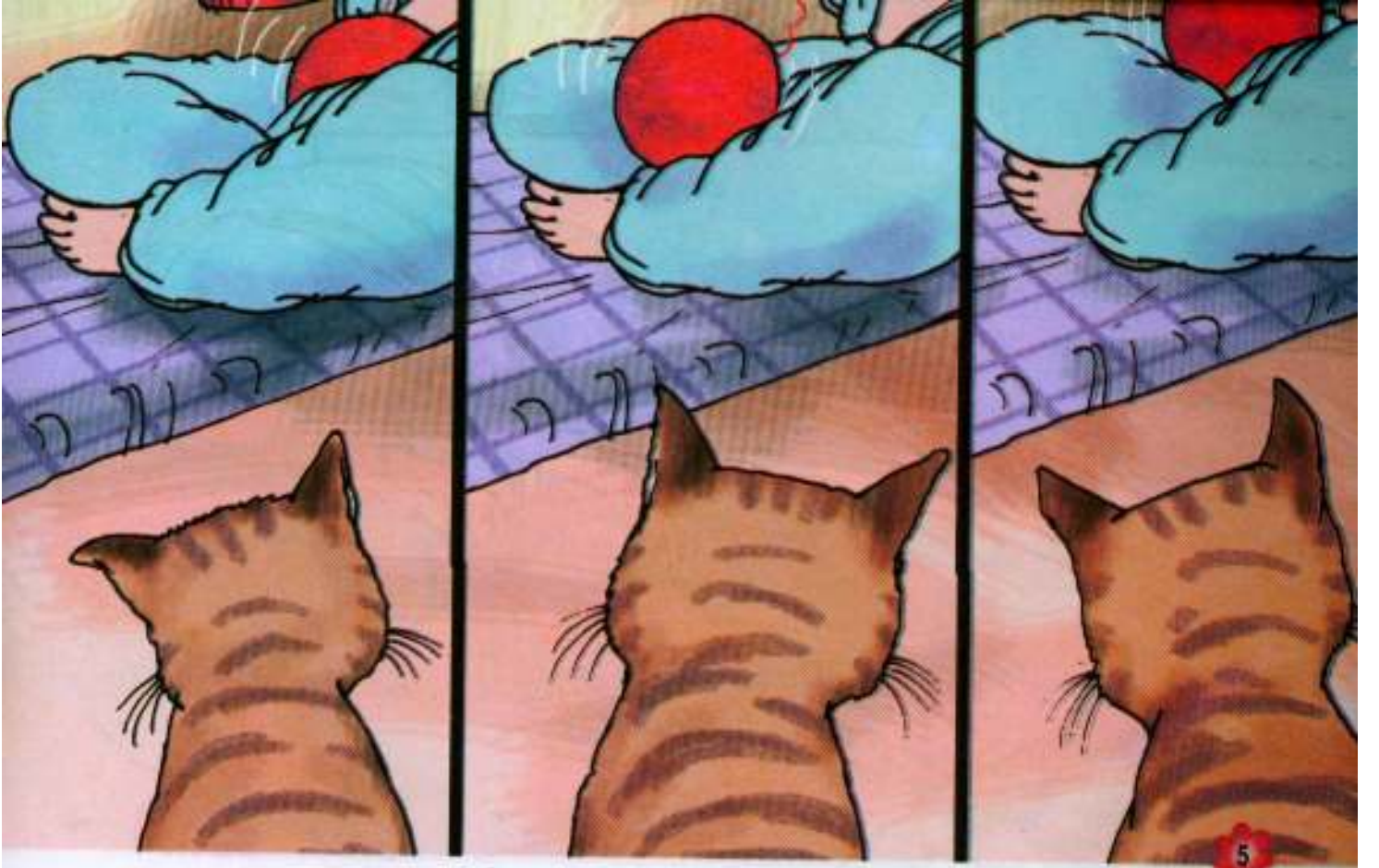
नानी आँगन में बैठकर स्वेटर बुन रही थीं।  
गोला उनकी गोद में पड़ा हुआ था।





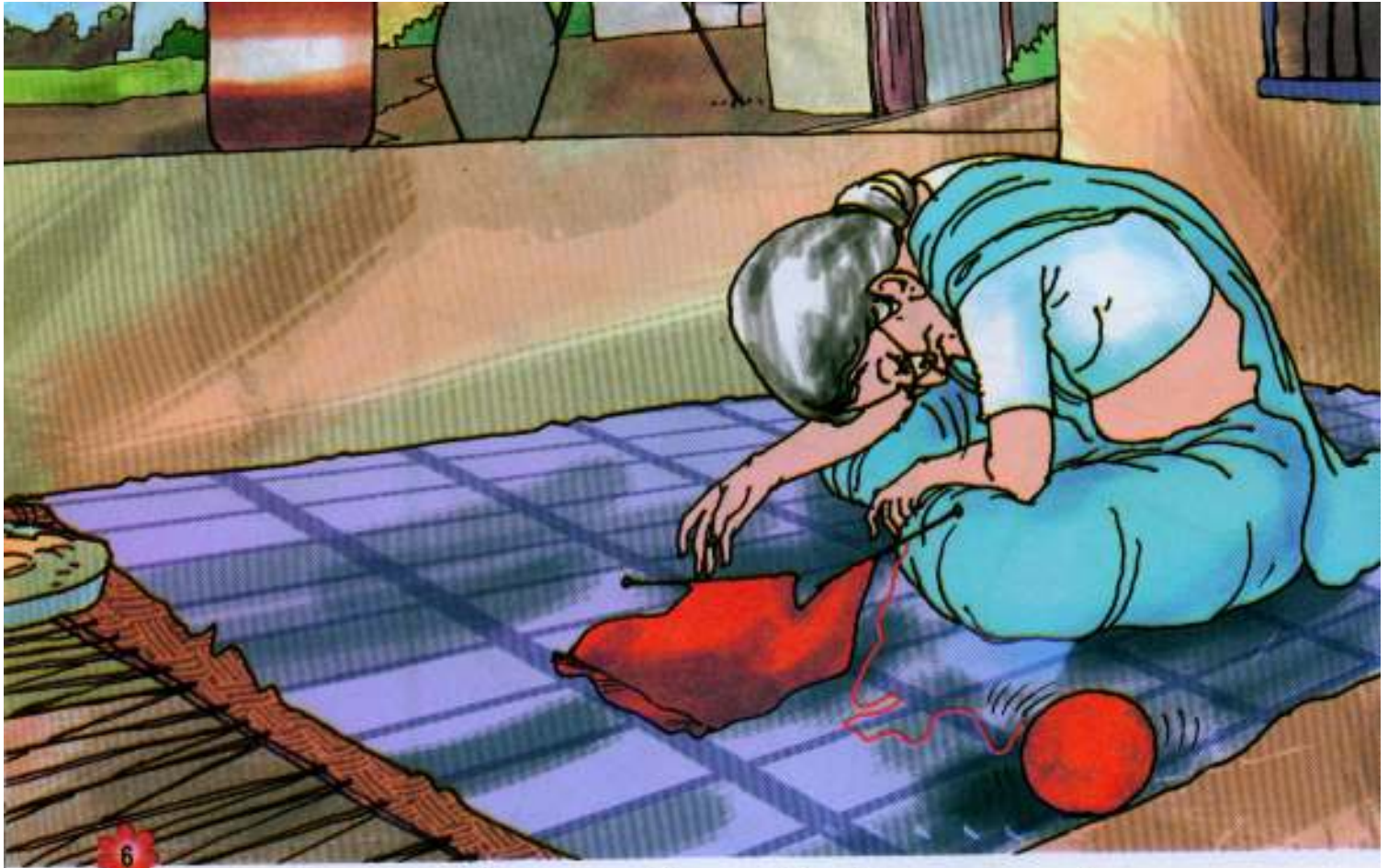
4

मुनमुन नानी के पास ही बैठी हुई थी।  
वह ऊन के गोले को गौर से देख रही थी।



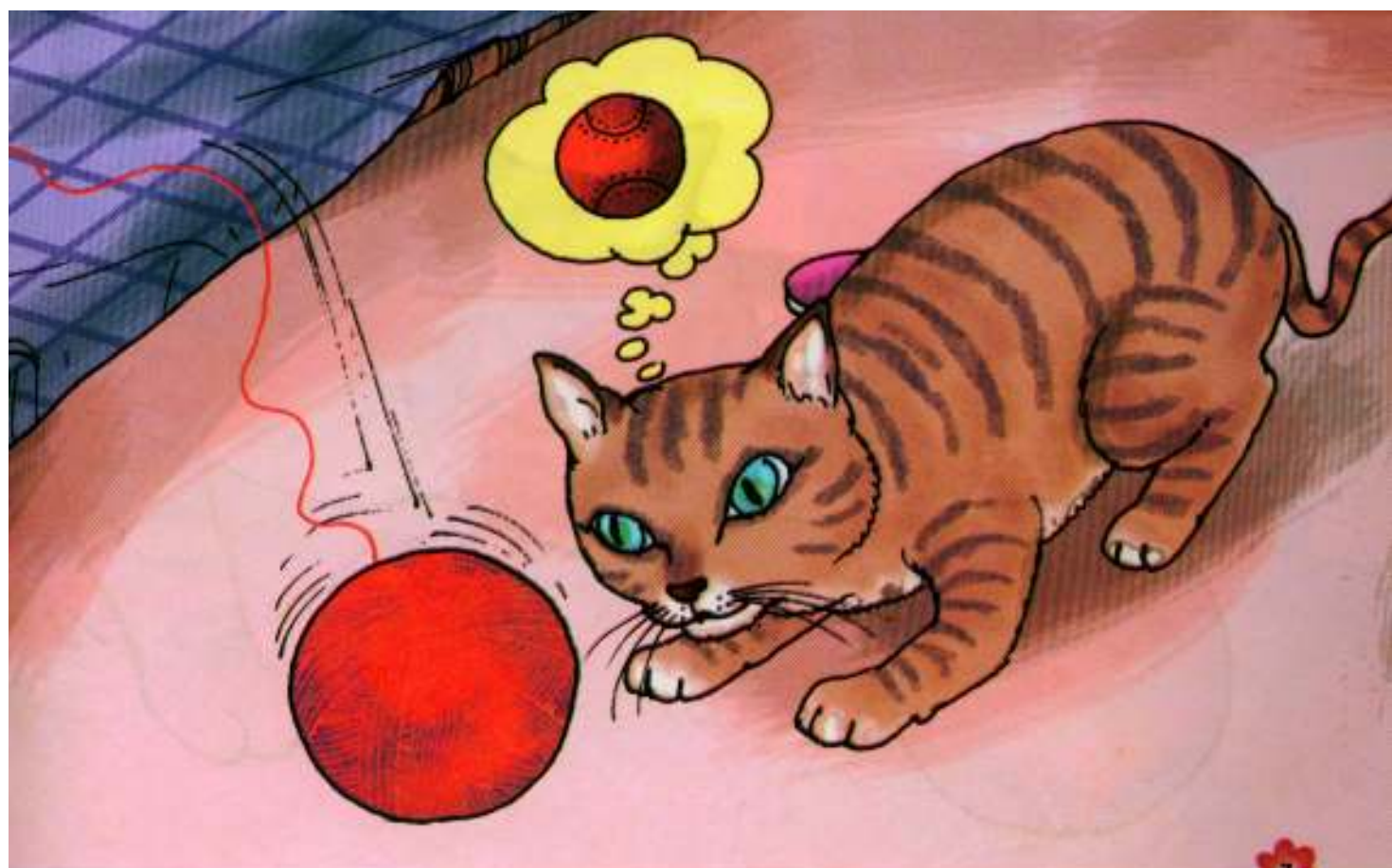
गोला धीरे-धीरे हिल रहा था।  
मुनमुन भी अपना सिर धीरे-धीरे हिलाती थी।





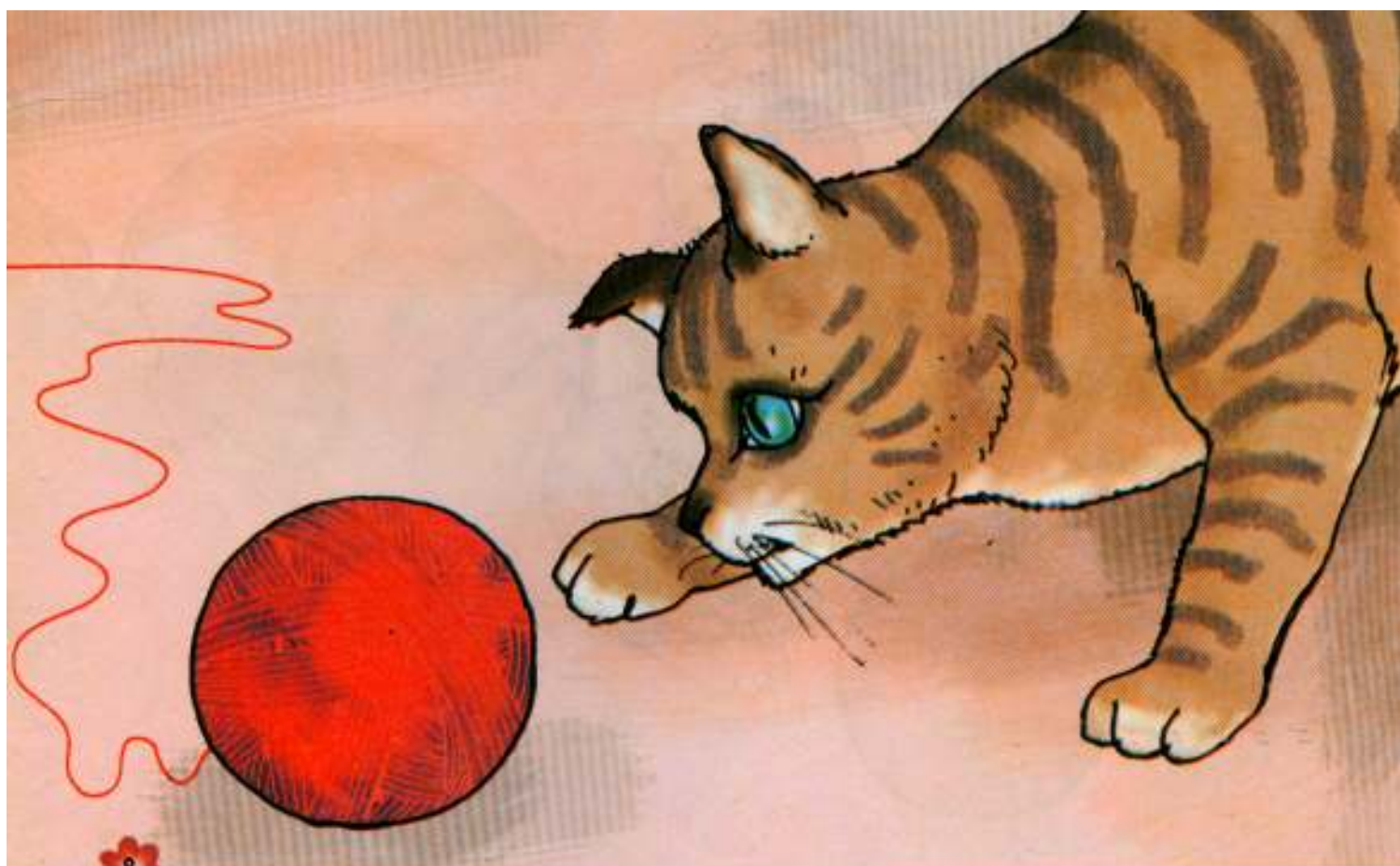
6

नानी को स्वेटर बुनते-बुनते नींद आ गई।  
उन का गोला नीचे लुढ़क गया।



गोला लुढ़ककर मुनमुन के पास पहुँच गया।  
मुनमुन ने उसे गेंद समझा।





8

मुनमुन ऊन के गोले से खेलने लगी।  
उसे गेंद से खेलने में मज़ा आता है।



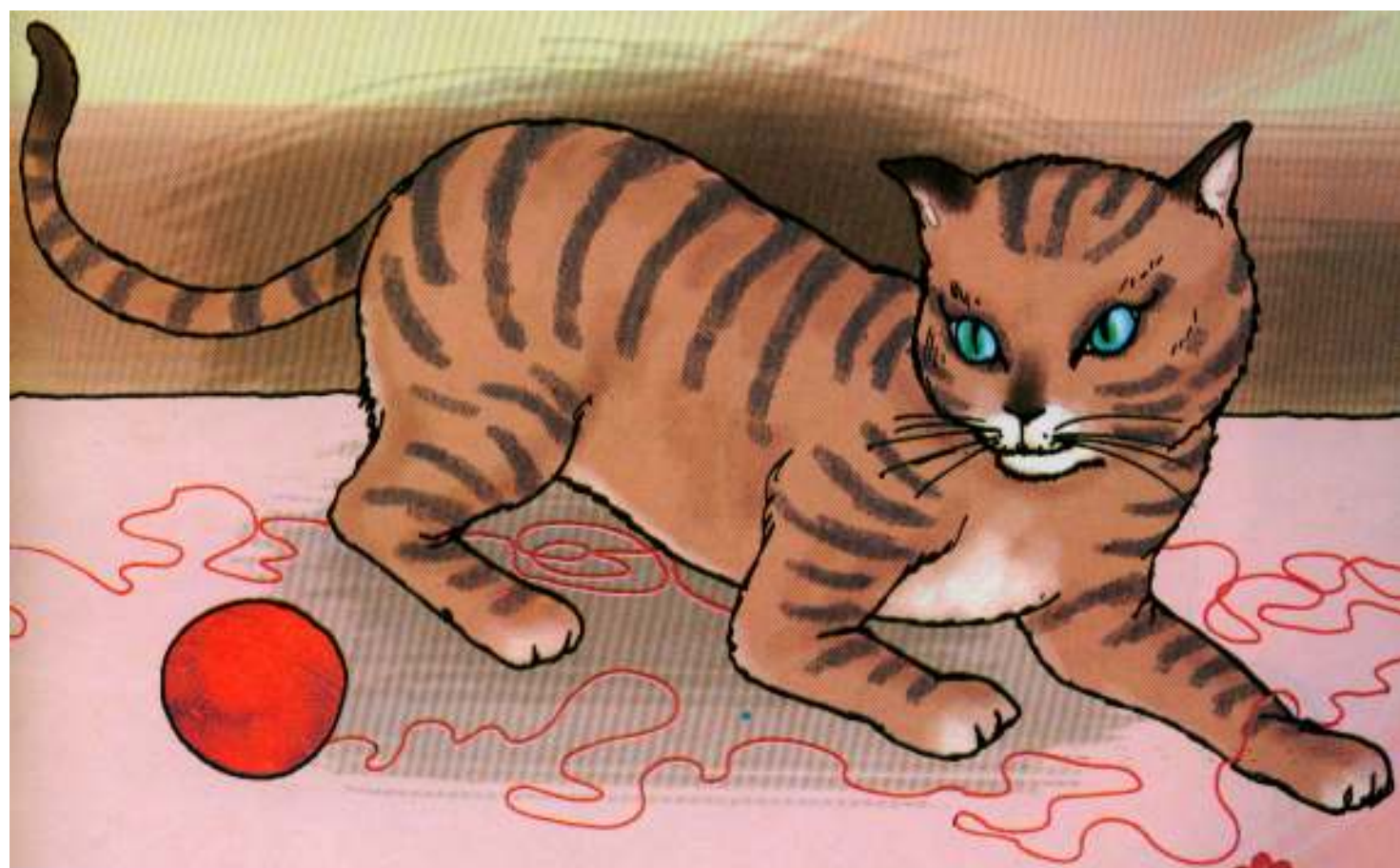
ऊन का गोला यहाँ-वहाँ लुढ़कने लगा।  
मुनमुन उसके पीछे-पीछे भागने लगी।





10

ऊन का गोला छोटा होता जा रहा था।  
मुनमुन उसके पीछे-पीछे भाग रही थी।



11

ऊन का गोला खुलता जा रहा था।  
खुलता जा रहा था।



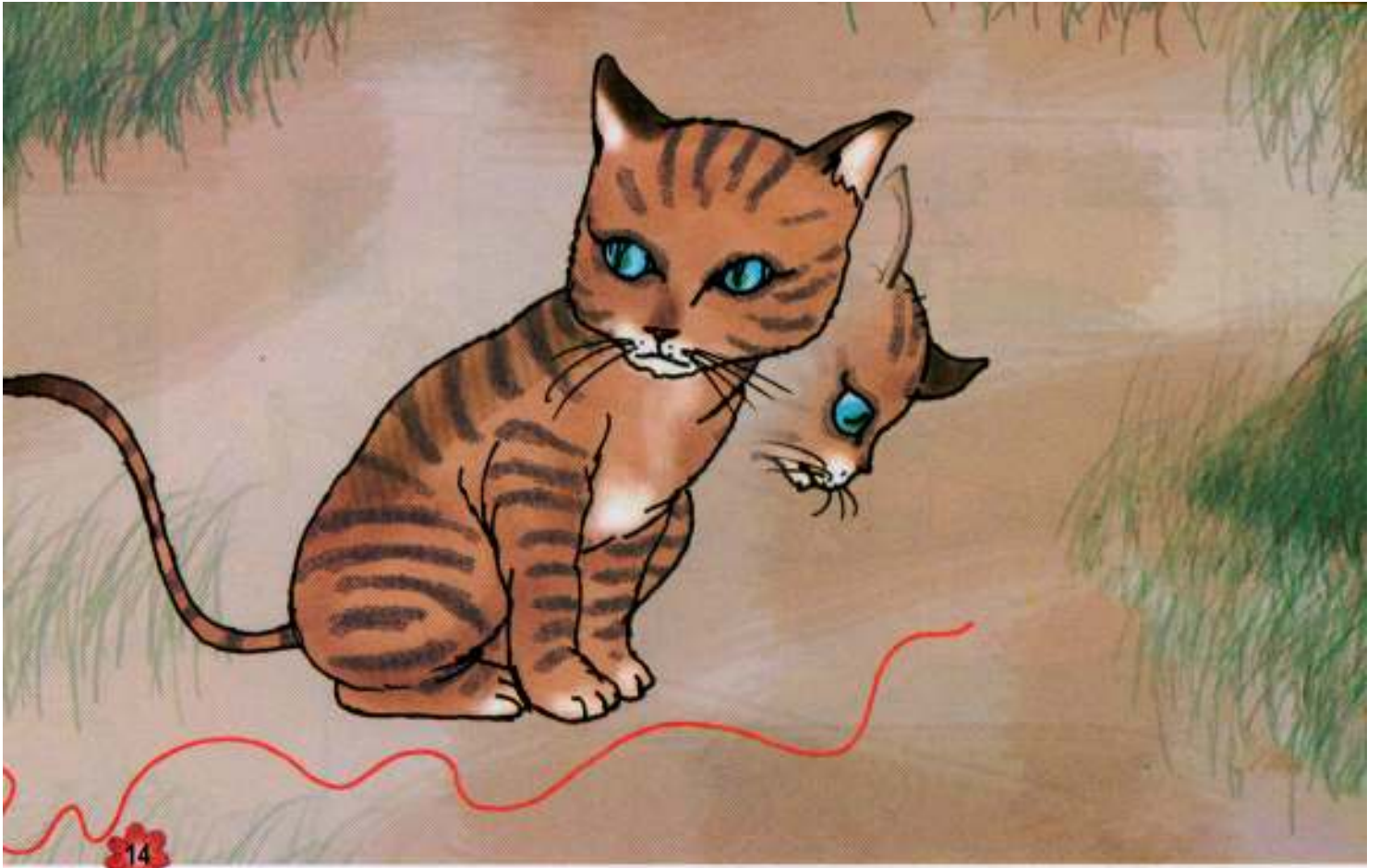


थोड़ी-थोड़ी ऊन मुनमुन के पैरों में भी फँस रही थी।  
मुनमुन उसको पंजे से निकाल देती थी।



गोला लुढ़क-लुढ़क कर छोटा-सा रह गया था।  
मुनमुन उसको पकड़ नहीं पा रही थी।





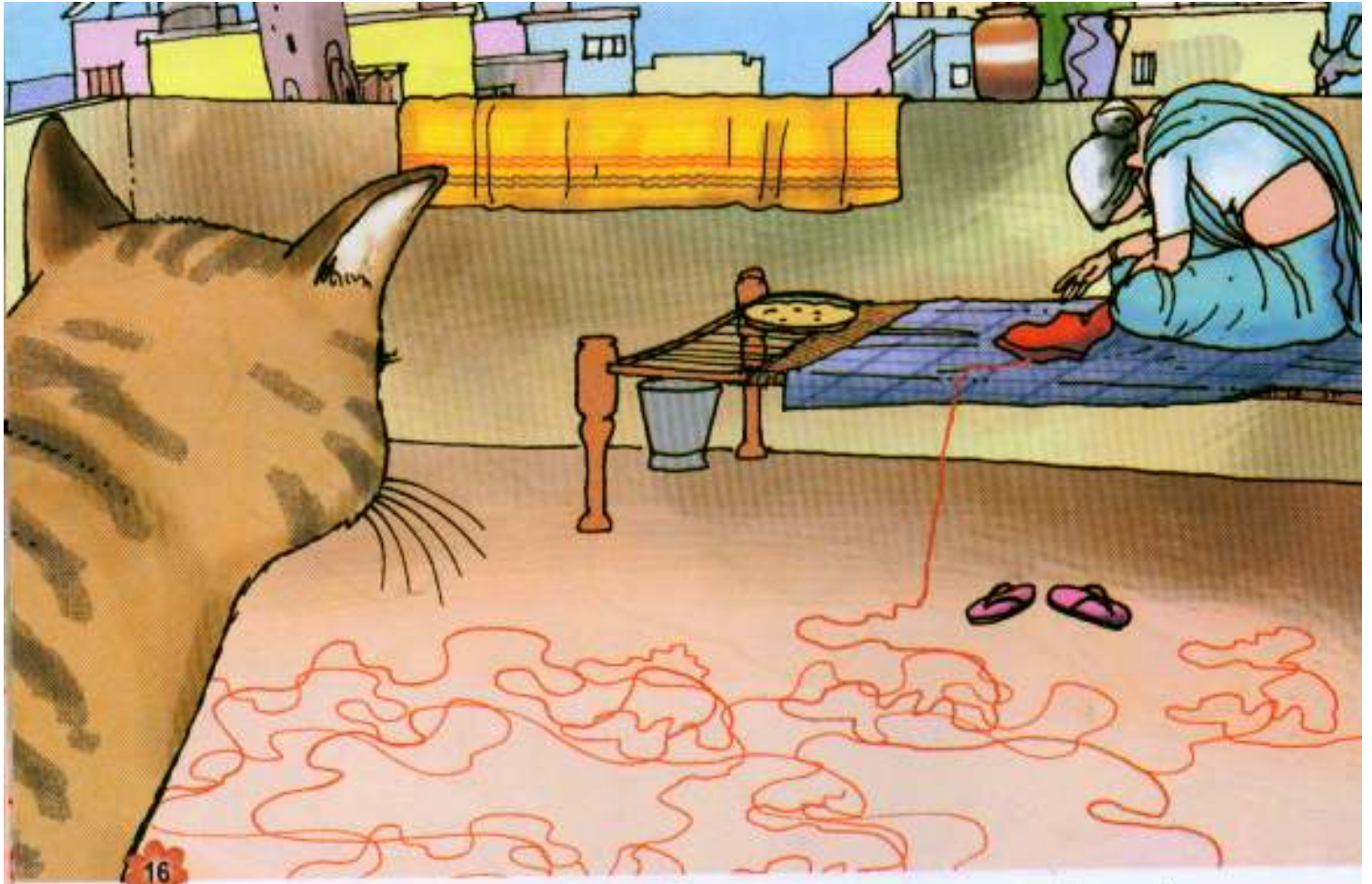
14

गोला जब पूरा खुल गया तो गायब हो गया।  
मुनमुन परेशान होकर गोले को ढूँढ़ने लगी।



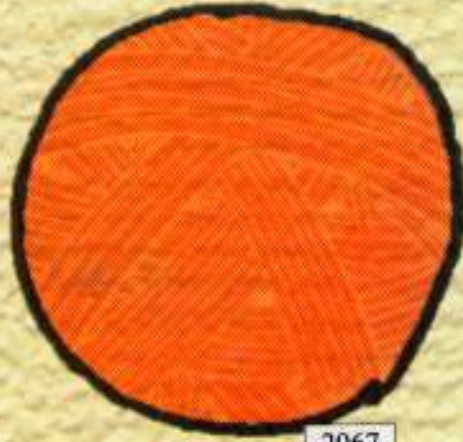
मुनमुन कभी आगे देखती कभी पीछे।  
पर गोला उसे मिला नहीं।





16

मुनमुन भागकर नानी के पास वापस चली गई।  
नानी अब भी गहरी नींद में सो रही थीं।



2067



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धा-सैट)  
978-81-7450-868-3



# हिच-हिच हिचकी

पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : दिसंबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 101 NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंगुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वधो; प्रोफेसर फरीद, अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुशी नुलहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मर्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा संकन प्रिंटिंग प्रेस, छी-28, इंदिराप्रस्त एरिया, साइट-ए,  
मधुप 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)  
978-81-7450-869-0

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### प्रकाशक सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. केपस, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फ़्रीट रोड, इली एम्बरेशन, होस्टेके, बल्लारगरी III स्टेशन, बंगलूर 560 085  
फ़ोन : 080-26721749
- नवजीवन टूरट भवन, काकाय नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. केपस, निकर; पनकत बस स्टॉप फ्रीहटी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, चान्नीमल्ल, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. लक्ष्मणर मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : स्वच्छ उत्पल मुख्य व्यवहार अधिकारी : शैलम मंगुली



# हिच-हिच हिचकी



रमा



रानी



मम्मी



2

एक दिन मम्मी ने कचौड़ियाँ बनाईं।  
रमा ने पूरी चार कचौड़ियाँ खाईं।





रमा को ज़ोर-ज़ोर से हिचकियाँ आने लगीं।  
हिच-हिच-हिच-हिच



4

दादी जग में पानी भरकर ले आई।  
दादी ने खूब सारा पानी पीने को कहा।





रमा ने पानी पी लिया पर हिचकी नहीं रुकी ।  
हिच-हिच-हिच-हिच

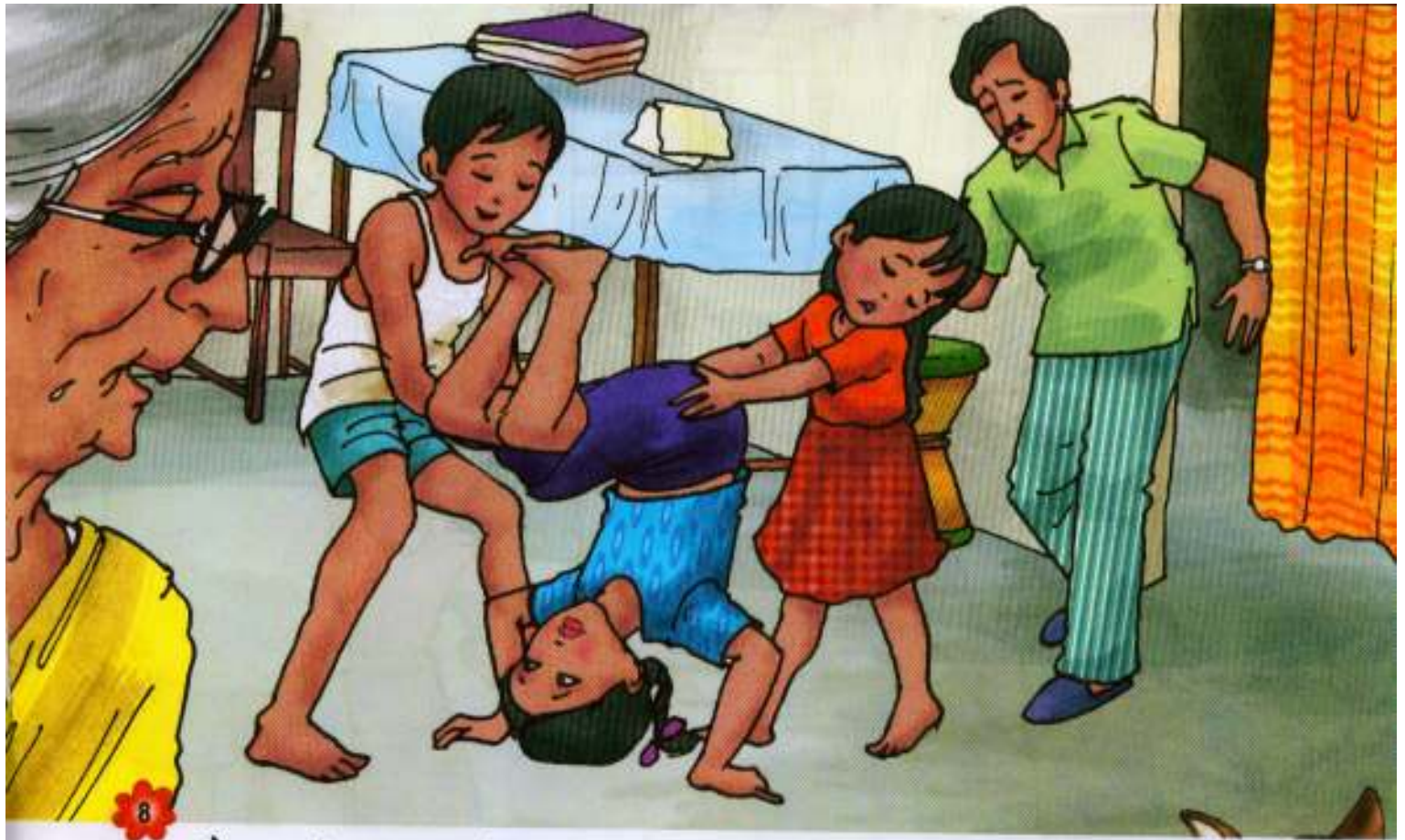


पापा ताली बजाने लगे।  
पापा ने गाना गाने को कहा।





रमा ने गाना गाया पर हिचकी नहीं रुकी ।  
हिच-हिच-हिच-हिच



8

भैया ने सिर के बल खड़े हो जाने को कहा।  
भैया ने रमा को सिर के बल खड़ा कर दिया।





9

रमा उल्टी हो गई पर हिचकी नहीं रुकी ।  
हिच-हिच-हिच-हिच



मम्मी भी रसोई से बाहर आ गईं।  
मम्मी ने कदम-ताल करने को कहा।





रमा ने ज़ोर-ज़ोर से कदम-ताल की पर हिचकी नहीं रुकी।  
हिच-हिच-हिच-हिच



12

तभी रानी रसगुल्ले का डिब्बा ले आई।  
रानी ने कहा कि रमा ने दो रसगुल्ले खाए हैं।





रमा ज़ोर से चिल्लाई- नहीं।  
वह बोली- मैंने रसगुल्ले नहीं खाए।



यह बोलकर रमा एकदम से चुप हो गई।  
सब लोगों को हैसी आ गई।





सबने देखा कि रमा की हिचकी बंद हो गई थी।  
हिचकी गायब।



16

रमा एक और कचौड़ी खाने बैठ गई।  
घर के बाकी लोग भी अपनी-अपनी कचौड़ी खाने लगे।





2068



रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (कठक-सेट)  
978-81-7450-869-0



पढ़ना है समझना

# मोनी





प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 200T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, तुलतुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सोमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुरशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कृतिका एस. नरूला

सज्जा तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक कावपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महारत्ना गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरुण; प्रोफेसर फरीद अदुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वचंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. राबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.  
मुंबई; सुश्री नुतहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 बी.एस.एच. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री आर्किव मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, सी-28, इंडस्ट्रियल एरिया,  
साइट-ए, मधुपुर 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा सैट)  
987-81-7450-870-6

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरवि मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562308
- 108, 100 पीन रोड, वेली एक्सप्रेसन, होस्टेल्, बसस्थली III स्टेशन, बेंगलूर 560 085  
फ़ोन : 080-26725740
- नवजीवन टूरट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, बिल्डिंग: भवनल का स्टॉप चिन्हटी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालांगीव, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार	मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्ताल	मुख्य व्यापार प्रबंधक : रवींद्र सानुली

# मोनी



काजल



माधव



मोनी





एक दिन काजल और माधव खेल रहे थे।  
खेलते हुए उन्हें कूँ-कूँ की आवाज़ सुनाई दी।



काजल को वहाँ कोने में एक पिल्ला दिखाई दिया।  
पिल्ले को कई जगह चोट लगी हुई थी।





माधव ने पिल्ले को प्यार से सहलाया।  
पिल्ले की चोटों से बहुत खून बह रहा था।



काजल दवाई लाने घर गई।  
माधव पिल्ले को प्यार से सहलाता रहा।





काजल और माधव ने मिलकर पिल्ले के घाव साफ़ किए।  
फिर उसके घावों पर पट्टी बाँधी।



7

माधव पिल्ले के लिए घर से थोड़ा दूध लाया।  
उसने पिल्ले को रुई से धीरे-धीरे दूध पिलाया।





काजल और माधव रोज़ पिल्ले को देखने जाने लगे।  
उन्होंने उसका नाम मोनी रख दिया।



काजल रोज़ मोनी के लिए एक रोटी बनवाती थी।  
माधव रोज़ मोनी को अपने गिलास में से दूध देता था।





मोनी अब ठीक होने लगी थी।  
वह खड़ी होकर खुद दूध पीने लगी।



दोनों मिलकर मोनी की पट्टी हर दूसरे दिन बदलते थे।  
काजल और माधव उसके घाव भी साफ़ करते थे।





12

मोनी अब काफ़ी ठीक हो गई थी।  
वह दौड़ने-भागने लगी थी।



मोनी काजल और माधव के पीछे-पीछे भागती थी।  
वह उनके साथ खेलती थी।





14  
माधव नीचे बैठता तो मोनी उसकी गोदी में चढ़ जाती।  
मोनी को काजल और माधव की गोदी बड़ी पसंद थी।



मोनी ने उनके घर का रास्ता भी देख लिया था।  
मोनी खुद ही काजल और माधव से मिलने आ जाती थी।





मोनी अब काजल और माधव की दोस्त बन गई थी।  
वह उनको स्कूल छोड़ने भी जाती थी।



2069



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING





पढ़ना है समझना

# चिमटी का फूल



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, तुलदत्त विस्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति चर्मा, सारिका बरिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कृतिका एस. नरुला

सज्जा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
बरिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुल माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर फरीद अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जम्मिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 जी.एस.एस. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा फंकन प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, सैक्टर-ए,  
मधुसू 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-871-3

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में सज्जानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्णअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापाया तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग वृद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अरविन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562308
- 108, 100 प्लॉट रोड, इली एक्सप्रेसवे, होमसेक्टर, बजारावली III फ्लेज, ग्रेण्डुर 360 085  
फोन : 080-26725740
- नवजीवन टुल भवन, डाकघर नवजीवन, जलमजदर 380 014 फोन : 079-27541446
- श्री.बन्धु.सी. कैम्प, निकट: धनकत चम स्टॉप चिन्हटी, कोलकाता 700 114  
फोन : 033-25330454
- श्री.बन्धु.सी. कॉम्प्लेक्स, चलीगवि, गुजराटी 781 021 फोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : शर्वाङ्ग तण्डन मुख्य व्यापार प्रबंधक : सौम्य नागुल्लू



# चिमटी का फूल



काजल



तितली



सोफ़िया



2

एक दिन काजल बगीचे में गई।  
बगीचे में बहुत सारी तितलियाँ थीं।





तितलियाँ फूलों पर मंडरा रही थीं।  
वे फूलों का रस पी रही थीं।



4

काजल सबसे बड़ी तितली के पीछे-पीछे भागी।  
उस तितली के पंख नीले, पीले और लाल रंग के थे।





तितली उड़कर गुलाब के फूल पर बैठ गई।  
काजल उसके पीछे भागी।



तितली उड़कर गेंदे के फूल पर बैठ गई।  
काजल उसके पीछे भागी।





तितली उड़कर चमेली के फूल पर बैठ गई।  
काजल उसके पीछे भागी।



8

तितली उड़कर सदाबहार के फूल पर बैठ गई।  
काजल उसके पीछे भागी।





तितली उड़कर सूरजमुखी के फूल पर बैठ गई।  
काजल उसके पीछे भागी।



10

सोफ़िया भी बाग में थी।  
उसने बालों में फूलवाली चिमटी लगायी हुई थी।





चिमटी का फूल गुलाबी रंग का था।  
फूल के नीचे हरी पत्तियाँ भी थीं।



तितली उड़कर सोफ़िया के बालों की चिमटी पर बैठ गई।  
तितली उसको असली फूल समझ रही थी।





तितली उड़ गई तो काजल ने सोफ़िया से चिमटी ले ली।  
उसने अपने बालों में वह चिमटी लगा ली।



14

काजल चिमटी लगा कर वहीं बैठ गई।  
वह चुपचाप बिना हिले-डुले बैठी रही।





काजल तितली का इंतज़ार करती रही।  
काजल बैठी-बैठी इंतज़ार करती रही।



16

अचानक उसके पास बहुत सारी तितलियाँ आ गईं।  
एक तितली उसकी चिमटी पर भी बैठ गई।





2070



रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-मुद्रा)  
978-81-7450-871-3

# जीत की पीपनी



पढ़ना है सपना





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, तुलतुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - ललितिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि बाधवा

सज्जा तथा आवरण - निधि बाधवा

डि.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आधार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग इवेलैपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, यधो; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 जी.एस.एस. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अविनाश भार्गव, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा चंकन प्रिंटिंग प्रैस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मधुप 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)  
978-81-7450-872-0

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोसमरी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिप्रॉड्यूसिबल अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग वर्धन द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, डेवले एक्सपोज़न, होम्बोकेने, चन्नाई 600 085 फ़ोन : 080-26725790
- नवजीवन ट्रस्ट पवन, डाकघर नवजीवन, अहमदनगर 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैम्प, निक्टर: धनकुल बस स्टॉप पनिकटी, कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगँव, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674809

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार मुख्तियार अधिकारी : किशु कुमार  
मुख्य संपादक : स्वप्ना उपाध्याय मुख्तियार अधिकारी : गौतम गंगुली

# जीत की पीपनी



जीत



बबली





2

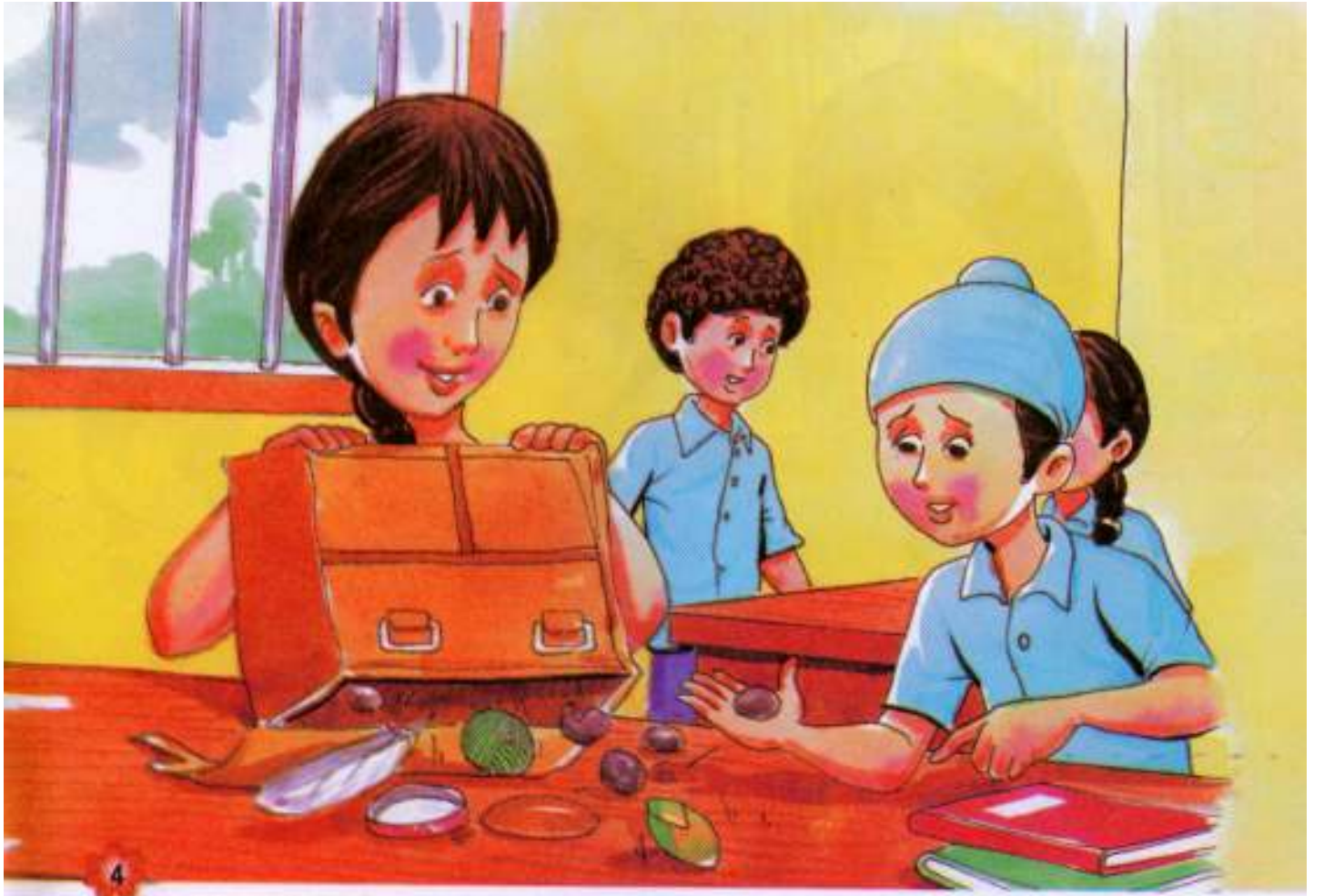
एक दिन जीत की पेंसिल कहीं खो गई।  
उसने अपनी पेंसिल हर जगह ढूँढ़ी।



3

जीत ने पेंसिल अपने बस्ते में ढूँढ़ी।  
उसके बस्ते में बहुत सारा सामान था।





4

बबली ने जीत का बस्ता उलट दिया।  
उसमें से गिल्ली, पंख, धागे, ढक्कन और पत्थर गिर पड़े।



जीत के बस्ते में से और कई चीजें निकलीं।  
बबली ने आम की एक गुठली उठा ली।





6

समीर आम की गुठली को देखने लगा।  
जीत ने बताया कि वह पीपनी है।



जीत ने आम की गुठली को घिसकर पीपनी बनाई थी।  
पीपनी से बहुत जोर की आवाज़ निकलती थी।





8

जीत ने पीपनी बजाने को कहा।  
बबली ने ज़ोर से पीपनी बजाई।

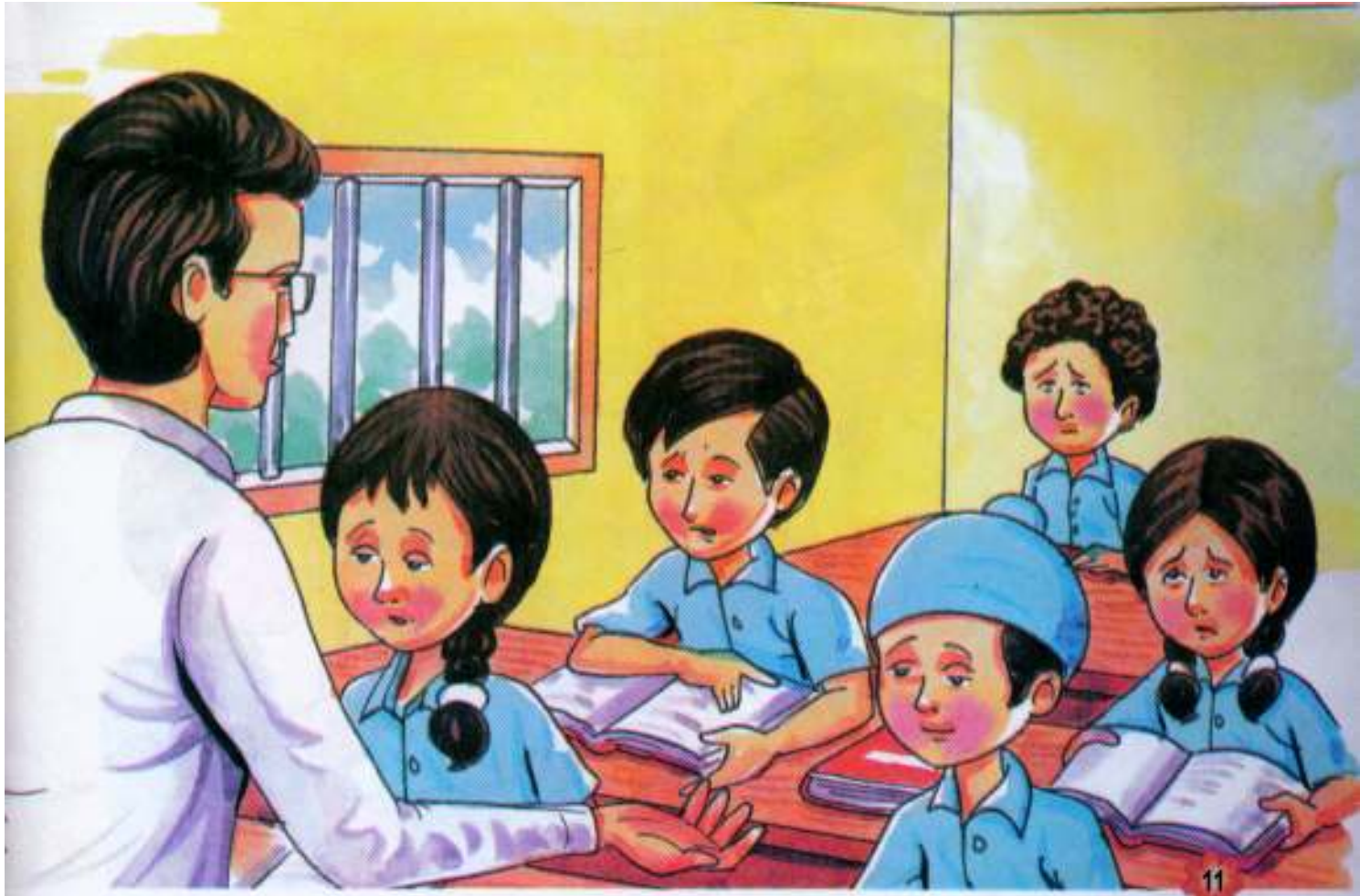


इतने में मास्टर जी आ गए।  
उन्होंने पीपनी की आवाज़ सुन ली थी।





सारे बच्चे अपनी जगह पर वापिस बैठ गए।  
सबने अपनी-अपनी किताब निकाल ली।



मास्टर जी ने पूछा कि आवाज़ कौन कर रहा है।  
सब चुप रहे।



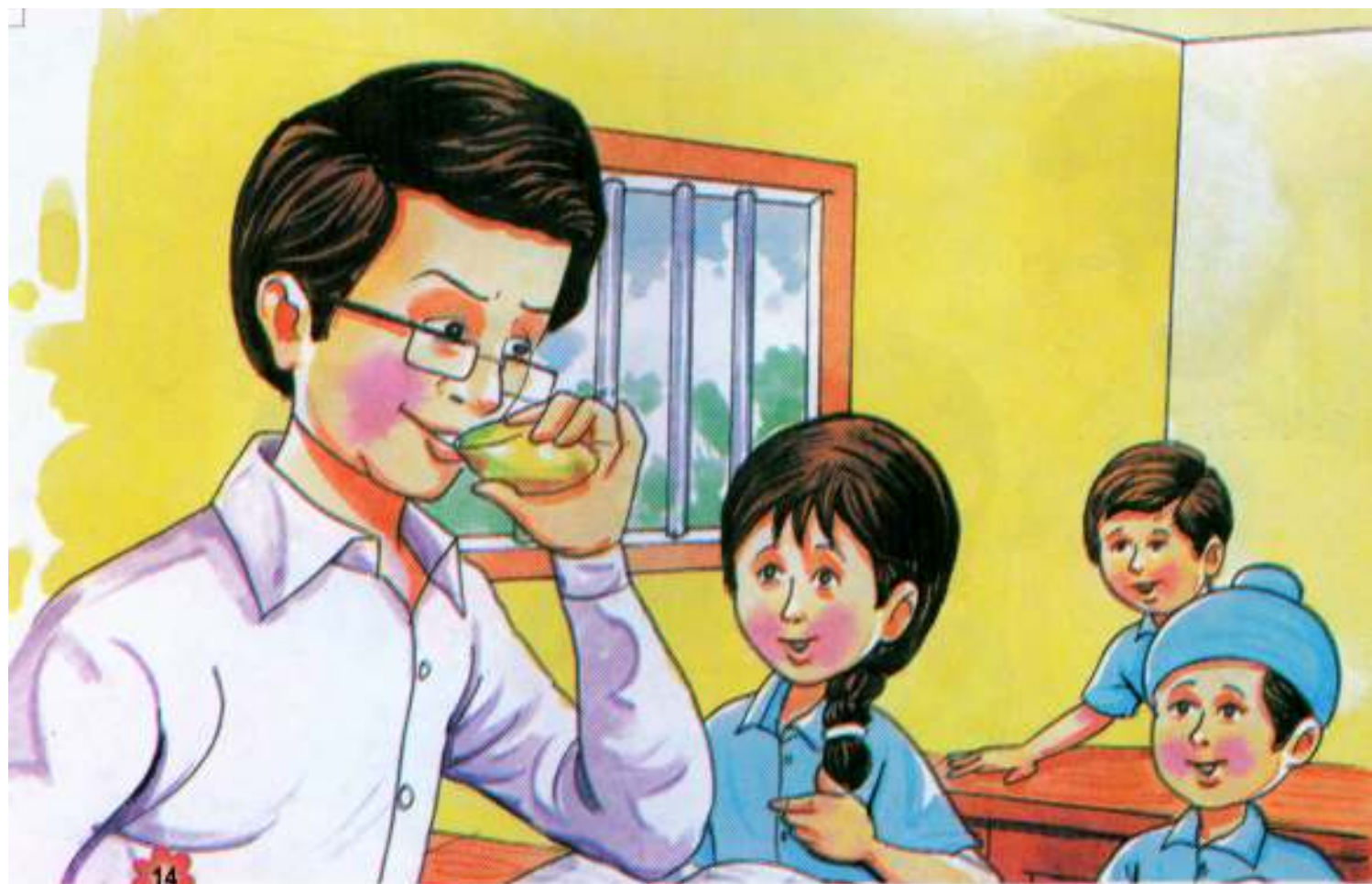


मास्टर जी ने दुबारा पूछा।  
बबली ने बता दिया कि जीत पीपनी लाया था।



मास्टर जी ने पीपनी माँगी।  
बबली ने डरते-डरते पीपनी मास्टर जी को दे दी।





मास्टर जी ने पीपनी बजाने की कोशिश की।  
पीपनी बजी ही नहीं।



मास्टर जी बोले कि कोई बजाकर दिखाओ।  
उन्होंने पीपनी देते हुए हाथ बढ़ाया।





16

बच्चे पीपनी बजाने के लिए मास्टर जी की तरफ दौड़े।  
हम बजाएँगे - हम बजाएँगे - हम बजाएँगे।



2071



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)  
978-81-7450-872-0





पढ़ना है समझना

# आउट



**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**चित्रांकन** – निधि बाधवा

**संज्ञा तथा आवरण** – निधि बाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर** – अरुणा गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशासनिक संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रौद्योगिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुल माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलेपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक काजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वार्हा; प्रोफेसर करीष्वा अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. सचनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुशी नुक्कत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 को.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचालित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, बी-28, इंदिराप्रियतम एरिया, सैफ्ट-ए, माडुल 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)  
978-81-7450-873-7

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोशमरी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' को सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन तथा प्रलेखनीयता, यहाँनी, फोटोप्रॉडक्शन, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पदपूर्ति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अरविन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 109 फौर रोड, इली एम्बेडेशन, हाथरस, पनार्लकी III नगर, बंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवजीवन टूरल भवन, डाकघर नौखीवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैम्प, निकटः पनकल वन स्टॉप पोलिटी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मन्तीगँव, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674809

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार	मुख्य उत्पदन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : रमेश उत्पल	मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गंगुली



# ਆਡਟ



ਜੀਤ



ਬਬਲੀ



छुट्टी का दिन था।  
जीत और बबली सुबह से खेल रहे थे।





उन्होंने कई सारे खेल खेले।  
दोनों ने रस्सी कूदी।



फिर छुपन-छुपाई खेली।  
उसके बाद गिल्ली-डंडा खेला।





बबली ने क्रिकेट खेलने के लिए कहा।  
जीत गेंद फेंकने के लिए तैयार हो गया।



जीत ने गेंद फेंकी।  
बबली ने जोर से बल्ला घुमाया।





गेंद मोहित के आँगन में चली गई।  
मोहित के घर ताला लगा हुआ था।



जीत और बबली का खेल रुक गया।  
बबली बोली कि उसे गेंद बनानी आती है।





उसने जीत से कपड़े, कागज़ और पन्नी लाने को कहा।  
वह खुद भी ये सब ढूँढ़ने लगी।



दोनों ने खूब सारी कतरनें और पन्नियाँ इकट्ठी कर लीं।  
बबली सुतली का टुकड़ा भी ले आई।





बबली ने उन सबको मिलाकर एक गोला बनाया।  
गोले को सुतली से कस दिया।



12

दोनों की पसंद की गेंद बन गई।  
खेल फिर से शुरू हो गया।





इस बार बबली ने गेंद उठाई।  
जीत ने बल्ला उठाया।



बबली ने गेंद फेंकी।  
जीत ने ज़ोर से बल्ला घुमाया।





गेंद खुलकर हवा में फैल गई।  
बबली ने उछलकर एक कपड़ा पकड़ लिया।



16

बबली उछल-उछलकर आउट-आउट चिल्लाने लगी।  
वह हाथ में कपड़ा लेकर आउट-आउट कहते हुए दौड़ी।





2072



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)  
978-81-7450-873-7

# हमारी पतंग



पढ़ना है समझना





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलुटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सोमा कुमारी, सोनिका कौशिक, मुरली शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – कनक राशि

सज्जा तथा आवरण – निधि बाधवा

डि.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, मानसी सिन्हा, अंगुल गुप्ता

आधार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंगुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक राजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, सीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. राजनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुवहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित भनकर,  
निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 बी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, सैफ्ट-ए,  
मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-कैट)  
978-81-7450-874-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्वजानुति के बिना इस प्रकार के किसी भी नक़ल को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा इसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेल्थ एम्प्लॉयमेंट, रोडवेकर, बलासोरी III स्टेशन, बंगलुरु 560 085  
फोन : 080-26725749
- नवजीवन ट्रास्ट भवन, हाकरम चतुर्दश, अहमदाबाद 380 034 फोन : 079-27341440
- सी.इन्फ्यू.सी. कैम्प, निकट: धनकुल का स्टॉप चिह्न, कोलकाता 700 114  
फोन : 033-25530454
- सो.उपग्राम, बंधोवैला, सल्लोरी, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार	मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : शंकर उष्यल	मुख्य व्यवहार अधिकारी : रीतम मंगुली

# हमारी पतंग



मिली की मम्मी



मिली





2

एक दिन मिली छत पर गई।  
आसमान में बहुत सारी पतंगें उड़ रही थीं।



मिली का मन हुआ कि वह भी पतंग उड़ाए।  
वह फ़ौरन नीचे आ गई।





मिल्ली ने माँ से पतंग उड़ाने के लिए कहा।  
अ घर में पतंग नहीं थी।



माँ ने कहा कि चलो पतंग बनाते हैं।  
मिली यह सुनकर खुश हो गई।





6

मिली माँ के साथ पतंग बनाने लगी।  
वह कागज़ और गोंद ले आई।

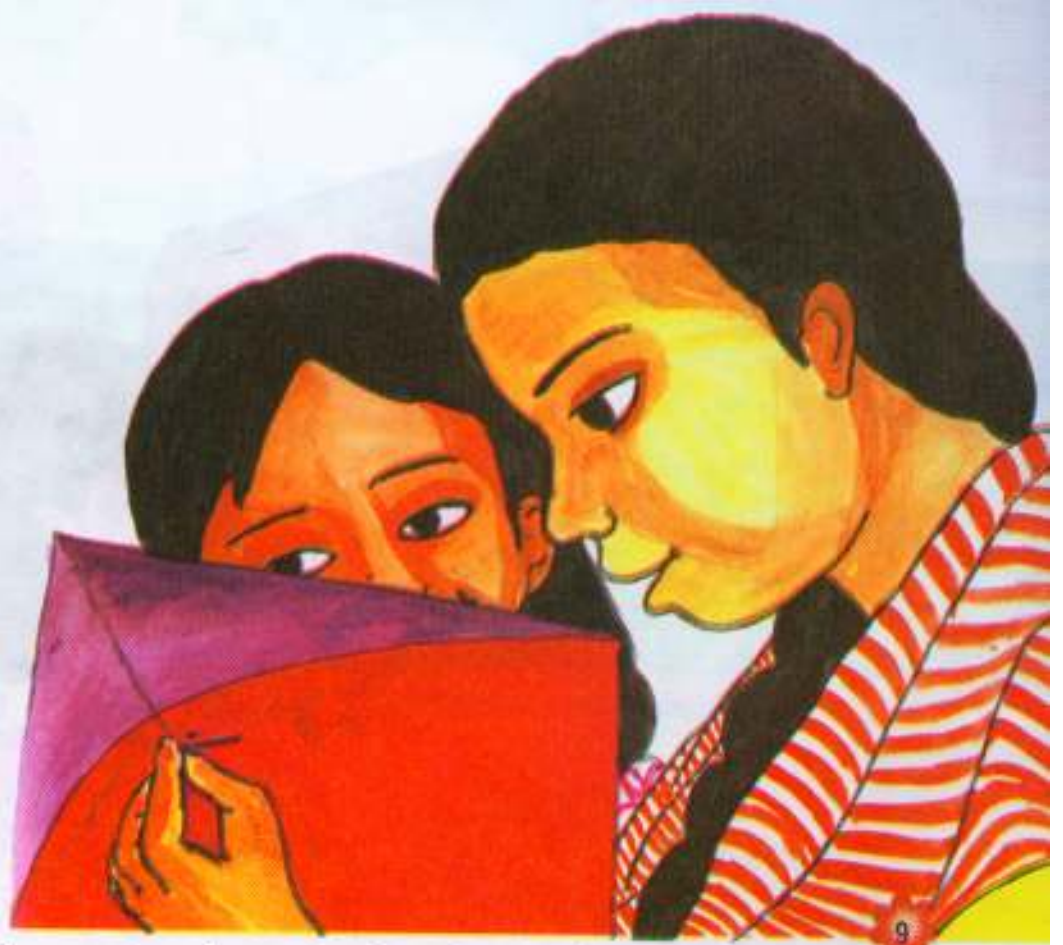


माँ कैंची और तीलियाँ ले आईं।  
दोनों मिलकर पतंग बनाने बैठ गईं।





माँ ने कागज़ काटा और तीली मोड़ी।  
उन्होंने मिली की मदद से तीली कागज़ पर चिपकाई।



फिर उन्होंने पतंग के बीचों-बीच दो छेद किए।  
ये छेद माँझे के लिए किए थे।





10

मिली ने पतंग के कोने पर अपना फ़ीता लगा दिया।  
उसने फूँक-फूँक कर गोंद सुखा दी।



दोनों छत पर पतंग उड़ाने पहुँच गईं।  
माँ ने छेदों में माँझा डाला।





माँ और मिली ने पतंग उड़ाना शुरू किया।  
मिली ने चरखी पकड़ी।

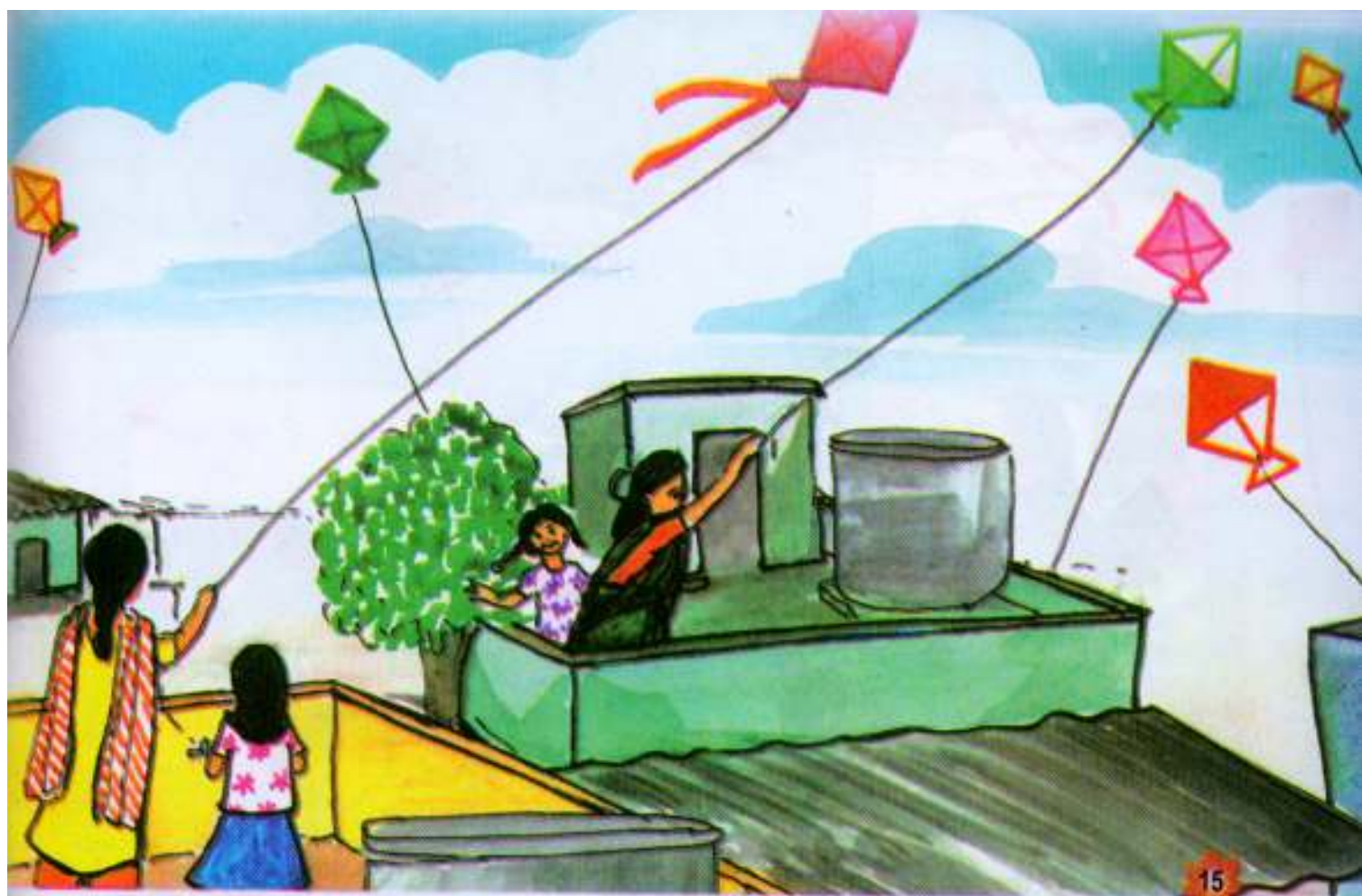


माँ ने माँझा ताना।  
थोड़ी देर में पतंग आसमान में उड़ने लगी।





उनकी पतंग बहुत ऊपर चली गई थी।  
मिली ताली बजा-बजा कर कूदने लगी।



तोसिया भी अपनी मम्मी के साथ पतंग उड़ा रही थी।  
दोनों पतंगें साथ-साथ उड़ने लगीं।





माँओं की पतंगें खूब ऊँची उड़ रही थीं।  
तोसिया और मिली हाथ में चरखी पकड़े उछल रही थीं।



2073



रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)  
978-81-7450-874-4



# शरबत



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, तुलतुल विश्वास, मुकेश मालवीय,

राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,

सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कनक शशि

सज्जता तथा आवरण - निधि बाथवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशासकीय संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग टेक्नीपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिन्ना मिलिया इस्तामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.राजनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एल.एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुसहत इसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 बी.एस.एन. फोन पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा कंकड़ प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, सख्त-ए, मधु 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-875-1

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोशमरा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### समाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापाव तथा एलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रिंटींग, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 109 फोन रोक, डेली एक्सप्रेस, हाउसिंग, नगराजपु 110 स्टेशन, जयपुर 560 085 फोन : 086-26725740
- नवजीवन टुअट भवन, डाकघर नवजीवन, अग्रमण्डल 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.एन.यू.सी. कैंपस, निकट: भनकल घाट सीधे गरीबों, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25330454
- सी.एन.यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मनीषीब, गुजराटी 781 021 फोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. लालकुमार  
मुख्य संपादक : इशिता उपाध्याय

मुख्य उत्पादन अधिकारी : मित्र कुमार  
मुख्य व्यापार अधिकारी : गीता गुप्ता



# शरबत



तोसिया



मिली



2

एक दिन तोसिया और मिली ने शरबत बनाया।  
दोनों ने पानी में लाल-लाल शरबत घोला।





शरबत में चीनी भी मिलाई।  
उसमें खूब सारी बर्फ डाली।



तोसिया और मिली शरबत पीने बैठ गईं।  
वे शरबत पीते-पीते बातें करने लगीं।





तोसिया हाथ हिला-हिलाकर बात कर रही थी।  
उसका हाथ लगा और शरबत गिर गया।



6 मिली ने तोसिया को अपना आधा शरबत दे दिया।  
दोनों फिर शरबत पीने लगीं।





तोसिया की नज़र गिरे हुए शरबत पर पड़ी।  
उसे गिरा हुआ शरबत बादल जैसा लगा।



8

तोसिया ने शरबत में उँगली घुमाकर मछली बना दी।  
उसने मछली की पूँछ भी बनाई।





मिली ने गिरे हुए शरबत से फूल बना दिया।  
फूल के नीचे दो पत्तियाँ भी बनाईं।



10

तोसिया ने फूल मिटा के सूरज बना दिया।  
तोसिया ने सूरज की लंबी-लंबी किरणें बनाईं।





फिर तोसिया ने एक नाव बनाई।  
तोसिया ने नाव पर एक झंडा बनाया।



12

मिली ने उस झंडे में से एक पतंग बना दी।  
तोसिया ने पतंग की लंबी डोर बनाई।





वह पतंग की डोर को पूरे कमरे में खींचती रही।  
मिली उसके पीछे-पीछे चल रही थी।



14

तोसिया बोली कि ममता को बुलाकर लाते हैं।  
उसको यह सब दिखाएँगे।



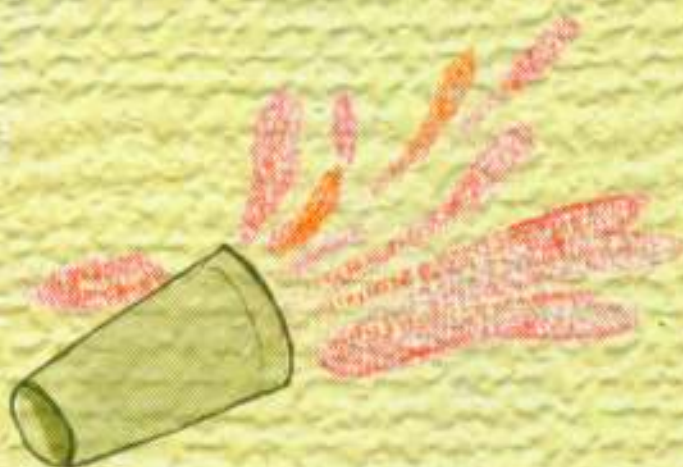


तोसिया और मिली ममता के साथ लौटीं।  
शरबत की पतंग और डोर तो गायब थी।



उन्होंने देखा कि मुनमुन सारा शरबत चट कर चुकी थी।  
तोसिया और मिली ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगीं।





2074



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बद्धा-सैट)  
978-81-7450-875-1

# पत्ताल



पढ़ना है समझना





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका बशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुकल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि बाधवा

सज्जा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑफ़सेटर - अर्चना गुप्ता, अशुल गुप्ता, सीमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोग्रामिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
बशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजय्य शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर फरीद, अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वाचंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस,  
मुंबई; सुश्री नुजहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

श्री जे.एस.एम. पेपर प्रा मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा फकन प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडोस्ट्रियल एरिया, साइट-ए,  
मधुल 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)

978-81-7450-876-8

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी, फोटोकॉपी, स्कैनिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग कृपति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 109 फ़ोर्ट रोड, डेली एक्सप्रेस, होम्पेकेरे, बचरावारी III फ़ोन, फ़ैक्स 500 183
- फ़ोन : 080-26725740
- मल्लिकार्जुन टावर फ्लोर, बचरावारी, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सै.इ.ए.ए.सी. कैंपस, निरंजः धनकाल कम कंठि पनहरी, कोलकाता 700 114
- फ़ोन : 033-25530454
- सै.इ.ए.ए.सी. कैंपस, मल्लिकार्जुन, बचरावारी 781 021 फ़ोन : 0361-2674889

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार मुख्य उत्पादन अधिकारी : दिनेश कुमार  
मुख्य संचालक : शशेंद्र उपाध्याय मुख्य छापाई अधिकारी : नीतान गौड़री

# पत्ताल



दीदी



मदन



जमाल





एक दिन सब बच्चे दीदी के साथ पिकनिक पर गए।  
वे सब पास के एक पार्क में गए थे।



पार्क में सब खूब दौड़े और कूदे।  
सबने खूब सारे खेल खेले।





4

खेलते-खेलते सब थक गए।  
सारे बच्चों को ज़ोर से भूख लगने लगी।



दीदी खूब सारा खाना लाई थीं।  
उन्होंने सबको खाने के लिए बुलाया।





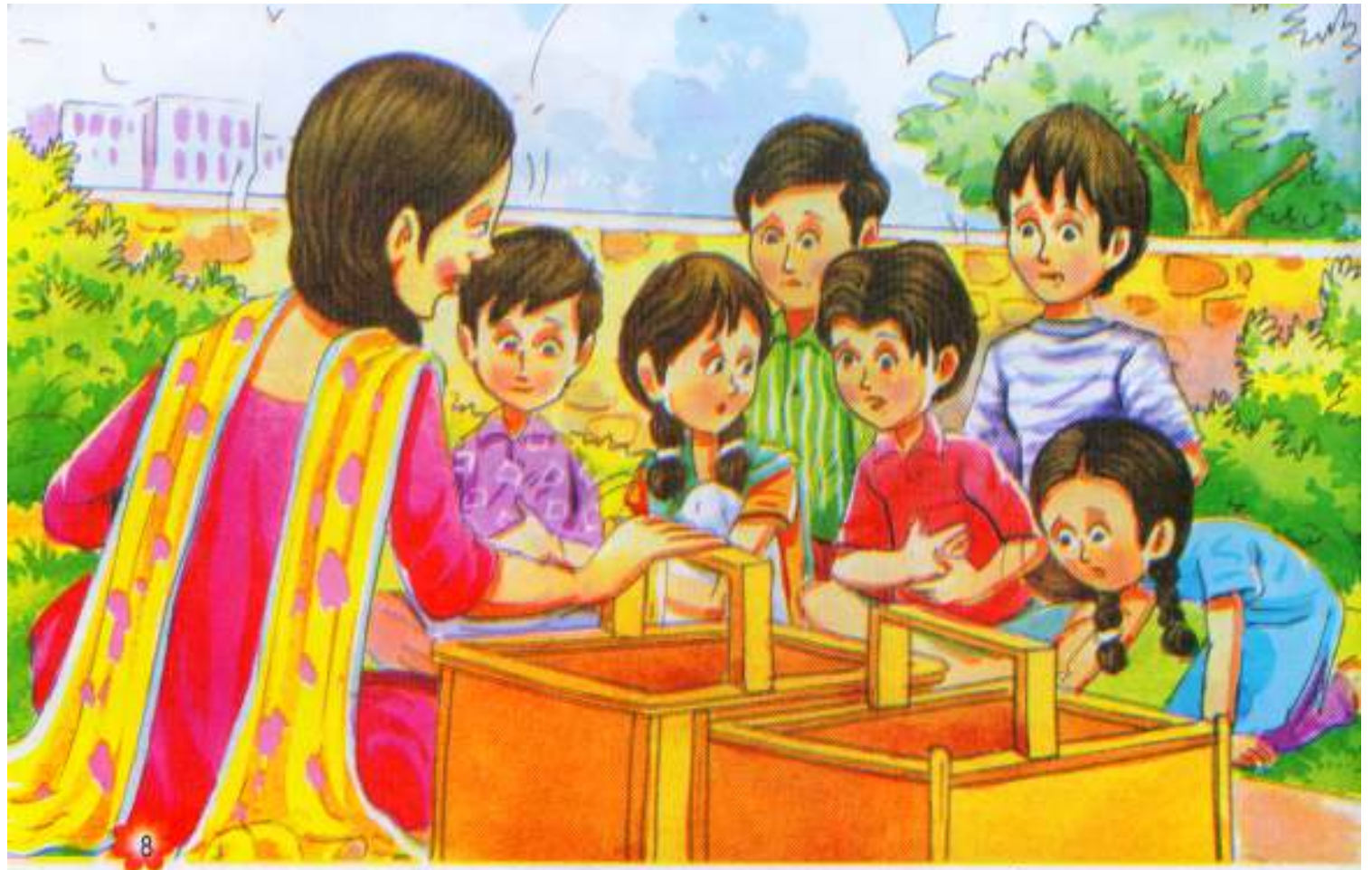
6

दीदी ने बड़े-बड़े डिब्बे लाइन से लगा दिए।  
डिब्बों पर बड़े-बड़े चमचे रखे हुए थे।

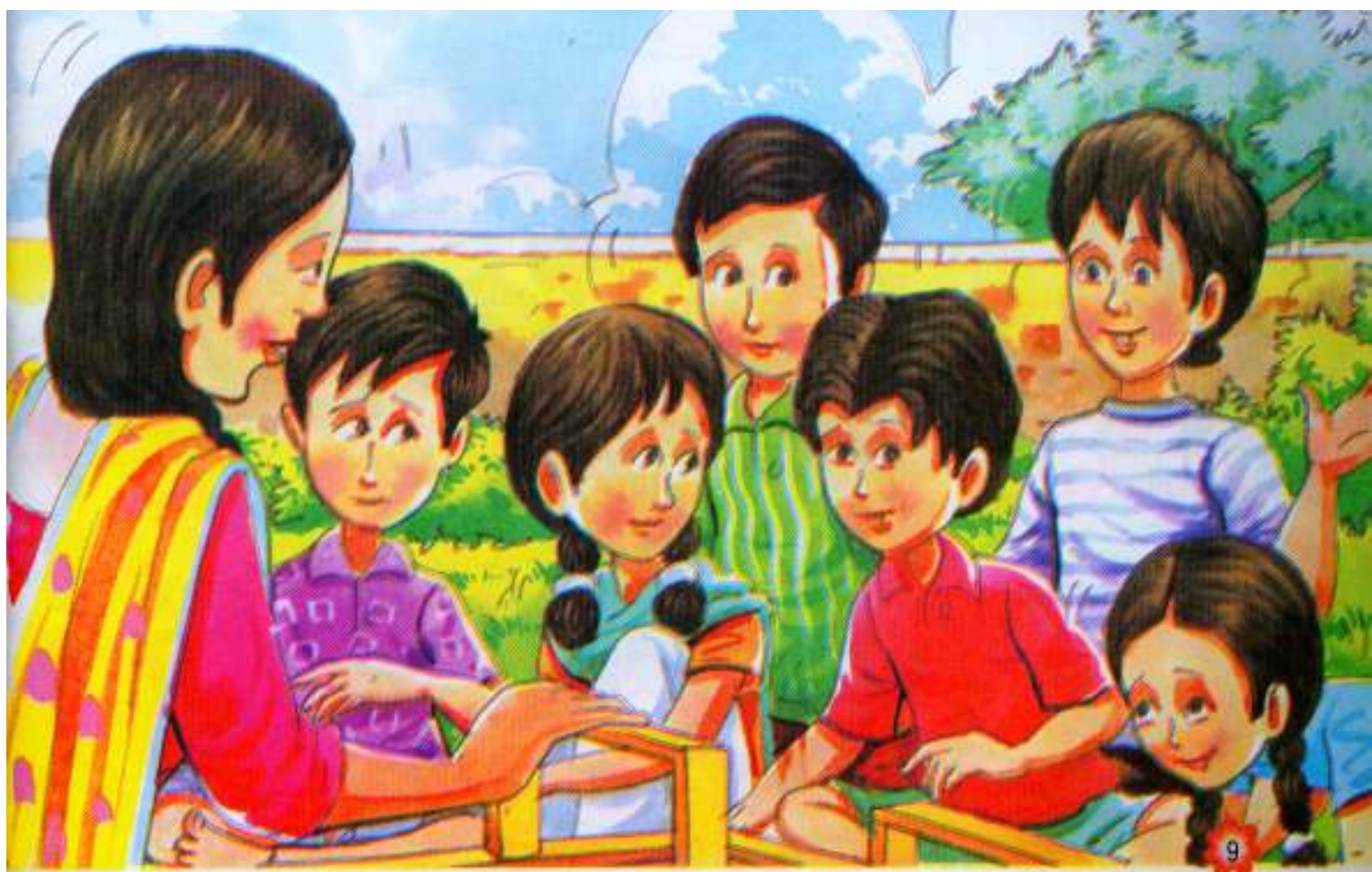


दीदी इधर-उधर कुछ ढूँढ़ने लगीं।  
वह बर्तनों का झोला घर भूल आई थीं।



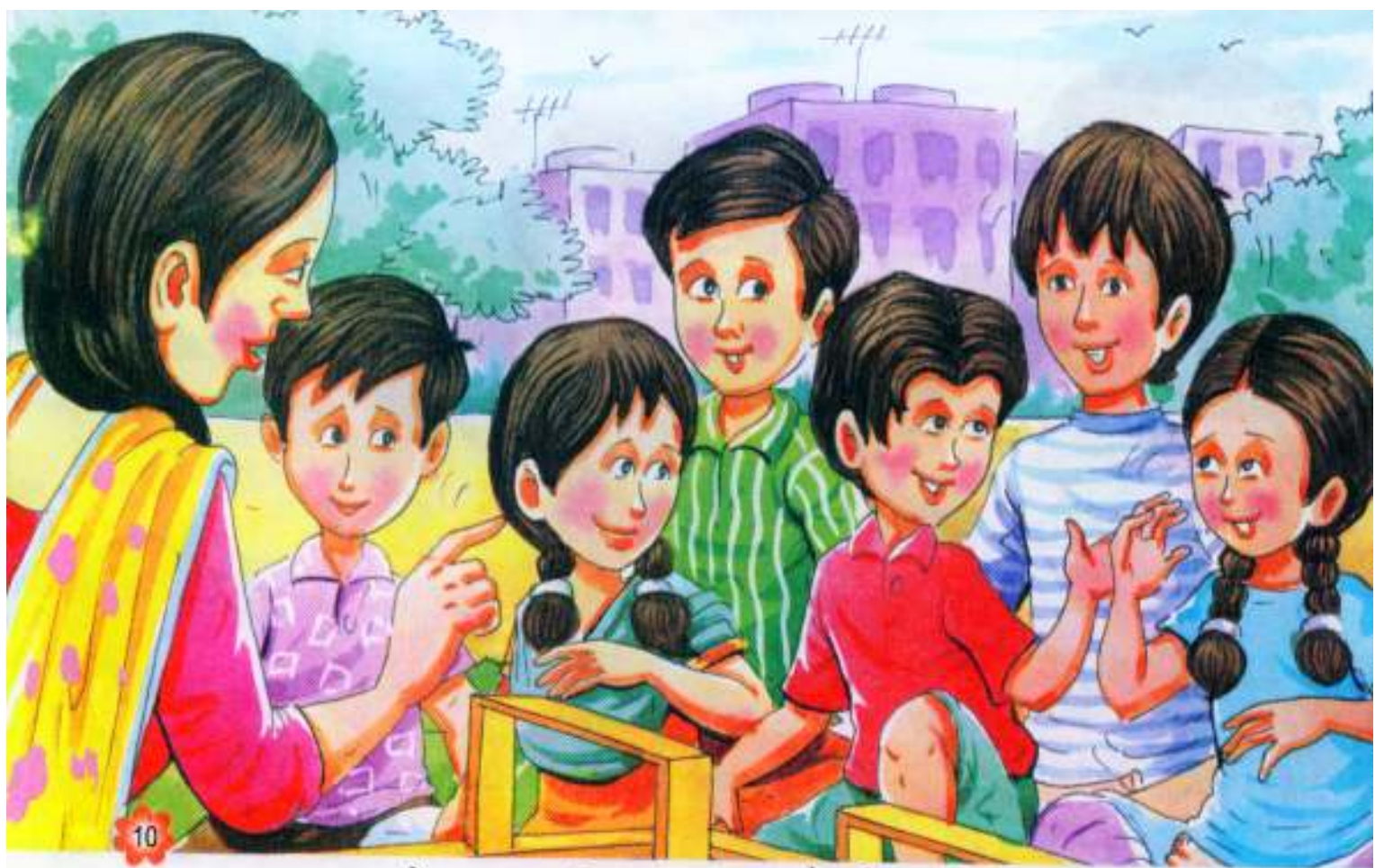


खाना खाने के लिए बर्तन नहीं थे।  
सब शोर मचाने लगे।



मदन बोला कि पत्तल बना लेते हैं।  
पत्तल पर खाना खा लेंगे।





जमाल ने पूछा कि पत्तल कैसे बनेंगे।  
मदन ने कहा कि पत्ते बीनकर ले आएँगे।



सारे बच्चे पत्ते लाने दौड़े।  
सबने नीचे पड़े हुए साफ़ पत्ते बीन लिए।



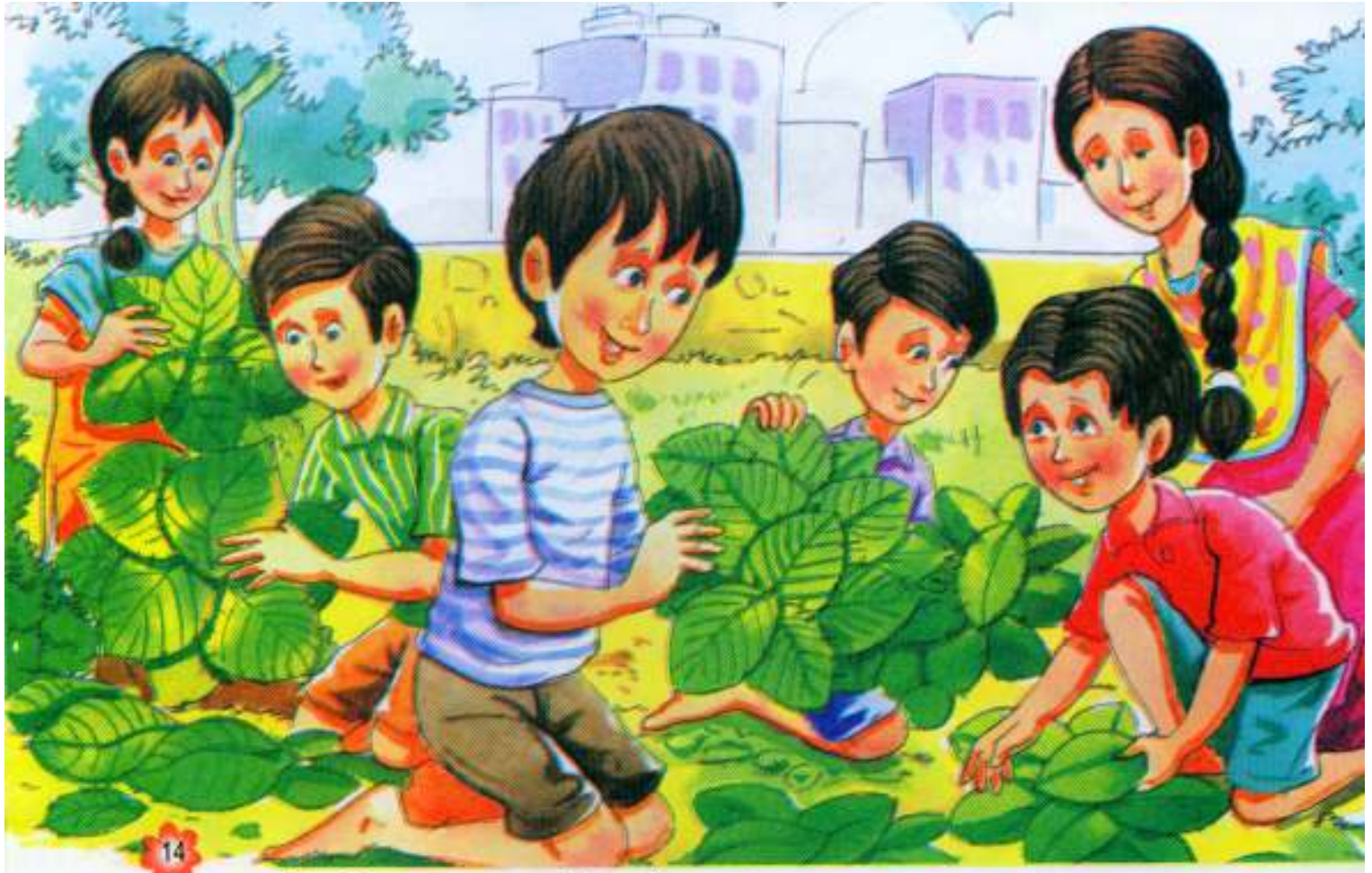


जमाल बड़ के पत्ते बीन लाया।  
मदन भी बड़ के पत्ते बीन लाया।

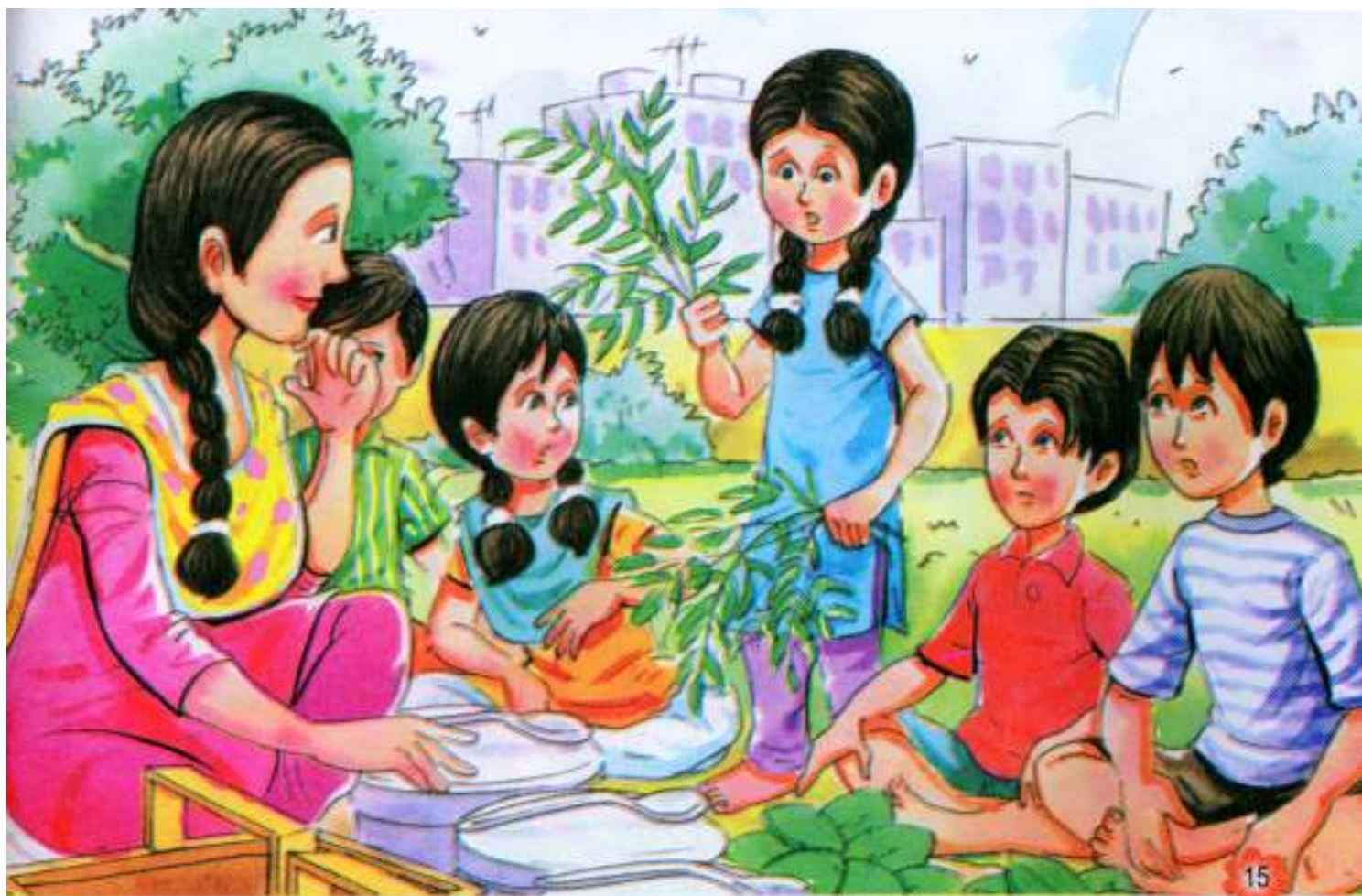


पूजा ढाक के पत्ते लाई।  
राजा भी ढाक के पत्ते लाया।





सबने मिलकर पत्ते धोए।  
पत्तों को सीकों से जोड़-जोड़ कर पत्तलें बनाईं।



सब पत्तल लेकर खाना खाने बैठ गए।  
रानी हाथ में नीम की पत्ती लिए खड़ी थी।





16

सब हँसने लगे कि नीम की पत्ती पर कौन खाना खाएगा।  
दीदी ने कहा कि चींटी खाएगी।



2075



रु. 10.00

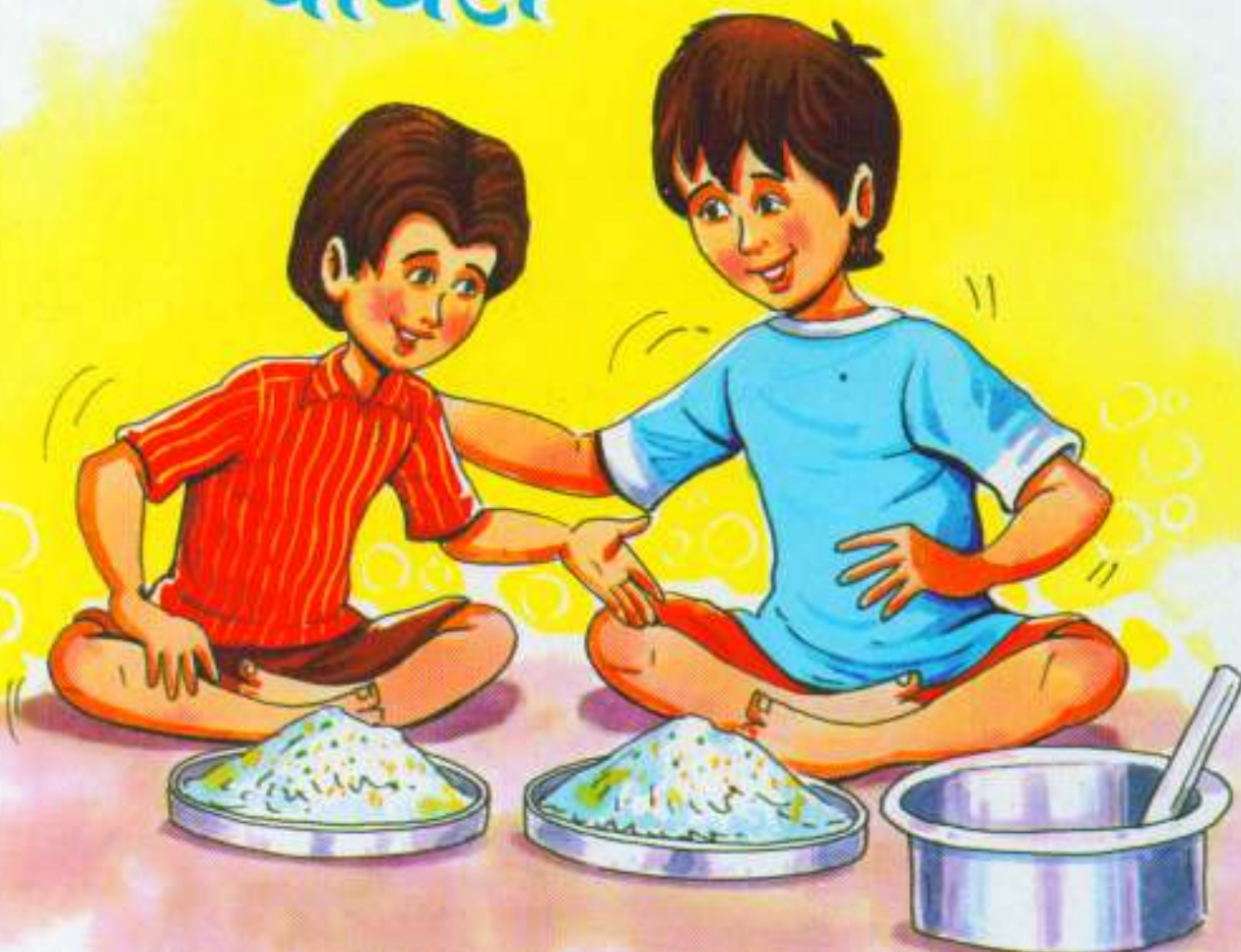
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



# चावल



पढ़ना है समझना



**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलुटुल विश्वास, मुकेश मलवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुरेशल शुकल

**सवस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**चित्रांकन** – जोएल गिल

**सज्जा तथा आवरण** – निधि वाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर** – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, माध्यमिक विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्या; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस. मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एन. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा चंकन प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

**ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)**  
978-81-7450-878-2

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्णअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिनिधि, डिजिटल अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री आर्यभट्ट मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फोर्ट रोड, इली एक्सप्रेसवे, होम्बेकरे, बंगलूरु 560 085 फोन : 089-26725340
- नवकोश टुडै मकान, डाक्टर लक्ष्मीन, जहमनबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.एम्.ए.सी. कैंपस, बिल्डर: धनकाल कम स्टीप चिन्हाटी, बकेलबास 700 114 फोन : 033-25530434
- सी.एम्.ए.सी. कॉम्प्लेक्स, मातीगँव, मुंबई 400 781 023 फोन : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार	मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : शर्मिला उपाध्याय	मुख्य व्यवहार प्रबंधक : रीतम मल्लिक



# चावल



जमाल

मदन



2

एक दिन जमाल के घर कोई नहीं था।  
मदन उसके घर खेलने के लिए आया हुआ था।





उन दोनों को ज़ोर से भूख लग रही थी।  
रसोई में कुछ भी पका हुआ नहीं था।







उनको खाने के लिए कुछ नहीं मिला।  
दोनों सोचने लगे कि क्या बनाया जाए।



6

मदन ने कहा कि चावल बनाते हैं।  
जमाल को भी यह बात पसंद आ गई।



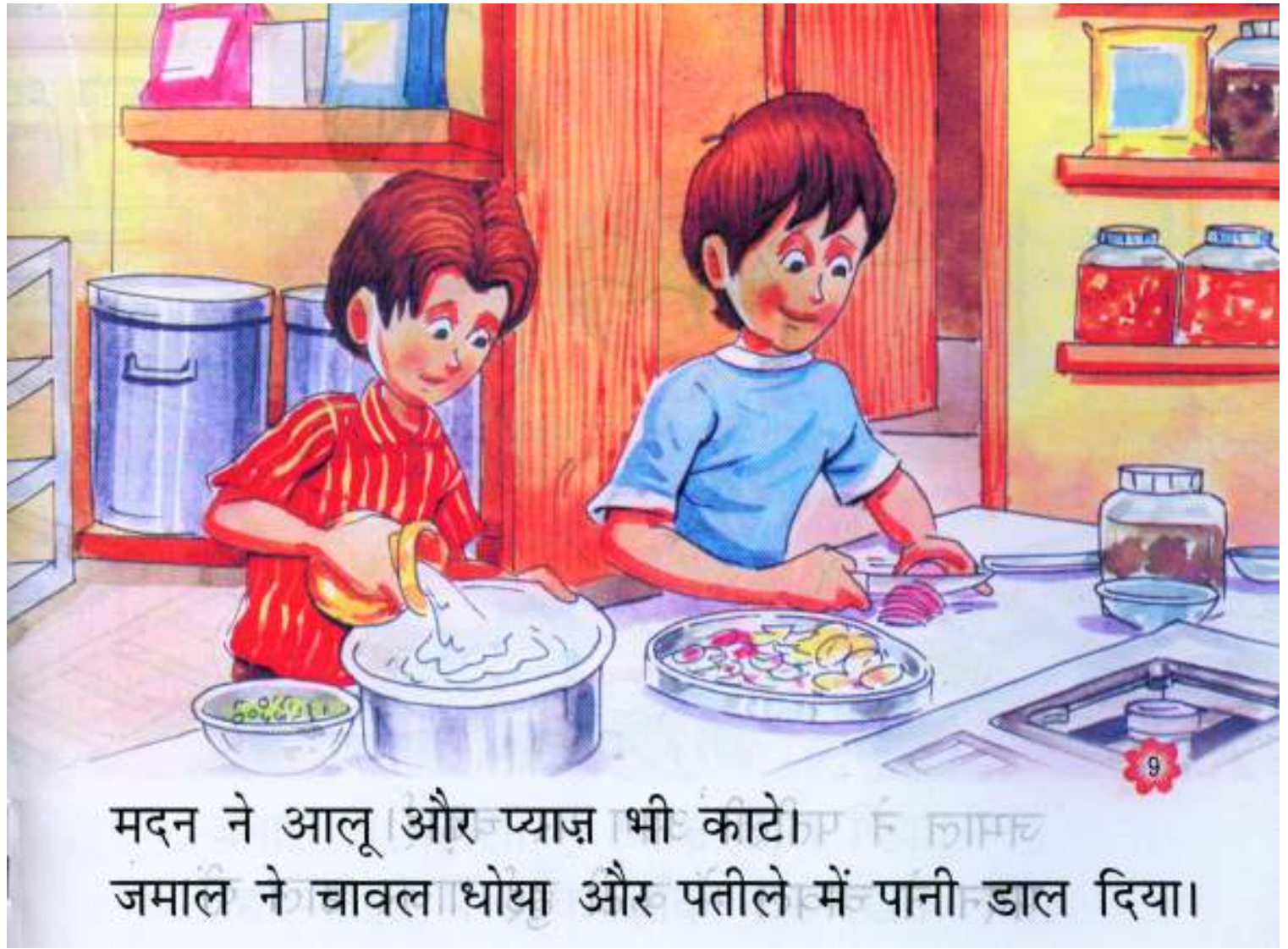


जमाल ने ऊपर चढ़कर चावल निकाला।  
उसने ढेर सारा चावल पतीले में डाल दिया।



मदन ने लाल-लाल गाजर छीली और काटी।  
जमाल ने हरी-हरी मटर छीली।





मदन ने आलू और प्याज़ भी काटे।  
जमाल ने चावल धोया और पत्तीले में पानी डाल दिया।



10

जमाल ने पतीली आग पर चढ़ाई।  
मदन ने चावल में कटी हुई गाजर डाल दीं।





जमाल ने पतीली में प्याज़ डाल दिया।  
वह पतीली में झाँक-झाँक कर देखने लगा।



12

मदन ने देखा कि पानी उबलने लगा था।  
उसने चावल में थोड़ी-सी हल्दी मिला दी।





13

दोनों पीले-पीले चावल को उबलता हुआ देखते रहे।  
मदन ने चावल निकालकर जमाल को चखाया।



14

जमाल को चावल कच्चा लगा।  
उन्होंने चावल को और उबाला।





दोनों चावल खाने बैठे।

मदन ने ऊपर का चावल लिया जमाल ने नीचे का।



मदन के चावल पीले-पीले थे।  
जमाल के चावल काले-पीले थे।





2076



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बगुना-सेट)  
978-81-7450-877-5



पढ़ना है समझना

# मौसी के मोज़े





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, स्मरिका वशिष्ठ, सोमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - जॉएल गिल

संज्ञा तथा आवरण - निधि बाभवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आधार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर संजुला साधु, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वरुण; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, आमिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वाकंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुशो नुरहान हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, विंगतर, जयपुर।

80 बी.एस.एन. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में स्वस्थ, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा चेकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, कथुन 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-878-2

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### समाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनें, फोटोकॉपीकरण, डिजिटल अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा इसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस, श्री लक्ष्मि मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फोर्ट रोड, दली एम्बेडमेंट, लोखंडेकर, बंगलाबनी III ब्लॉक, बंगलूर 560 085 फ़ोन : 080-26725740
- नवभवन टाउट ब्लॉक, डाकघर नवभवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.इ.एन.सी. कैम्पस, विक्टर, धनकुल बस स्टॉप पच्छिमी, कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454
- सी.इ.एन.सी. कॉम्प्लेक्स, मालागुन, पुणे 411 001 फ़ोन : 020-26748609

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार मुख्य उत्प्रेरण अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : सुजोता उम्याल मुख्य उत्प्रेरण प्रबंधक : योतम गुरुजी

# मौसी के मोड़े



मौसी



मुनमुन



नानी





2

एक दिन मौसी नानी से मोज़े बनाना सीख रही थीं।  
दोनों आँगन में चारपाई डाल कर बैठ गईं।  
मुनमुन चारपाई के नीचे लेटी हुई थी।



3

उन दोनों के पास खूब सारी ऊन और सलाइयाँ थीं।  
नानी ने अपने घुटनों पर नीली ऊन की लच्छी चढ़ाई।  
मौसी ने अपने घुटनों पर पीली ऊन की लच्छी चढ़ाई।





4

नानी ने हाथ घुमा-घुमा कर नीले रंग का गोला बनाया।  
मौसी ने हाथ घुमा-घुमा कर पीले रंग का गोला बनाया।  
मुनमुन ऊन के गोलों को ध्यान से देख रही थी।



नानी ने मौसी को फंदे डालकर दिए।  
मौसी ने मोजे बुनना शुरू किया।  
मुनमुन चुपके-से चारपाई पर चढ़ गई।





मौसी मोज़ा बुनने में लगी हुई थी।  
मुनमुन ने गोला नीचे लुढ़का लिया।  
वह गोले से खेलने लगी।



जब ऊन खिंची तो मौसी ने गोले की तरफ़ देखा।  
उन्होंने मुनमुन को गोले से अलग कर दिया।  
मौसी ने गोले को लपेट कर गोद में रख लिया।





8

मौसी फिर से मोज़ा बुनने लगी।  
मोज़ा थोड़ा-थोड़ा दिखने लगा था।  
नानी ने सिलाई पर गुलाबी ऊन के फंदे बना दिए।



मौसी वापस बुनाई करने लगीं।  
बुनाई में अब गुलाबी ऊन भी आ रही थी।  
गुलाबी गोला भी हिल रहा था।





मौसी की बुनाई में गुलाबी फूल दिखने लगा।  
मोज़ा काफ़ी लंबा लटकने लगा था।  
नानी ने अपने लिए एक सिलाई पर फंदे डाल लिए।



नानी ने भी बुनाई शुरू कर दी।  
मुनमुन फिर चुपके से ऊपर आ गई।  
वह नानी के गोले को नीचे ले जाने लगी।





12

नानी ने मुनमुन के मुँह से गोला छुड़ाया।  
उन्होंने मुनमुन को अपने कंधे पर बैठा लिया।  
मुनमुन उनके कान पर अपना मुँह रगड़ने लगी।



नानी ने मौसी का मोड़ा हाथ में लिया।  
उन्होंने मौसी को फंदे बंद करना सिखाया।  
मौसी ने उस मोड़े के फंदे बंद कर दिए।





14

मौसी का एक मोज़ा पूरा हो गया।  
वह अपना मोज़ा देखकर बहुत खुश हुई।  
नानी ने मुनमुन को नीचे उतार दिया।



मौसी अपना मोज़ा पहनकर देखने लगीं।  
मोज़ा मौसी के पैर में आया ही नहीं।  
मोज़ा तो छोटा पड़ गया।





मौसी ने मुनमुन को अपनी गोद में बैठाया।  
उन्होंने मोज़ा मुनमुन को पहना दिया।  
मोज़ा मुनमुन को आ गया।



2077



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)



# मेरे जैसी



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, तुलतुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, खेनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - जॉएल गिल

सज्जा तथा आवरण - निधि वाधवा

डि.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जम्मिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वचंद, टीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शंभरम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुरज्जह हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 बी.एस.एम. पेपर फस मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मर्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, बी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, सैफ्ट-वूड,  
मयपुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)

978-81-7450-879-9

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक को पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को प्रतिलिपि बनाना, प्रसारित करना, या किसी भी प्रकार से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 109 फोर्ट रोड, इली एक्सप्रेसवे, होमटेकरो, बनारसरोड III मंजूर, बंगलूर 560 085  
फोन : 089-26725740
- स्वतंत्र ट्रस्ट भवन, इंदिरा नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541440
- सी.इन्फो.सी. कैम्प, निकट: धनकुल का स्टॉप चिह्न, कोलकाता 700 114  
फोन : 033-25530454
- सी.इन्फो.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीपर्व, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार  
मुख्य संपादक : शैलज उन्पल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यापार अधिकारी : शैलज मंगुली



# मेरे जैसी



बुआ



दीपा



रानी



मम्मी



2

एक दिन रानी की बुआ उसके घर आई।  
बुआ साथ में अपनी छोटी-सी बेटी को भी लाई।  
उनकी बेटी का नाम दीपा था।





रानी ने दीपा को अपनी गोद में ले लिया।  
रानी दीपा को खिलाने लगी।  
दीपा सिर्फ एक साल की थी।



4

रमा भी वहाँ आ गई।  
वह भी रानी के साथ खेलने लगी  
रमा और रानी ने दीपा को खूब खिलाया।





बुआ बोलीं कि दीपा रानी जैसी दिखती है।  
मम्मी भी बोलीं कि दीपा रानी जैसी दिखती है।  
रानी दीपा को गौर से देखने लगी।



रानी ने दीपा को बिस्तर पर बैठाया।  
उसने दीपा की बाँह से अपनी बाँह मिलाकर देखी।  
उसे दीपा की बाँह पतली और अपनी बाँह मोटी लगी।





रानी ने दीपा का मुँह खोला।  
वह दीपा के दाँत ढूँढ़ने लगी।  
दीपा के मुँह में चार ही दाँत थे और रानी के बहुत सारे।



8

रानी ने अपने पैर दीपा के पैरों से मिलाए।  
दीपा के पैर छोटे थे और रानी के बड़े।  
दीपा के पैर पतले थे और रानी के मोटे।





रानी ने अपनी उँगलियाँ दीपा की उँगलियों से मिलाई।  
दीपा की उँगलियाँ छोटी थीं और रानी की बड़ी।  
दीपा की उँगलियाँ पतली थीं और रानी की मोटी।



10

रानी ने अपने नाखून दीपा के नाखून से मिलाए।  
दीपा के नाखून बहुत नरम और गुलाबी थे।  
रानी के नाखून थोड़े सख्त और कम गुलाबी थे।





रानी ने अपनी नाक दीपा की नाक से मिलाई।  
रानी अपनी नाक छू-छूकर देख रही थी।  
वह नाक मिला कर देख नहीं पाई।



12

रानी ने दीपा को गोद में उठाया।  
वह उसे लेकर बुआ के पास गई।  
वहाँ रानी की मम्मी भी थीं।





रानी ने बुआ से कहा कि दीपा उसके जैसी नहीं है।  
रानी को दीपा अपने जैसी नहीं लगी।  
वह बोली कि दीपा मेरे जैसी नहीं है।



माँ ने रानी को शीशा लाने के लिए कहा।  
रानी शीशा लाने अंदर गई।  
वह हरे किनारे वाला शीशा लेकर लौटी।





माँ ने रानी से शीशे में देखने के लिए कहा।  
उन्होंने दीपा को भी शीशे के सामने खड़ा कर दिया।  
रानी अपना और दीपा का चेहरा शीशे में देखने लगी।



रानी ने ध्यान से शीशे में देखा।  
उसे दीपा अपने जैसी ही लगी।  
वह सिर हिलाकर बोली कि दीपा मेरे जैसी है।





2078



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पढ़ना है समझना

# कूदती जुशबें





**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSV

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, तुलतुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**चित्रांकन** – कृतिका एस. नरुल्ला

**संज्ञा तथा आवरण** – निधि बाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर** – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर बसुध कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुल मधुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीद अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जम्मिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वचंद, रोडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुजहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द गार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मधुग 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बद्ध-सैट)

978-81-7450-880-5

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छाप्य तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रॉडिग, रिप्रॉड्यूसिबल अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अरविन्द गार्ग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 109 पीट रोड, इली एक्सप्रेसवे, रोम्बोकेरे, बंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नववीथन टावर भवन, डाकघर नववीथन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.इन्फोसू.सि. कैम्प, लिफ्ट: धनंजय वस स्टॉप चिन्नट्टी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.इन्फोसू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगँव, पुणे 411 001 फोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार मुख्य सम्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : शोभा जपाल मुख्य व्याख्यान प्रबंधक : गौतम मंगुलसी

# कूदती जुराबें



माधव





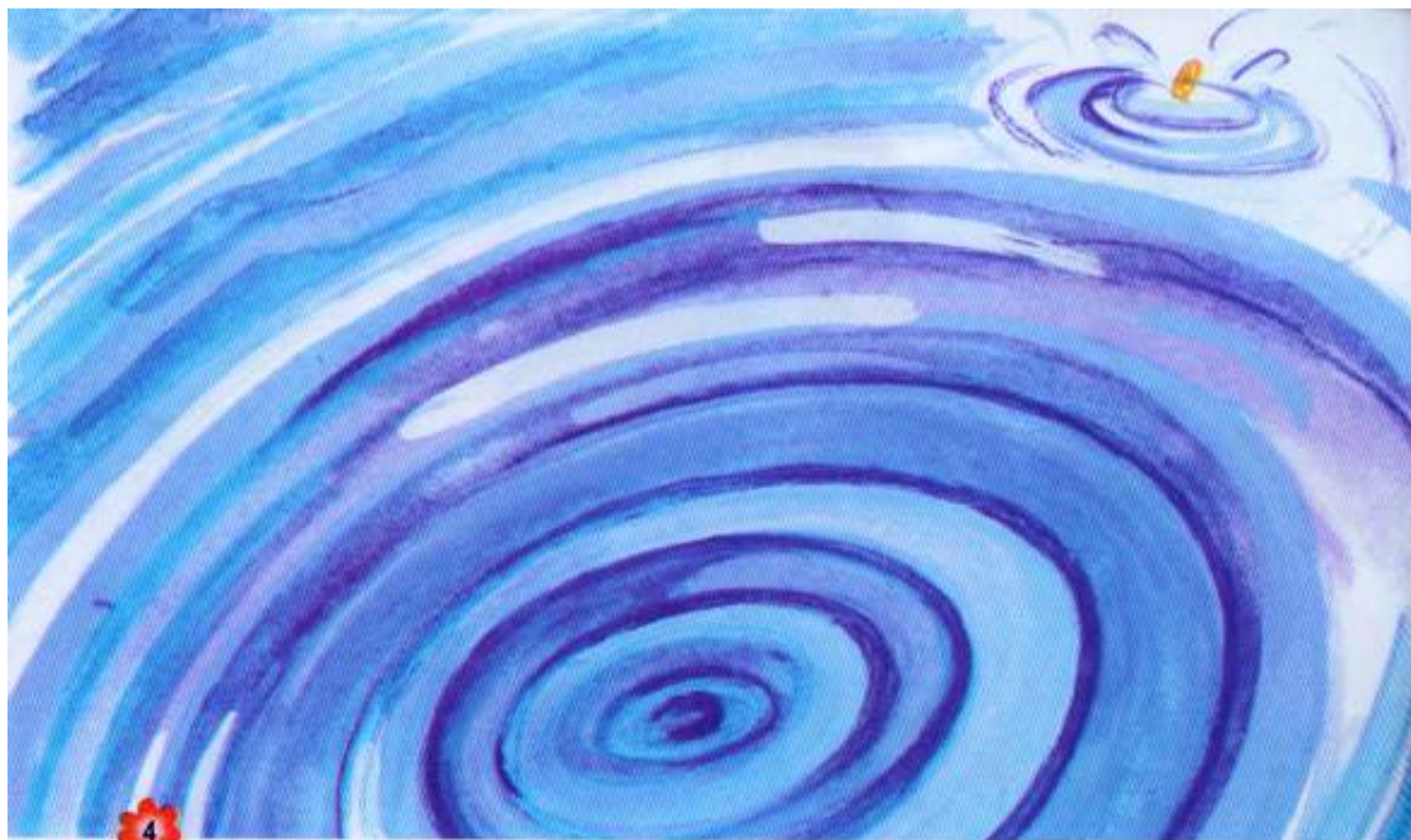
एक दिन माधव सुबह-सुबह तालाब पर रुक गया।  
तालाब का ठंडा-ठंडा पानी उसे बहुत पसंद है।  
उसे तालाब में डुबकियाँ लगाने में बहुत मज़ा आता है।



3

माधव ने जूते और जुराबें उतारीं और एक तरफ़ रख दीं।  
उसने अपने कपड़े भी उतार कर एक तरफ़ रख दिए।  
वह पानी में पैर डाल कर तालाब के किनारे बैठ गया।





4

बहुत देर माधव तालाब में छोटे-छोटे पत्थर फेंकता रहा।  
उसे पत्थर से तालाब में बनने वाले गोले भी पसंद हैं।  
वह ऐसे गोले बनाने तालाब पर कई बार आता है।



माधव की नज़र तालाब की मछलियों पर पड़ी।  
उसने पत्थर फेंकना बंद कर दिया।  
माधव गौर से मछलियों को देखने लगा।





6

माधव ने काली मछली देखी।  
माधव ने सुनहरी मछली देखी।  
उसने चमकीली मछली भी देखी।



वह झुककर मछलियों को पास से देखने लगा।  
तालाब में बहुत सारी मछलियाँ थीं।  
कुछ मछलियाँ छोटी-सी थीं और कुछ बड़ी।





8

माधव मछलियों को पास बुलाना चाहता था।  
उसने तालाब में रोटी के टुकड़े डाले।  
रोटी खाने के लिए खूब सारी मछलियाँ आ गईं।



माधव ने मछलियों को पकड़ने की कोशिश की।  
सारी मछलियाँ भाग गईं।  
एक भी मछली हाथ नहीं आई।





10

माधव ने मछली पकड़ने के लिए डुबकी लगा दी।  
उसने हाथ बढ़ाकर मछलियों को पकड़ने की कोशिश की।  
पर मछलियाँ दूर भाग गईं।

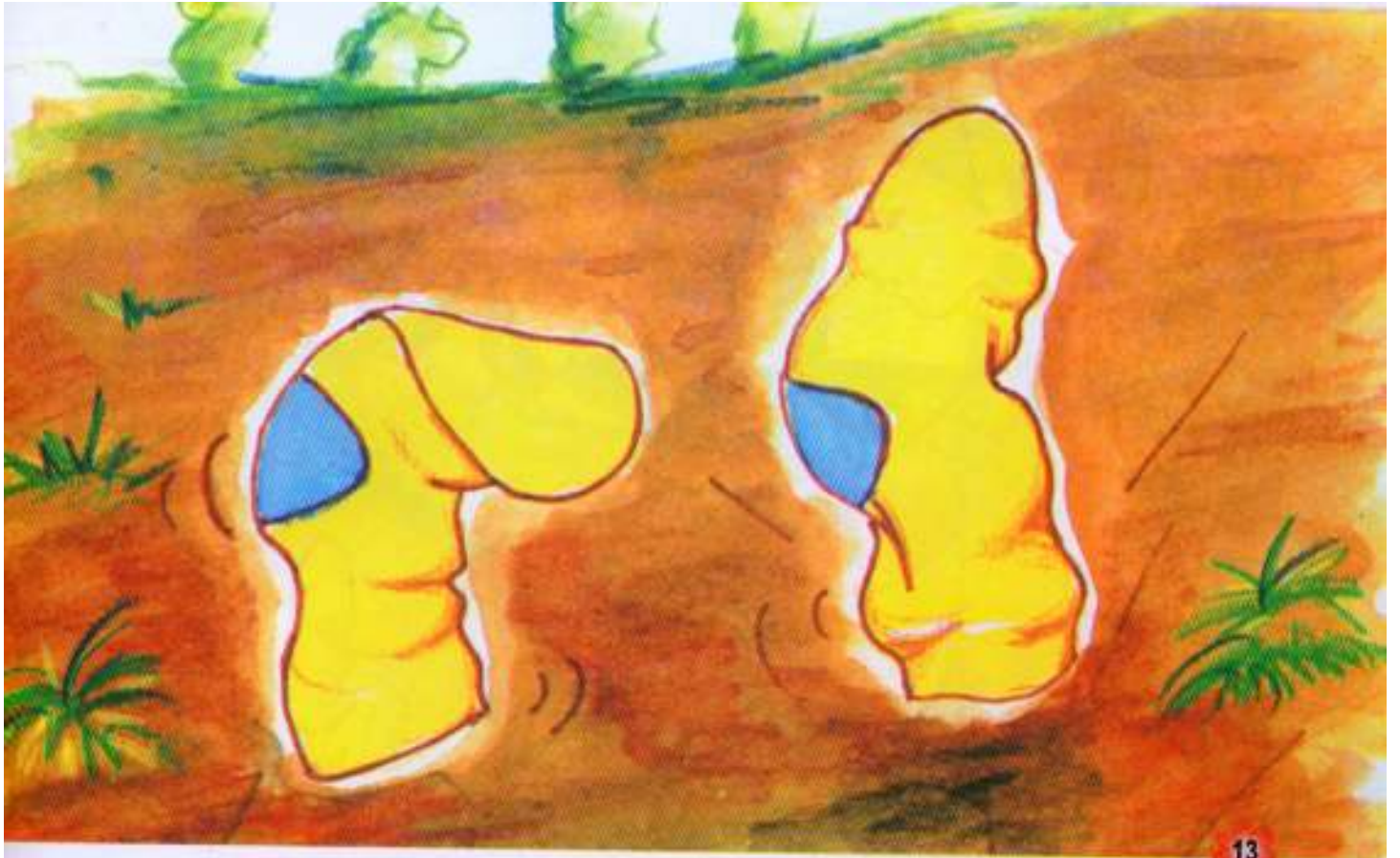


माधव को एक तरकीब सूझी।  
उसने सोचा कि वह जुराबों में मछलियाँ पकड़ लेगा।  
वह अपनी जुराबें उठाने किनारे पर आया।





माधव की जुराबें किनारे पर नहीं थीं।  
उसने अपने कपड़े झाड़-झाड़ कर देखे।  
उसने जूते में भी देखा।



पर उसकी जुराबें किनारे पर नहीं थीं।  
माधव की जुराबें तो दूर मैदान में कूद रही थीं।  
उसकी नज़र कूदती जुराबों पर पड़ी।





माधव फ़ौरन तालाब से बाहर आ गया।  
वह कूदती जुराबों के पीछे भागा।  
जुराबें आगे-आगे कूदती रहीं।



माधव तेज़ी से ज़ुराबों के पीछे भागा।  
पर वह उनको पकड़ नहीं पाया।  
ज़ुराबें कूदती ही रहीं।

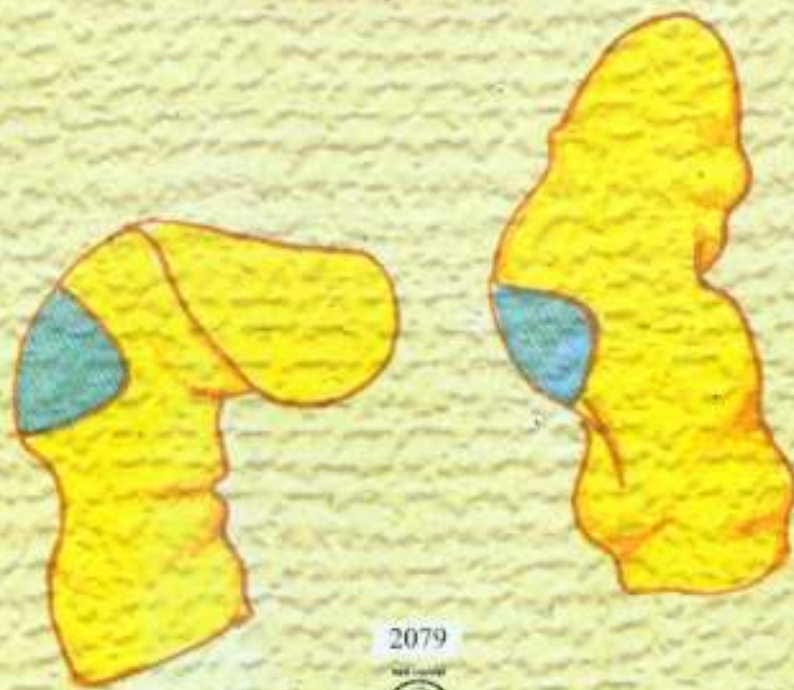




16

जुराबें एक झाड़ी में जाकर अटक गईं।  
उनमें से कुछ निकला।  
माधव उनको देखकर हँस पड़ा।

- ★ स्तर 1
- ★ स्तर 2
- ★ स्तर 3
- ★ स्तर 4



2079

नव शिक्षा अभियान



एन सी ई आर टी ई

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-मैट)

978-81-7450-880-5



# तालाब के माँजे



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कृतिका एस् नरुला

सज्जा तथा आवरण - निधि बाधक

डी.टी.पी. अपरेटर - अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर बसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामबन्धु शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंगुना माथुर, अध्यक्ष, सिडिंग  
डवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर करीदा अय्युल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अभ्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वचंद, रोडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस,  
मुंबई; सुश्री नुवहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिल्ली, जयपुर।

80 जी.एस.एस. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा चंकन प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए,  
मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)  
978-81-7450-881-2

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रिंटिंग, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562798
- 108, 109 गेट रोड, इन्वी एक्स्प्रेसवे, होमसेक्टर, कन्याकुमारी III स्ट्रेज, बंगलुरु 560 035  
फ़ोन : 080-26725740
- नववीथन टाउट भवन, डा.बाबू नववीथन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.इन्फ्यू सी. कैम्प, लिफ्ट: धनकुला बस स्टॉप पश्चिमी, कोलकाता 700 134  
फ़ोन : 033-25530454
- सी.इन्फ्यू सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगौन, मुंबई 400 021 फ़ोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार मुख्तियार  
मुख्य संपादक : श्वेता उषा मुख्तियार  
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौरव गर्गुली



# तालाब के मज़े



काजल



माधव



2

काजल और माधव के गाँव में एक तालाब था।  
दोनों तालाब पर रोज़ खेलने जाते थे।  
उन्हें तालाब का पानी बहुत अच्छा लगता था।





एक दिन वे दोपहर को तालाब पर पहुँचे।  
वहाँ बहुत सारे बगुले आए हुए थे।  
तालाब सफ़ेद बगुलों से भरा हुआ था।



काजल और माधव इतने सारे बगुले देखकर खुश हो गए।  
दोनों कूद-कूद कर बगुलों के बीच भागे।  
दोनों ने बगुलों को पकड़ने की कोशिश भी की।





अगले दिन मोनी भी उनके साथ तालाब पर आ गई।  
मोनी बगुलों पर भौंकने लगी।  
काजल ने उसको प्यार से चुप कराने की कोशिश की।



लेकिन मोनी भौंकती ही रही।  
वह दौड़कर बगुलों पर झपटी।  
काजल ने उसे गोद में उठा लिया।





माधव और काजल उसको घर छोड़ने चल दिए।  
तालाब के उस तरफ़ उन्हें कुछ घोंसले दिखे।  
बगुलों ने तालाब के किनारे के पेड़ों पर घोंसले बनाए थे।



घोंसलों में तिनके, घास और पंख लगे हुए थे।  
बगुलों के घोंसलों में अंडे भी थे।  
काजल और माधव दूर से अंडों को देखते रहे।





दोनों रोज़ अंडों को देखने लगे।  
हर एक घोंसले में तीन या चार अंडे थे।  
अंडे हल्के नीले रंग के और छोटे-बड़े थे।





थोड़े दिनों बाद कुछ अंडों का रंग मटमैला हो गया।  
उनमें से छोटे-छोटे बगुले निकल आए।  
छोटे बगुले आवाज़ निकालते और पंख फड़फड़ाते थे।





बगुले अपनी चोंच में उनके लिए खाना लेकर आते।  
वे बच्चों की चोंच में खाना डालते थे।  
काजल और माधव को यह देखने में मज़ा आता था।



12

छोटे बगुले अब घोंसलों से बाहर भी आते थे।  
तालाब के किनारे खूब सारे छोटे-छोटे बगुले दिखने लगे।  
काजल और माधव छोटे बगुलों के पीछे भागते।





13

धीरे-धीरे छोटे बगुले बड़े होने लगे।  
वे बड़े बगुलों के साथ तालाब में भी बैठने लगे।  
वे तालाब में मछली और मेंढक भी पकड़ने लगे थे।



14

एक दिन सारे बगुले वापस अपने घर चले गए।  
काजल और माधव ने सबको उड़कर जाते हुए देखा।  
उन्हें पता था कि बगुले अगले साल फिर आएँगे।





उस दिन मोनी फिर तालाब पर आ गई।  
काजल ने उसे भगाया नहीं।  
मोनी उन दोनों के साथ ही घूमती रही।



16

तभी उनकी नज़र तालाब में नहाती भैंसों पर गई।  
काजल और माधव भैंसों पर जाकर बैठ गए।  
दोनों ने भैंसों की पीठ पर चॉक से अपना नाम भी लिखा।



- स्तर 1
- स्तर 2
- स्तर 3
- स्तर 4



2080



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बगुना-सैट)  
978-81-7450-881-2

# बबली का बाजा



पढ़ना है समझना





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि वाधवा

सज्जा तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, जंशूल गुप्ता, सीमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक खजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शक्नम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जबपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में स्वीकृत, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री आश्विन शर्मा,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए,  
मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)  
978-81-7450-882-9

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोचकता की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीन, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग करने से इसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. केम्प, श्री अश्विनी मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 पीरट रोड, हंगी एमार्टेस, होबोकेरी, बंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725749

गणेशवन टुस, भवन, डाकघर नवसेवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-22541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैम्प, निकट, भवनल वन स्टॉप पंक्ति, कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मराठीवा, मुंबई 400 021 फोन : 0161-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजाकुमार

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार

मुख्य संपादक : शर्मा उषा

मुख्य व्यापार प्रबंधक : शीतल गंगुली

# बबली का बाजा



पापा



बबली



मम्मी



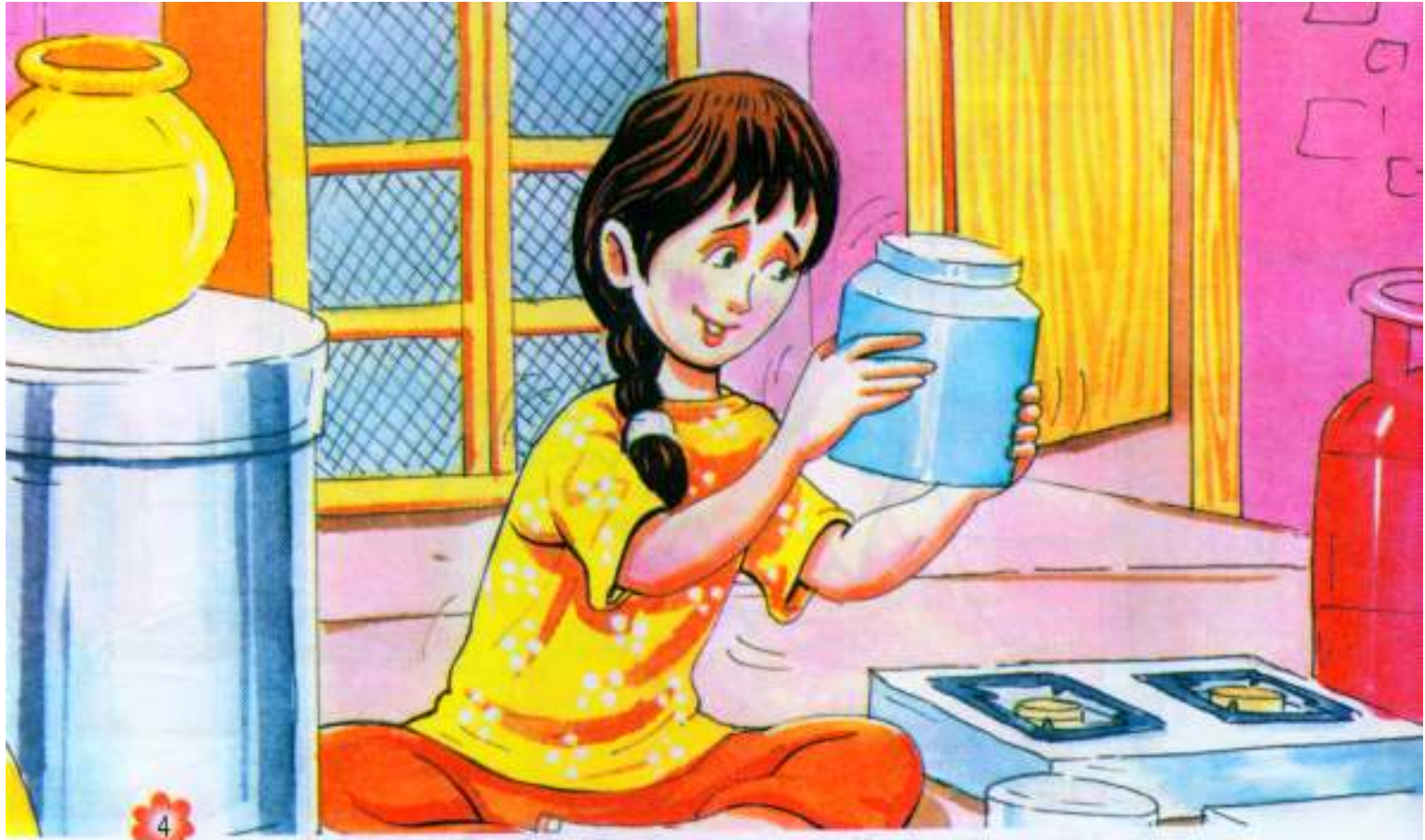


एक दिन बबली के घर में सफ़ाई हो रही थी।  
सारे घर का सामान आँगन में निकला हुआ था।  
रसोई का सामान भी आँगन में ही था।



रसोई के सामान में बहुत सारे डिब्बे निकले थे।  
बबली डिब्बों के ढेर के पास बैठ गई।  
बबली ने अपने लिए एक नीला डिब्बा उठा लिया।





बबली ने डिब्बे को हिलाकर देखा।  
डिब्बा हिलाने पर छन्न-छन्न की आवाज़ आई।  
बबली ने डिब्बे को खूब बजाया।



5

बबली सारे घर में डिब्बा बजाती घूमी।  
बबली सोचने लगी कि डिब्बे में क्या होगा।  
उसने डिब्बा खोलकर देखा।





डिब्बे में चावल के दाने थे।  
बबली ने डिब्बे को बंद कर दिया।  
पहले की तरह उसे बजाती रही।



बबली डिब्बे को अपने साथ लेकर सोई।  
रात को बबली के बिस्तर पर एक चूहा आया।  
चूहा डिब्बे के सारे चावल खा गया।



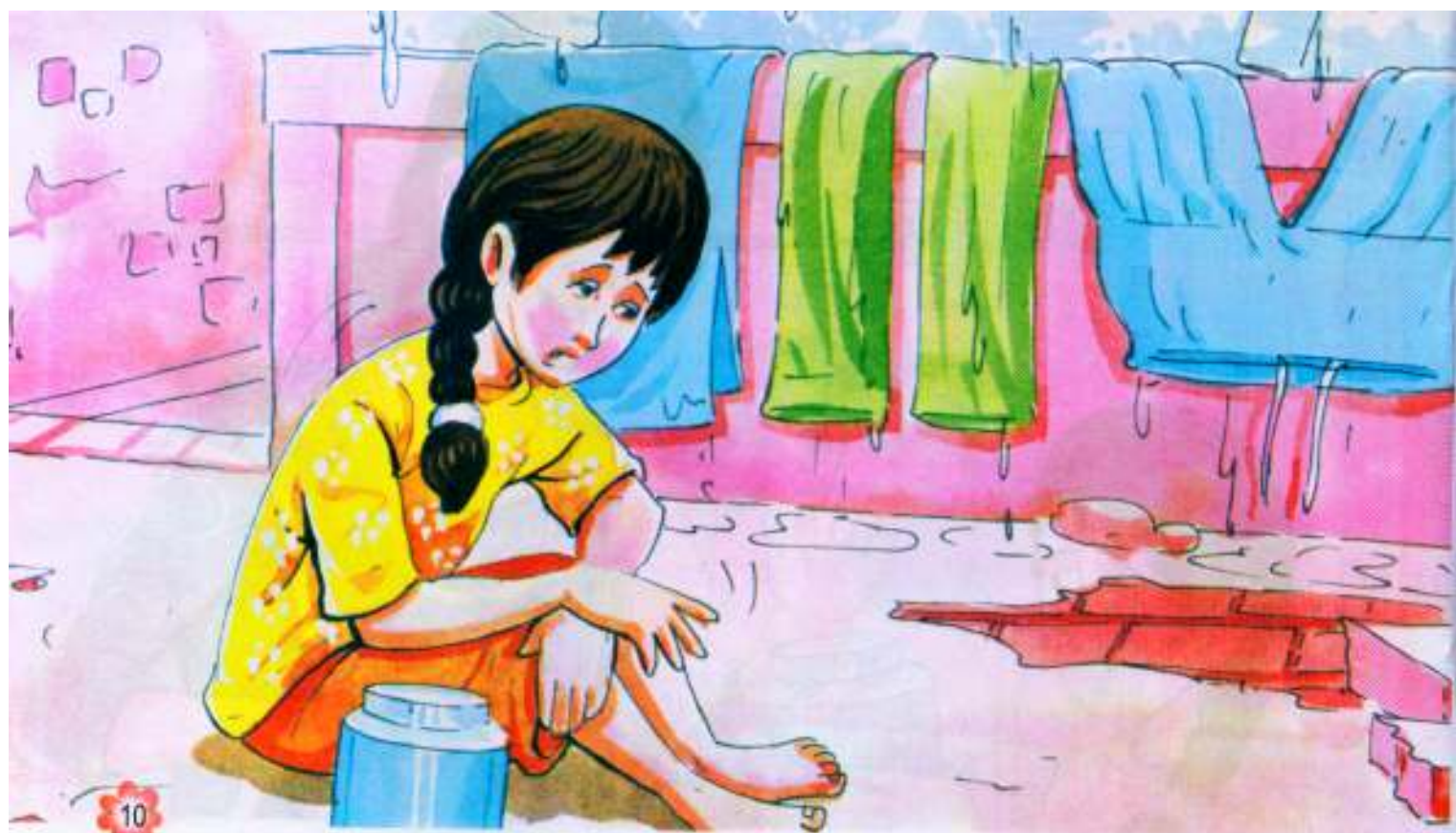


बबली ने सुबह देखा कि डिब्बा खुला पड़ा था।  
चावल के दाने गायब थे।  
उसने माँ से और चावल माँगे।



माँ ने चावल देने से मना कर दिया।  
माँ बोली चावल खेलने की चीज़ नहीं है।  
चावल तो खाने के लिए होता है।





बबली बहुत उदास हो गई।  
वह छत पर जाकर बैठ गई।  
वहाँ धुले हुए कपड़े सूख रहे थे।



बबली की नज़र सलवार पर पड़ी।  
सलवार का नाड़ा लटक रहा था।  
बबली को एक तरकीब सूझी।





12

बबली ने नाड़ा खींचकर निकाल लिया।  
उसने नाड़े का एक सिरा डिब्बे से बाँध दिया।  
नाड़े का दूसरा सिरा डिब्बे के दूसरी तरफ बाँध दिया।



13

डिब्बे से एक ढोलक बन गई।  
बबली ने ढोलक अपने गले में पहन ली।  
वह ढोलक बजा-बजा कर छत पर नाची।





बबली ढोलक बजाते हुए नीचे उतरी।  
नीचे अभी भी सफ़ाई हो रही थी।  
सामान अभी भी आँगन में ही पड़ा हुआ था।



माँ डिब्बों को साफ़ कर रही थी।  
पापा डिब्बों को अंदर ले जाकर रख रहे थे।  
जीत सामान में कुछ ढूँढ़ रहा था।





16

सारे लोग बबली की ढोलक की आवाज़ सुनने लगे।  
ढप-ढप-ढप-ढप-ढप-ढप-ढप  
बबली गाना भी गा रही थी।



2081



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING





पढ़ना है समझना

# झूला



प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि वाधवा

सज्जा तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशासिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजय शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाखेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महत्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरुण; प्रोफेसर फरीदा अजुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वचंद, रोडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. राधनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिवंगत, जयपुर।

80 बी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, सहारन-ए,  
महाराष्ट्र 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-सैट)

978-81-7450-883-6

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। **बरखा** की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। **बरखा** बच्चों को स्वयं की खुरशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। **बरखा** पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। **बरखा** से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक **बरखा** को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संश्लेषण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री जलविद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 109 फोर्ट रोड, हंसी एक्सप्रेसवे, टॉपबेकरी, बाराबंकी III स्टोन, बंगलूर 560 085  
फ़ोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- श्री.बल्लभू.सी. कैपस, निम्बट: धारवाड कम स्टॉक पन्डरी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- श्री.बल्लभू.सी. कॉम्प्लेक्स, मल्लिकार्जुन, गुडलाडी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार	मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : रंजित जयल	मुख्य व्यापार अधिकारी : रीतम गुप्ता



# झूला



बबली

जीत



2

एक दिन जीत और बबली टायर से खेल रहे थे।  
उनके पास एक काले रंग का चौड़ा-सा टायर था।  
दोनों अपनी-अपनी डंडी से उसे चला रहे थे।





3

बबली बोली कि वह टायर बहुत तेज़ दौड़ाती है।  
गोल-गोल दौड़ता हुआ टायर कितना अच्छा लगता है।  
जीत बोला कि उसे तो झूले पर मज़ा आता है।



4  
यह सुनकर बबली का मन झूला झूलने को करने लगा।  
जीत को भी झूला झूलने की इच्छा हुई।  
दोनों मिलकर झूला ढूँढ़ने लगे।





दोनों ने दूर-दूर तक झूला ढूँढ़ा।  
पर झूला कहीं नहीं मिला।  
वे सोचने लगे कि क्या करें।



उस मैदान में बहुत सारे पेड़ थे।  
कई पेड़ों की डालियाँ बहुत नीचे आ गई थीं।  
दोनों को एक तरकीब सूझी।





जीत और बबली डाली पर लटक कर झूलने लगे।  
दोनों को खूब मज़ा आया।  
लेकिन वे ज़्यादा देर तक नहीं झूल पाए।



8

बबली के दोनों हाथ छिल गए थे।  
जीत की हथेलियों में जलन हो रही थी।  
दोनों हाथ झाड़कर नीचे बैठ गए।





वहाँ एक लोहे का पाइप लगा हुआ था।  
बबली की नज़र उस पाइप पर पड़ी।  
उसने जीत को वह पाइप दिखाया।



जीत और बबली भागकर पाइप के पास पहुँच गए।  
दोनों पाइप से लटककर झूलने लगे।  
दोनों को खूब मज़ा आया।





लेकिन जीत और बबली ज़्यादा देर नहीं झूल पाए।  
जीत के हाथ में दर्द हो रहा था।  
बबली भी हाथ पकड़कर बैठ गई।



12

बबली को एक और तरकीब सूझी। वह बोली कि अपने टायर से झूला बना लेते हैं। उसमें बैठकर झूला झूलेंगे।





जीत को यह बात पसंद आ गई।  
वह बोला कि वह टायर पेड़ पर लटकाएगा।  
बबली बोली की वह टायर को लटकाएगी।



बबली ने टायर अपने हाथ में ले लिया।  
जीत ने उससे टायर छीनने की कोशिश की।  
दोनों में छीना-झपटी होने लगी।





बबली ने टायर खींचा और ज़ोर से हवा में उछाल दिया।  
टायर काफ़ी दूर तक उछला।  
उछला हुआ टायर एक पेड़ की डाली पर लटक गया।



16

जीत दौड़कर टायर के पास पहुँच गया।  
वह उछलकर टायर में बैठ गया।  
बबली टायर और जीत को धीरे-धीरे झुलाने लगी।





2082



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

# मिली के बाल



पढ़ना है समझना





**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सौम्य कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक -** लतिका गुप्ता

**छिद्रांकन -** कनक शशि

**सज्जा तथा आवरण -** निधि वाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर -** अर्चना गुप्ता, वीरम चौधरी, अंशुल गुप्ता

**आधार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक चावपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरुही; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वचंद, रोडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुवहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द खन्, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडोस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मधुप 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धा-सेट)

978-81-7450-884-3

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञात्मक लाभ मिलेंगे। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिप्रोडिग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद खन्, नई दिल्ली 110 016, फ़ोन : 011-26562708
- 108, 109 गेट रोड, गैली एक्सप्रेसवे, होमटेकर, बनारसपुरी III ब्लॉक, बेलतुम 560 085  
फ़ोन : 080-26725740
- नवरीस टुल भवन, डाकघर नवरीस, जयपुरराज 300 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकुल बस स्टॉप पंजाबी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. बॉम्बेकैंपस, मालवेगॉल, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार	मुख्य उत्प्रेषण अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : शंकर ठाकुर	मुख्य व्यापार प्रबंधक : नीतेश रांगूनी

# मिली के बाल



मिली



मम्मी





2

मिली के बाल लंबे थे।  
मम्मी उसके बालों में दो चोटियाँ बनाती थीं।  
मम्मी को मिली के बाल चोटी में गुँथे हुए पसंद थे।



3

मम्मी मिली के बालों में रोज़ तेल लगाती थीं।  
वह तेल लगाकर रोज़ मिली की दो चोटियाँ बना देतीं।  
मिली को चोटी बनवाना पसंद नहीं था।





4

मिली को बाल खुले रखना पसंद था।  
उसे फैले-फैले बाल अच्छे लगते थे।  
वह उँगली से बालों के लच्छे बनाती रहती थी।



मम्मी चोटी गूँथतीं तो मिली परेशान हो जाती।  
वह बहुत कसकर चोटी गूँथती थीं।  
मिली को बहुत दर्द होता था।





6

मिली को लगता कि उसके बाल टूट जाएँगे।  
चोटी बनवाते समय मिली चिल्लाती थी।  
वह बार-बार मम्मी का हाथ हटाती।



7

मिली कई बार चोटी खोल ही देती थी।  
वह खुले बालों में घूमती रहती।  
मम्मी बहुत गुस्सा करती थीं।





मम्मी फीता बाँधतीं तो मिली फीता खोल देती।  
वह फीते के धागे निकाल कर हवा में उड़ाती।  
मिली फीते से फूल भी बनाती।



मम्मी चिमटी लगातीं तो मिली चिमटी निकाल देती।  
मिली चिमटी का कीड़ा बनाकर खेलती रहती।  
वह चिमटी के कीड़े में फीता बाँधकर भागती फिरती।





10

मिली बाल खुले रखना चाहती थी।  
मम्मी हमेशा चोटी बनाना चाहती थीं।  
दोनों का हमेशा झगड़ा होता था।



मिली मम्मी से परेशान थी ।  
मम्मी मिली से परेशान थीं।  
दोनों एक-दूसरे से परेशान थीं।





12

एक दिन मिली सुबह से गायब थी।  
मिली के पापा भी घर पर नहीं थे।  
मम्मी ने दोनों को बहुत ढूँढ़ा।



मिली पापा के साथ बाज़ार गई थी।  
बाज़ार में काफी भीड़ थी।  
वे दोनों एक दुकान पर गए।





मिली और पापा दोपहर में बाज़ार से लौटे।  
मिली मम्मी के पास भागकर गई।  
वह बोली कि लो गूँथ लो मेरी चोटियाँ।



मिली ने बाल छोटे-छोटे कटवा लिए थे।  
मम्मी ने मुस्कराकर उसके बालों में हाथ फेरा।  
उन्होंने मिली को गले लगा लिया।





अगले दिन मम्मी मिली के बालों के लिए कुछ लाई।  
वह रोज़ की तरह मिली के बालों में तेल मलने बैठ गई।  
मिली ने भी आराम से तेल मलवा लिया।



2083



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



# तीसिया का सपना



**प्रथम संस्करण :** अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, तुलसुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, स्मरिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**चित्रांकन** – कनक शशि

**सज्जा तथा आवरण** – निधि वाघवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर** – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा पाल

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक नाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. राकनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुरहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में छपिका, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पेंकन प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-बैठ)  
978-81-7450-885-0

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुरशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोशमरा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में सज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, इली एक्स्प्रेसवे, होम्बोर्गे, बंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवसंकेत ट्रस्ट चान, डाकघर नवसंकेत, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.एन.ए.सी. कैम्पस, निकट; धनकर बस स्टॉप पच्छिमी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.एन.ए.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगँव, गुवहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार मुख्तियार अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : रजिता उपाध्याय मुख्तियार अधिकारी : रवींद्र शर्मा



# तोसिया का सपना



नानी



तोसिया



2

एक दिन तोसिया ने सपना देखा।  
तोसिया बहुत सपने देखती है।  
वह उठकर सपनों के बारे में बात भी करती है।





तोसिया को सपना आया कि दुनिया के सारे रंग उड़ गए हैं।  
कहीं कोई रंग नहीं बचा।  
उसने देखा कि सब कुछ सफ़ेद-सफ़ेद हो गया है।



तोसिया उठी और सपने को याद करने लगी।  
वह एकदम से घबरा गई।  
तोसिया सोचने लगी कि क्या सचमुच रंग गायब हो गए हैं।





तोसिया रसोई में गई।  
वहाँ बहुत सारे रंग-बिरंगे मसाले रखे हुए थे।  
लाल मिर्च, जीरा, हल्दी, धनिया, मेथी।



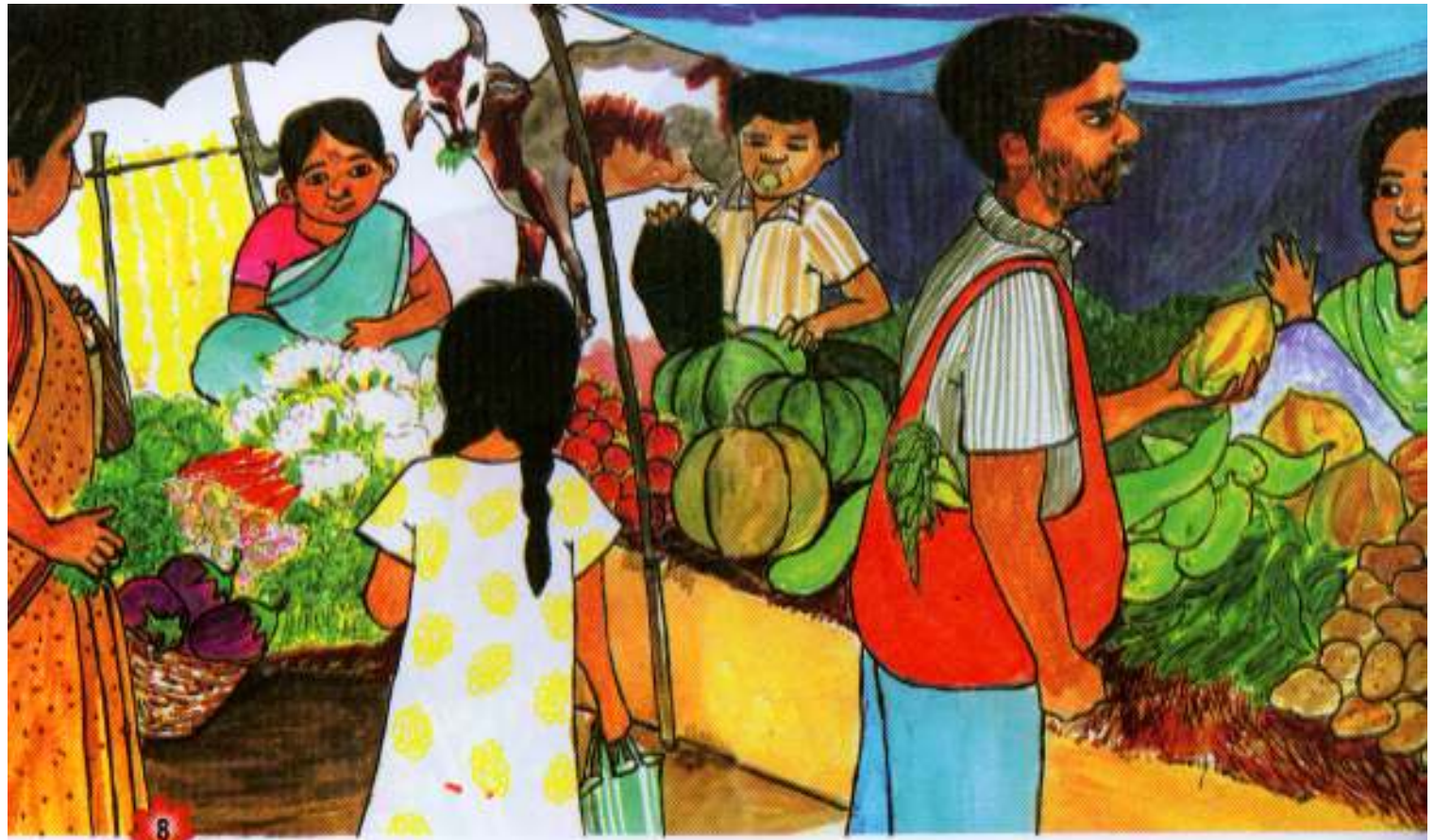
तोसिया उठकर बाहर बगीचे में गई।  
वहाँ रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे।  
गेंदा, चमेली, सदाबहार, गुलाब, सूरजमुखी।





7

तोसिया ने देखा कि उसके कपड़ों में रंग हैं।  
मम्मी पापा के कपड़ों में भी रंग हैं।  
घर में भी खूब सारे रंग दिख रहे थे।



तोसिया मम्मी के साथ बाज़ार चल पड़ी।  
वहाँ खूब सारी रंग-बिरंगी सब्ज़ियाँ थीं।  
गाजर, बैंगन, टमाटर, सेम, मटर।





बाज़ार में पतंग की दुकान भी थी।  
दुकान में खूब सारी रंग-बिरंगी पतंगें थीं।  
काली, पीली, नीली, हरी, नारंगी।



मम्मी चुन्नी की दुकान पर गई।  
वहाँ खूब सारी रंग-बिरंगी चुन्नियाँ थीं।  
गुलाबी, बैंगनी, फिरोज़ी, आसमानी, भूरी।





बाज़ार में गुब्बारेवाला खड़ा हुआ था।  
उसके पास खूब सारे रंग-बिरंगे गुब्बारे थे।  
नीले, पीले, हरे, लाल, गुलाबी।



12

तोसिया ने खूब सारे रंग देखे।  
वह खुश हो गई कि रंग गायब नहीं हुए हैं।  
वह रंगों को गिनने लगी।





तोसिया घर आकर दोपहर का सो गई।  
उसने उठकर देखा कि नानी की सहेलियाँ आई हुई हैं।  
उन सबके बाल सफ़ेद-सफ़ेद हैं।



तोसिया को एक बात याद आई।  
वह रात को नानी के साथ सोई थी।  
इसलिए सपने में सब सफ़ेद-सफ़ेद दिखा होगा।





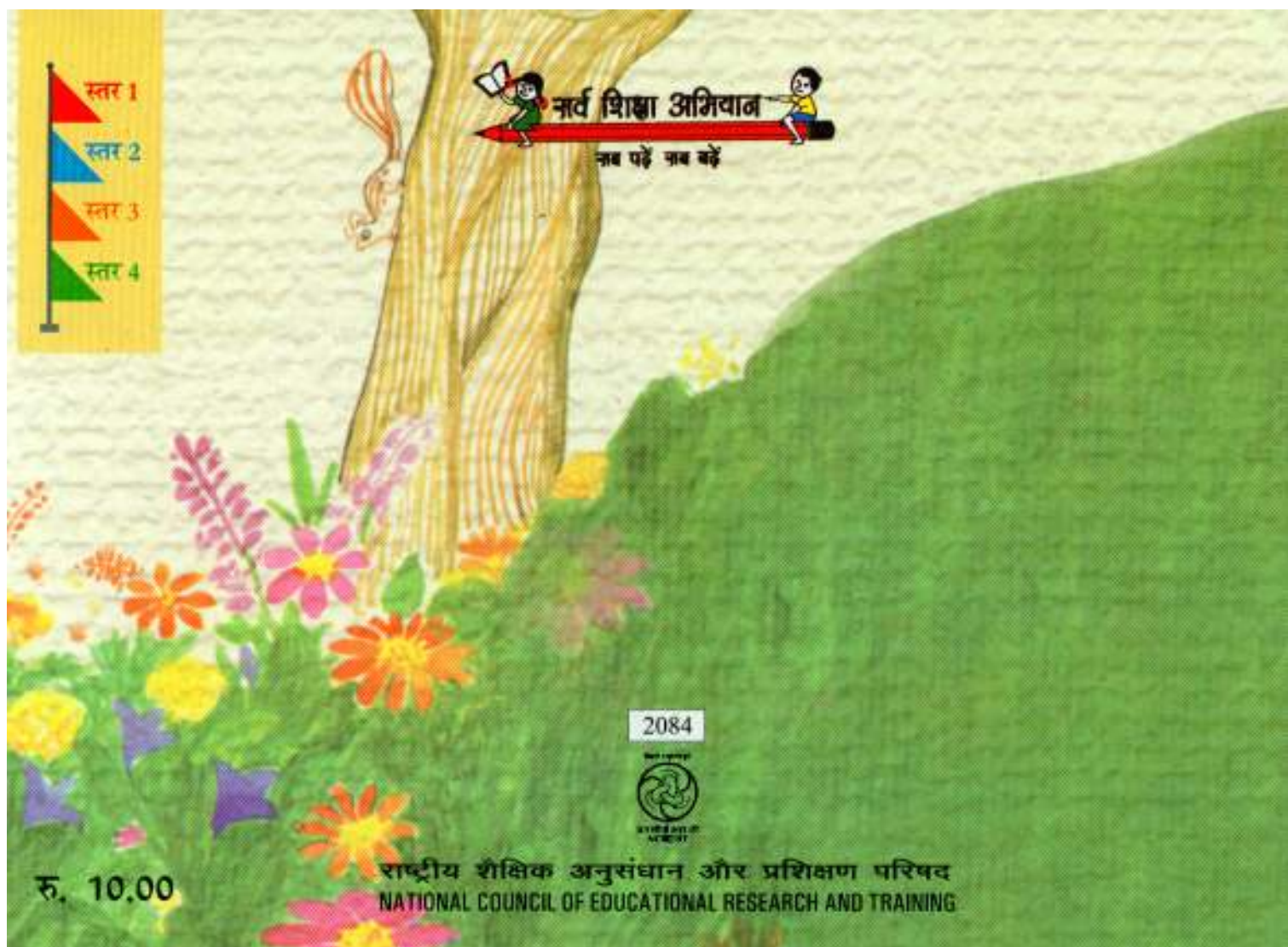
तोसिया नानी के बालों को गौर से देखने लगी।  
वह नानी के बालों को छू-छूकर देखने लगी।  
तोसिया सोचने लगी कि नानी के बाल सफ़ेद क्यों हैं।



16

उसने नानी से पूछा कि उनके बालों का रंग कहाँ गया।  
नानी बोलीं कि पहले उनके बाल भी काले थे।  
फिर उनके बालों का रंग तोसिया के बालों में चला आया।





# चाय



पढ़ना है समझना





**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक -** लतिका गुप्ता

**चित्रांकन -** निधि बाधवा

**सज्जा तथा आवरण -** निधि बाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर -** अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

**आधार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोग्रामिंग  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीटिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वाकर, रोडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एन.एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुनहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 जी.एस.एस. पैर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में प्रिंटिंग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा संकय प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए,  
मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-886-0 (बन्धन-मुद्र)

978-81-7450-886-7

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में सज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को ज्ञापन तथा ट्रेडपब्लिशिंग, मशीनी, फोटोकॉपी, रिप्रिंटिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग प्रतुलित द्वारा उसका साग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अरविन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 109, 110 फ़ैट रोड, इली एक्सप्रेसवे, होमडेकेरे, बंगलुरु 560 085  
फ़ोन : 080-26725740
- नवदीपन टावर फ्लैट, डाकघर नवदीपन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सै.नरसुनी, कैम्प, निकट: धनबाद बस स्टॉप पानिहरी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- सी.एच.ए.सी. कॉम्प्लेक्स, मार्गाग्रह, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार  
मुख्य संपादक : श्रेया ठाकुर

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिखर कुमार  
मुख्य व्यापार अधिकारी : शैलम गांगुली

# चाय



मदन



जमाल





2

एक दिन जमाल को जुकाम हो गया।  
वह सुबह से छींक रहा था।  
उसकी नाक भी बह रही थी।



जमाल का मन चाय पीने का हुआ।  
रोज़ की तरह मदन उसके घर पर ही था।  
जमाल ने उससे कहा कि चाय पीने का मन हो रहा है।





मदन फ़्रौरन चाय बनाने चल पड़ा।  
उस दिन मदन पहली बार चाय बना रहा था।  
उसने पहले कभी चाय नहीं बनाई थी।



मदन ने पतीले में दो प्याले पानी डाला।  
उसने पानी में दो लौंग डालीं।  
फिर मदन ने पानी उबलने रख दिया।





6

मदन ने खूब सारा अदरक डाला।  
पानी में लौंग और अदरक खूब देर तक उबाले।  
मदन उनको उबलते हुए देखता रहा।



फिर उसने पतीले में आधा प्याला दूध डाला।  
मदन ने उबलते हुए पानी में दो चम्मच चीनी डाली।  
उसने पानी में दूध डालकर खूब देर उबाला दिया।





इसके बाद खूब सारी चाय की पत्ती डाली।  
मदन ने पत्ती डालकर चाय को खूब उबाला।  
चाय का रंग खूब गाढ़ा हो गया था।



मदन ने चाय दो गिलासों में छानी।  
उसने दोनों गिलासों में चाय बराबर डाली।  
चाय थोड़ी कम थी।





मदन ने चाय के गिलास एक थाली में रख लिए।  
वह बड़े प्यार से जमाल के लिए चाय लेकर आया।  
उसने बड़े प्यार से जमाल को चाय दी।



जमाल की नाक अब भी बह रही थी।  
उसने चाय का गिलास हाथ में लिया।  
जमाल ने नाक पोंछते हुए चाय का एक घूँट पीया।





जमाल ने सारी चाय थूक दी।  
चाय बहुत कड़वी थी।  
वह बोला कि चाय है या कड़वी दवा।



मदन ने भी चाय पीकर देखी।  
चाय में चीनी कम थी।  
अदरक और पत्ती बहुत ज़्यादा डल गई थी।





14

मदन ने दोनों की चाय वापस पतीले में डाली।  
उसने चाय में चीनी और दूध डाला।  
चाय को फिर से उबलने रख दिया।



अब चाय का रंग हल्का हो गया था।  
मदन ने चम्मच से निकाल कर चाय चखी।  
चाय अब अच्छी हो गई थी।





16

वह जमाल के लिए दोबारा चाय लेकर आया।  
जमाल को इस बार चाय अच्छी लगी।  
उसने मदन की चाय भी अपने गिलास में डाल ली।



2085



रु. 10.00

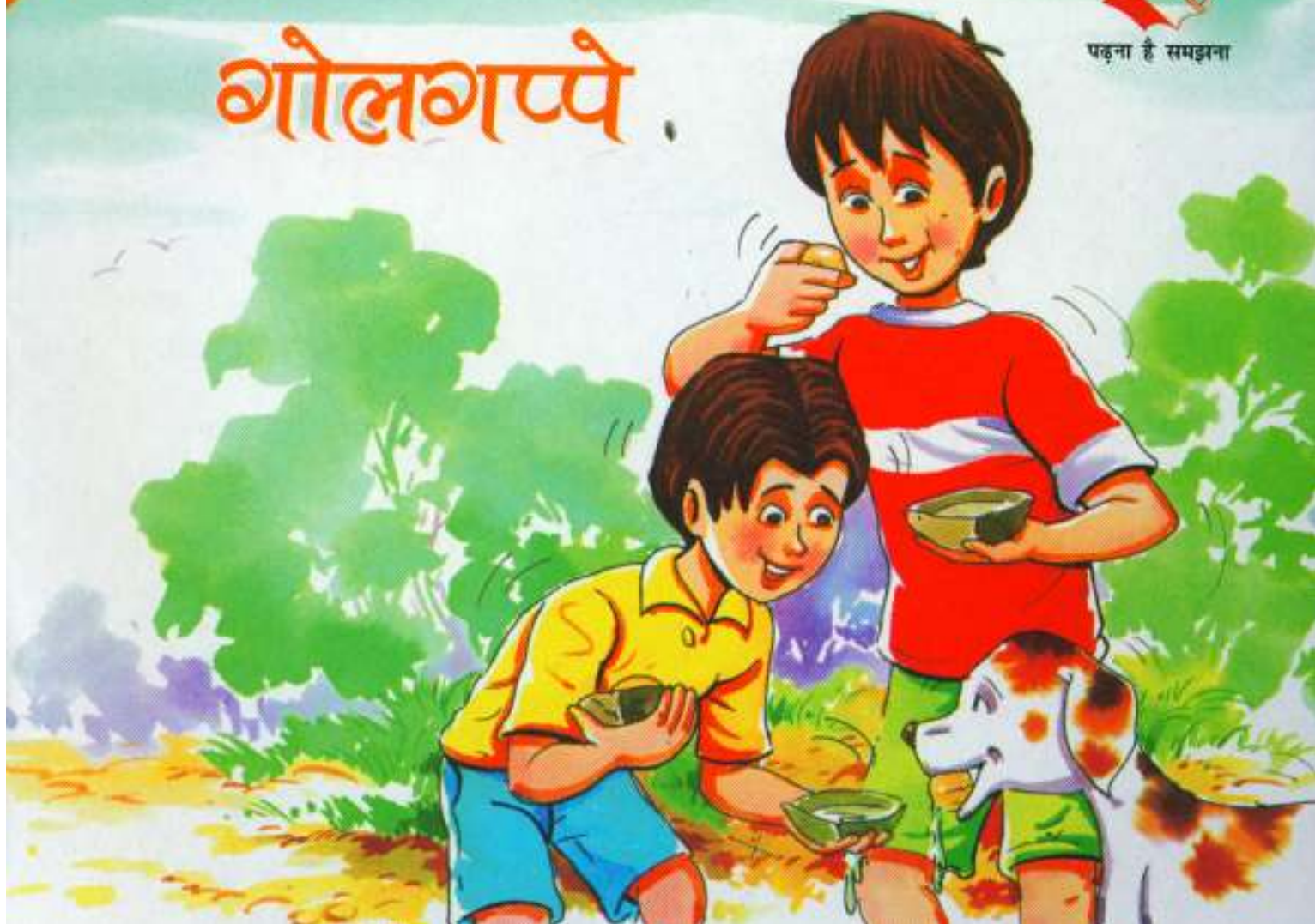
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



# बोलबाप्पे



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - निधि बाधवा

सज्जा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आधार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोवेंसिको संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवेलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक बाबूपेयो, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शक्नम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुवहत हसन, निदेशक, नेरान्त बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 बी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)  
978-81-7450-887-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में सज्जनात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापन तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपींग, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. के.एस. श्री आर्य मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फोर्ट रोड, हेनरी एम्बेडगेन, होमरोकेट, नयाहाउस III स्टेज, बंगलूर 560 085 फ़ोन : 080-26725740
- कलकत्ता ट्रस्ट भवन, बाकसर नगरपालिका, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.एच.एच.सी. के.एस. निम्नतः धनकुल एस.एच. वनिहटी, कोसकला 700 114 फ़ोन : 033-25530454
- सी.एच.एच.सी. कॉम्प्लेक्स, मल्लीगड्डि, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार मुख्य उपाध्यक्ष अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : इवोला उप्पल मुख्य व्यापार अधिकारी : प्रीतम मंगुल्ली



# गोलबाप्पे



मदन



जमाल



2

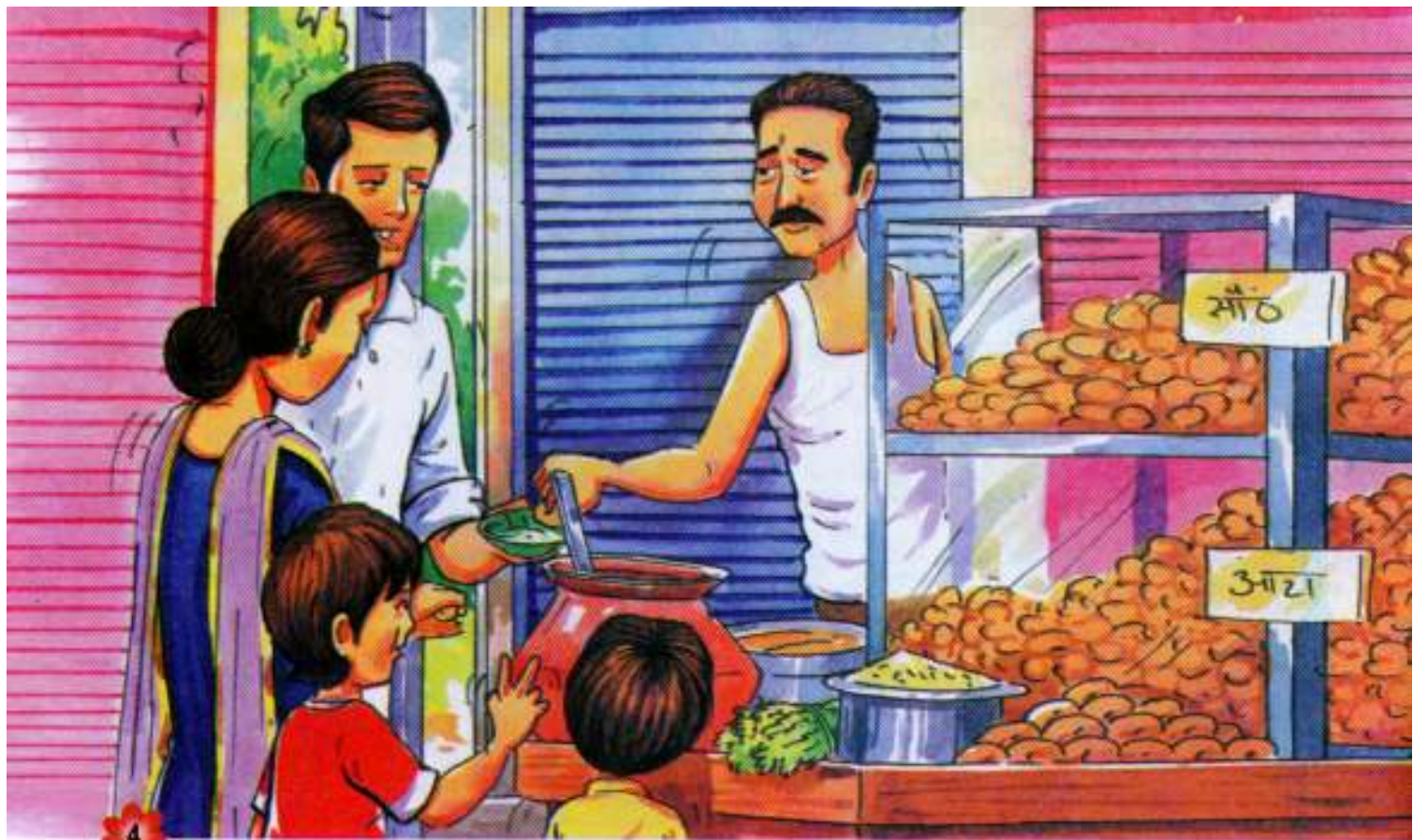
एक दिन मम्मी ने जमाल को पाँच रुपये दिए।  
जमाल ने सब्जी धोने में मम्मी की मदद की थी।  
मम्मी जमाल से बहुत खुश थीं।





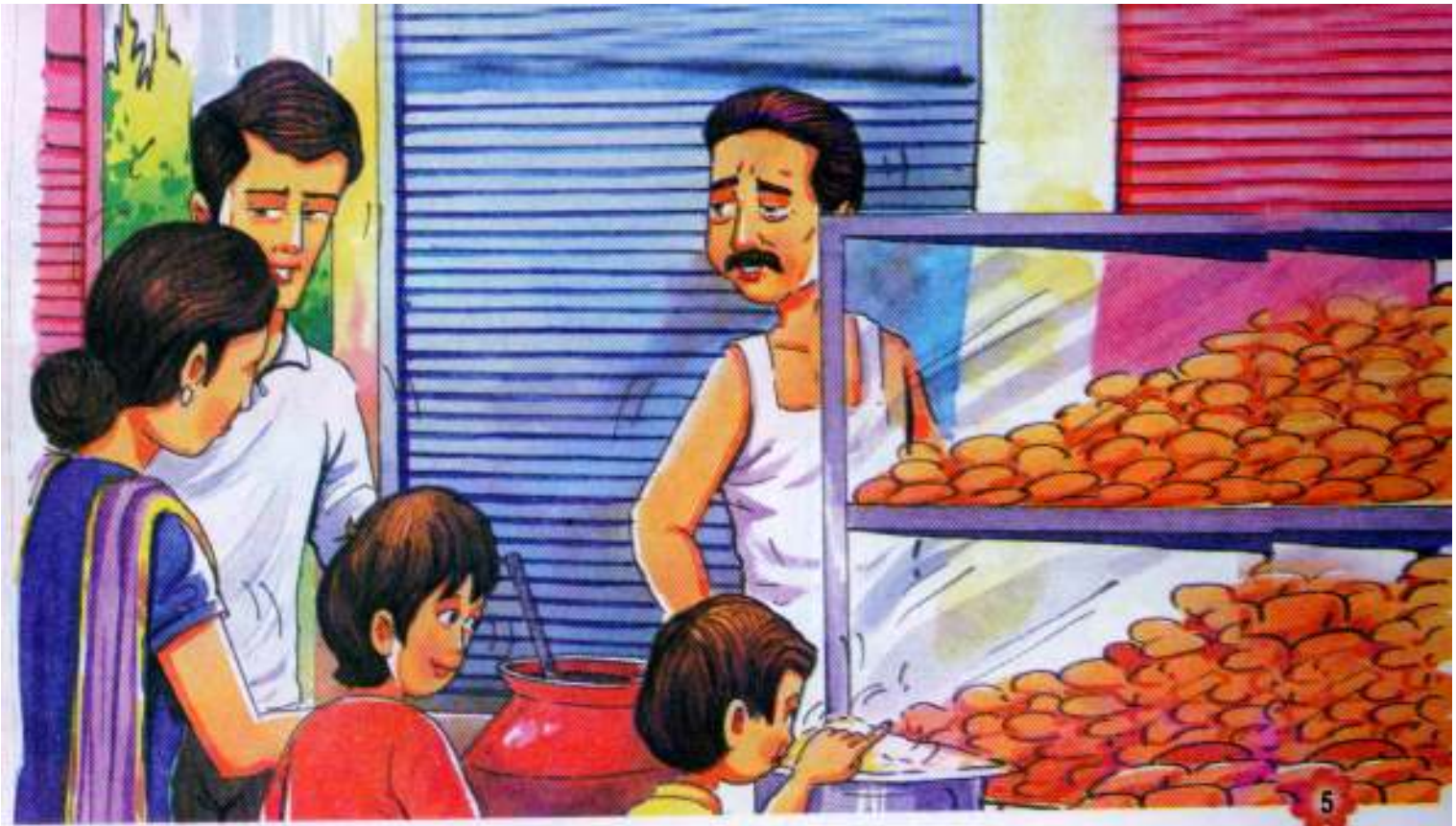
3

वह मदन को लेकर बाज़ार गया।  
बाज़ार में गोलगप्पे की एक दुकान थी।  
दोनों हमेशा वहीं गोलगप्पे खाते थे।

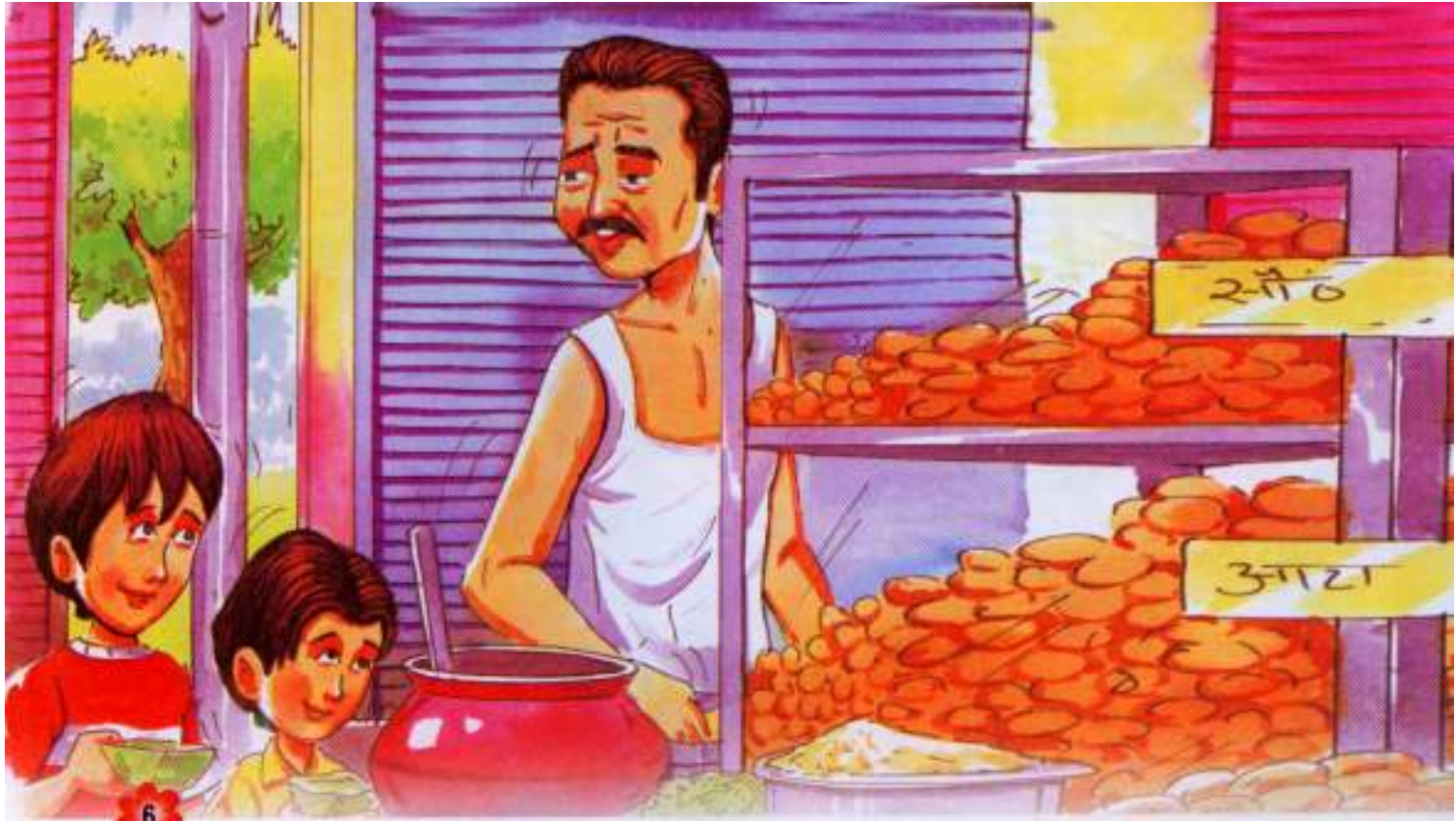


गोलगप्पे की दुकान पर मदन ने दो दोने माँगे।  
गोलगप्पे वाला दूसरे लोगों को खिला रहा था।  
जमाल खाते हुए लोगों को देखने लगा।





जमाल का मन गोलगप्पे खाने के लिए मचल रहा था।  
उसे सौंठ चाटने का मन कर रहा था।  
जमाल के मुँह में पानी आ रहा था।



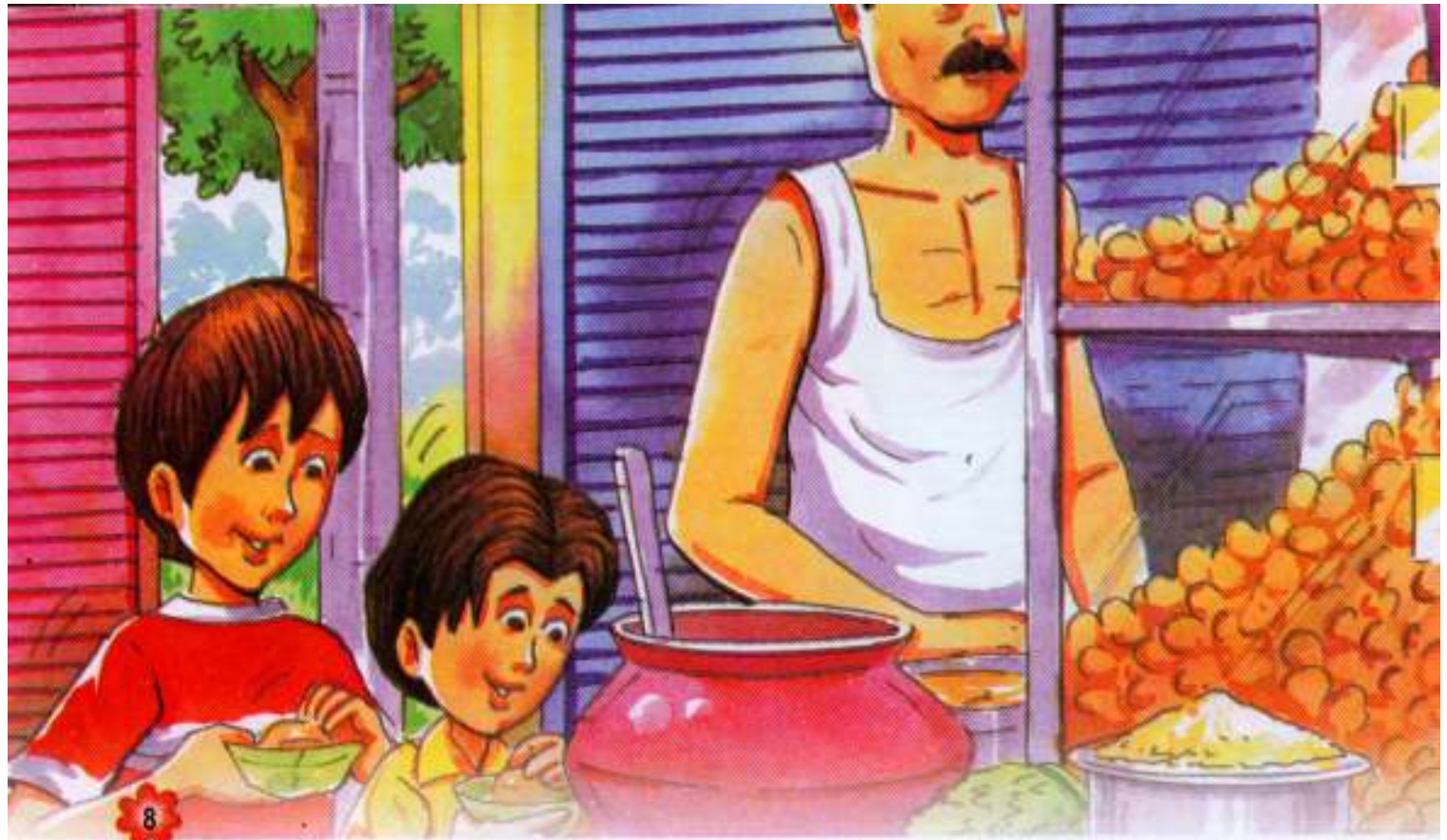
6

गोलगप्पे वाले ने उनको एक-एक दोना दिया।  
जमाल ने सौंठ वाले गोलगप्पे माँगे।  
मदन ने कहा कि उसे सौंठ नहीं चाहिए।





गोलगप्पे बहुत बड़े-बड़े थे।  
जमाल ने गोलगप्पा खाने के लिए बहुत बड़ा मुँह खोला।  
उसका पूरा मुँह गोलगप्पे और पानी से भर गया।



8

कुरकुरे गोलगप्पे से जमाल के मुँह में आवाज़ हुई।  
उसके बाद मुँह में खट्टा-मीठा पानी घुल गया।  
जमाल ने जोर से चटखाग लिया।



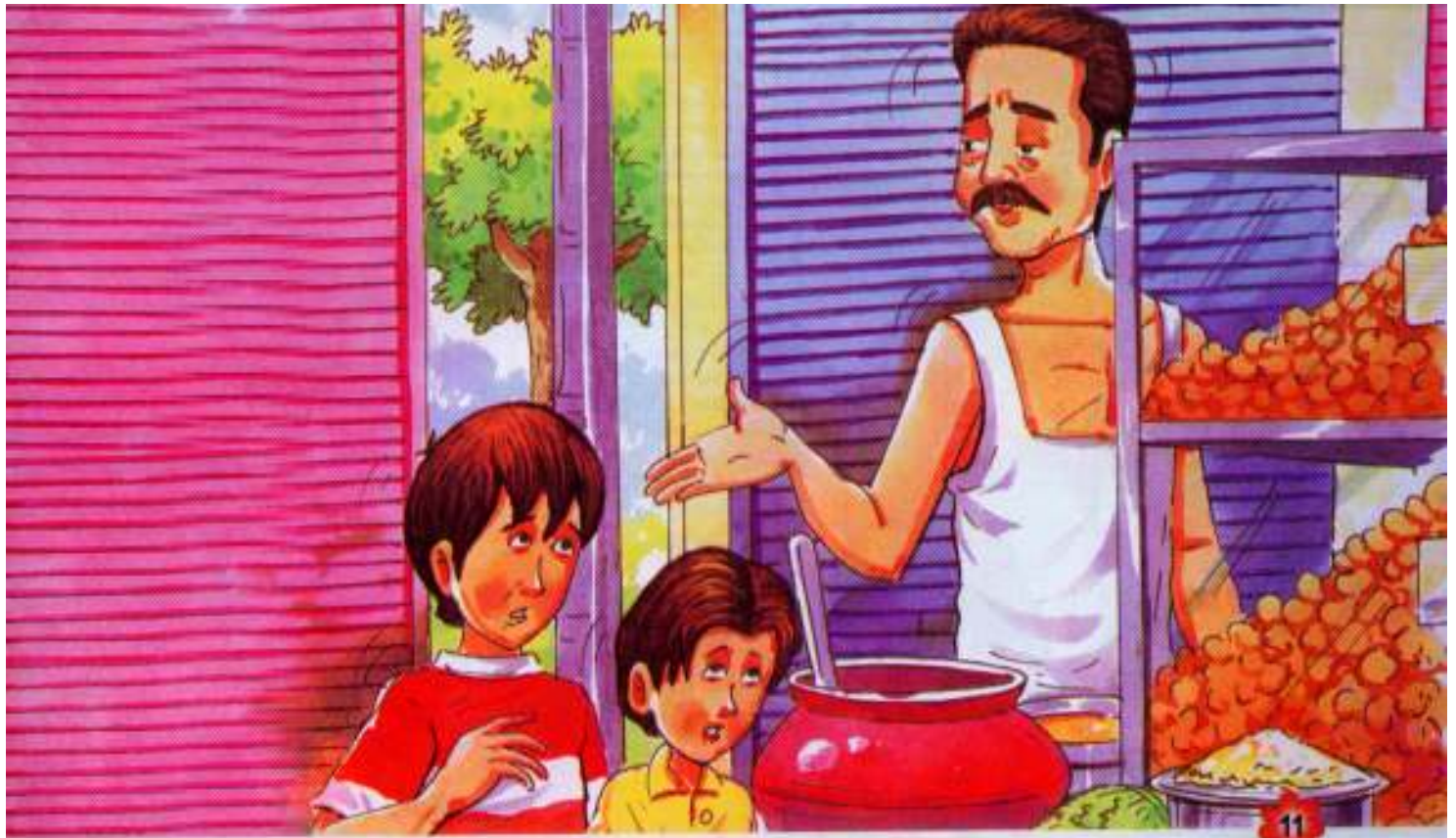


गोलगप्पा मुँह में डालते ही उसकी आँखें बंद हो जाती थीं।  
जमाल पानी का स्वाद लेने लगता था।  
उसे खट्टा, मीठा, तीखा मिला-जुला पानी पसंद था।



मदन को खट्टा-खट्टा पानी बहुत अच्छा लग रहा था।  
उसे पानी के तीखेपन में मज़ा आ रहा था।  
गोलगप्पा खाते ही उसकी आँखें भी बंद होती थीं।





पाँच गोलगप्पे खाने के बाद जमाल थोड़ा रुका।  
वह पैसों के बारे में सोचने लगा।  
उसके पास सिर्फ पाँच रुपये थे।



12

इतने में गोलगप्पे वाले ने एक और गोलगप्पा बढ़ाया।  
जमाल से मना नहीं किया गया।  
वह फिर गोलगप्पे खाने लगा।



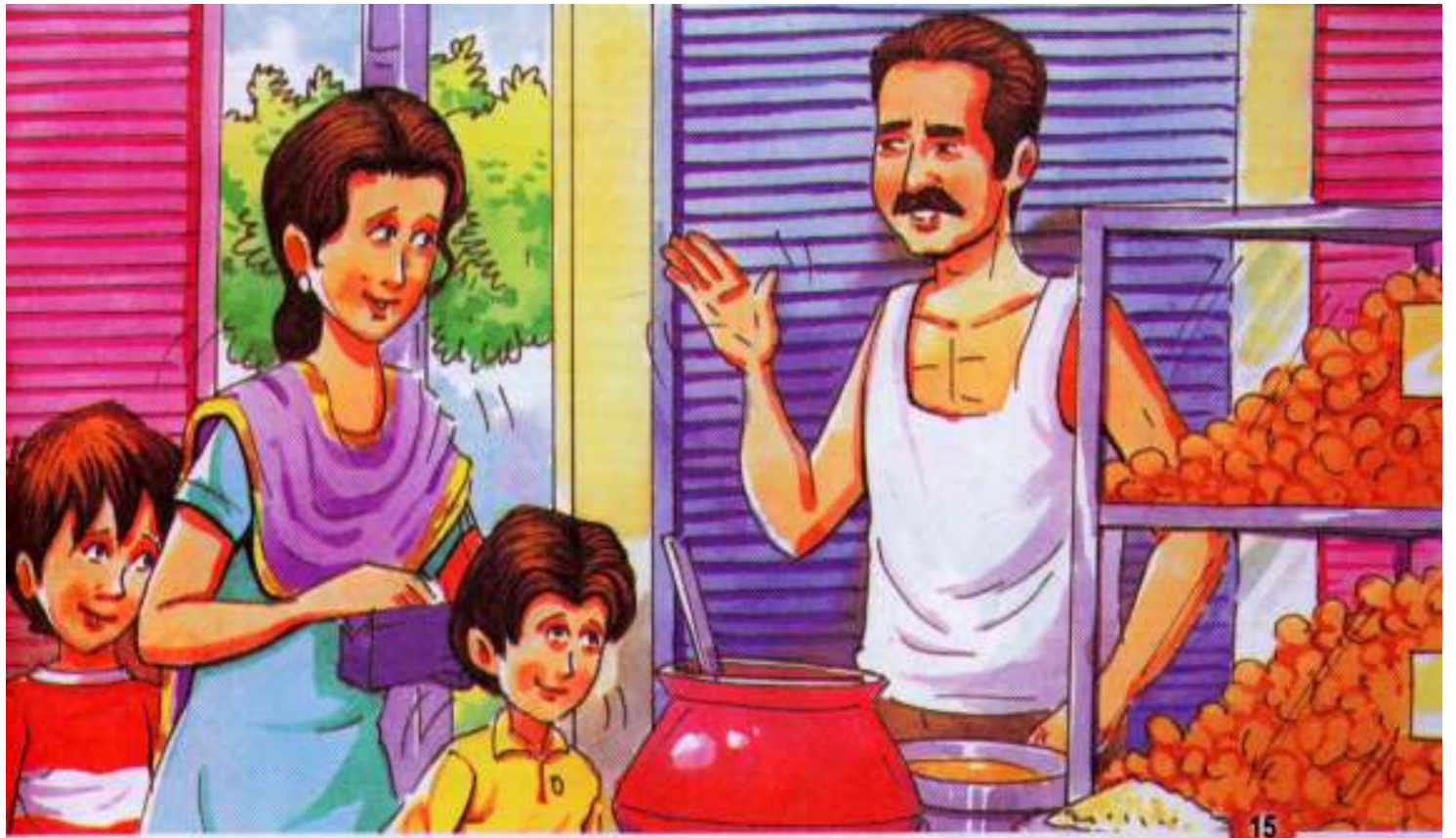


मदन ने जमाल की तरफ़ देखा।  
उसने आँखों से पैसे के बारे में इशारा किया।  
जमाल चटखारे लेने में लगा हुआ था।

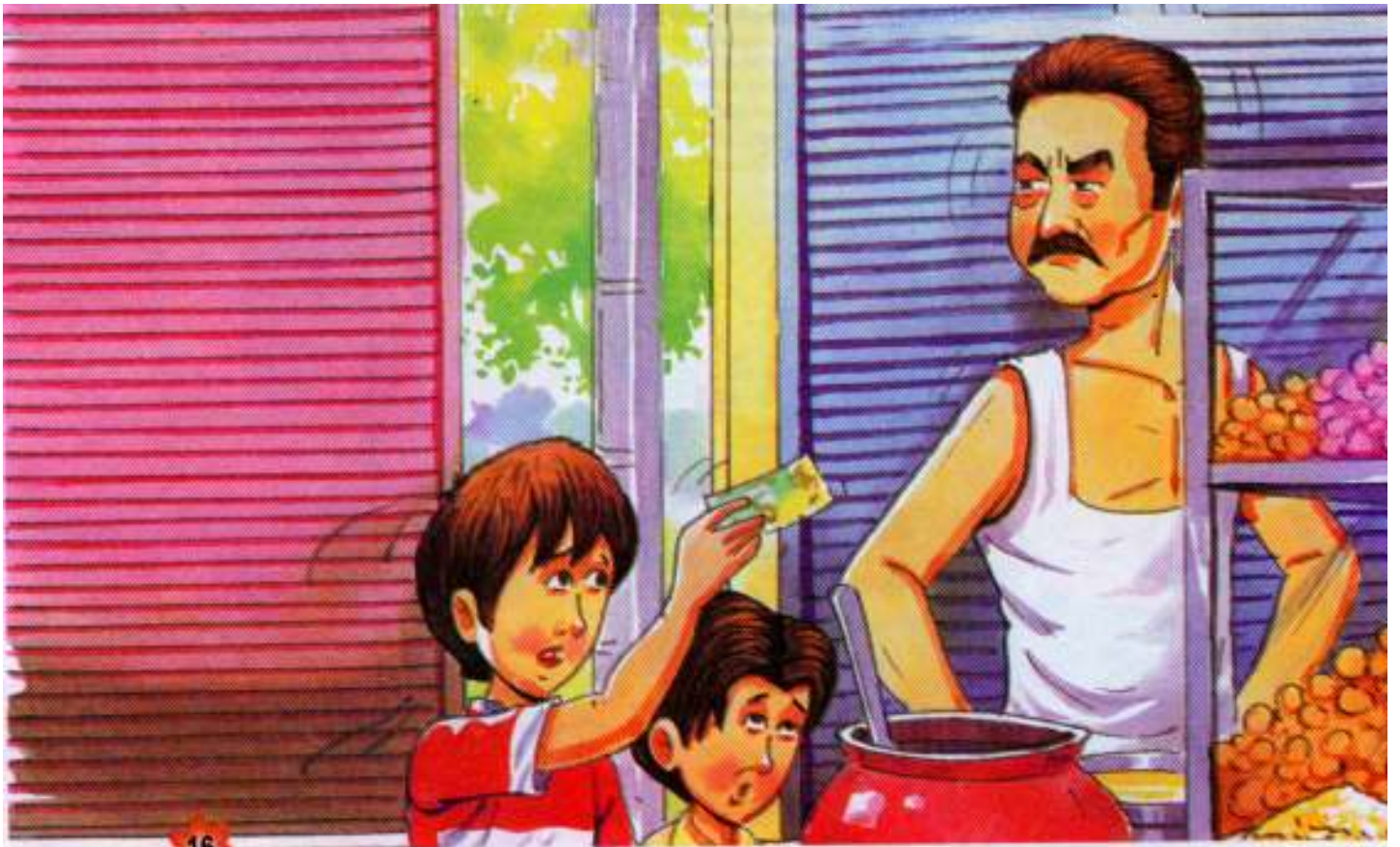


मदन से भी रुका नहीं गया।  
वह भी गोलगप्पे खाता गया।  
उसने गोलगप्पे वाले से पानी में खट्टा बढ़ाने को कहा।



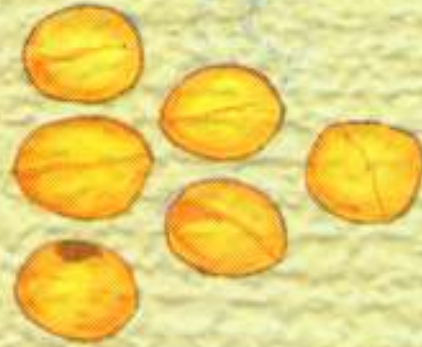


दोनों ने खूब सारे गोलगप्पे खाए।  
जमाल को खूब मिर्च लग रही थी।  
मदन को उससे भी ज़्यादा मिर्च लग रही थी।



उन्होंने गोलगप्पे वाले को पाँच रुपये दिए।  
दो रुपये कम पड़ गए।  
गोलगप्पे वाले ने कहा – अगली बार दे देना।





2086



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (चरखा-सेट)

978-81-7450-887-4

# पीलू की गुल्ली



पढ़ना है समझना





**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कॉलेक्ट 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पृष्ठ 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता फण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**चित्रांकन** – निधि बाधवा

**संज्ञा तथा आवरण** – निधि बाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर** – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भ्रष्टा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुल मथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक बाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, कर्घा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानन्द, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.राजनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुवहव हसन, निदेशक, केंशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अश्विन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडियन एरिया, साइट-ए,  
मनोर 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)  
978-81-7450-888-1

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग की छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीन, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संस्करण अथवा प्रकाशन वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कर्तव्यलय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अश्विन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 पीट रोड, हल्दी एक्स्प्रेसवे, इंदौरके, बरसाकरी III स्तर, बंगलूर 560 085  
फ़ोन : 080-26725740
- नवजीवन टावर भवन, डाकघर नवजीवन, जयपुरराज्य 302 014 फ़ोन : 079-27541440
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, विक्टर धनकल बस स्टॉप पश्चिमी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, पालीगंज, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : रवींद्र उपाध्याय मुख्य व्यवहार अधिकारी : रीतम नागर्त

# पीलू की गुल्ली



गुल्ली



पीलू



मम्मी





2

एक दिन रानी के घर में सुबह से हलचल थी।  
सुबह से ही आवाज़ें आ रही थीं।  
आवाज़ों से रानी की नींद खुल गई।  
उसने रमा को भी जगा दिया।



रानी उठकर आँगन में आ गई।  
आँगन में बहुत चहल-पहल थी।  
सब अपने-अपने काम में लगे हुए थे।  
वह सबको देखने लगी।





पापा चूल्हे पर पतीला चढ़ा रहे थे।  
पतीले में पानी और दाल-चावल थे।  
मम्मी दो बोरे लेकर बैठी हुई थीं।  
वह बोरों में से गुड़ निकाल रही थीं।



रानी ने देखा कि पीलू गाय को बछिया हुई है।  
वह पीलू के बगल में ही बैठी हुई थी।  
पीलू गाय अपनी बछिया को चाट रही थी।  
बछिया भी प्यार से अपना मुँह चटवा रही थी।





रानी भागकर बछिया के पास गई।  
बछिया काले रंग की थी।  
मम्मी भी रानी के पास आ गई।  
वह पीलू को गुड़ खिलाने लगीं।



रानी ने बछिया को छू कर देखा।  
वह बहुत चिकनी-चिकनी थी।  
बछिया के बाल चमक रहे थे।  
उसकी पूँछ छोटी-सी थी।





बछिया बार-बार खड़ी होने की कोशिश कर रही थी।  
वह लड़खड़ा कर बैठ जाती थी।  
रानी ने उसकी कमर सहलाई।  
रमा भी वहाँ आ गई।



रमा ने पीलू को गुड़ दिया।  
रमा भी बछिया को छू-छूकर देखने लगी।  
रमा और रानी बहुत खुश थीं।  
उन्हें बछिया को देखकर बहुत मज़ा आ रहा था।





रमा और रानी ने बछिया का नाम गुल्ली रखा।  
उन्होंने मम्मी को उसका नाम बताया।  
वे वापस गुल्ली के पास आकर बैठ गईं।  
वे गुल्ली के पास से हटना नहीं चाह रही थीं।



मम्मी ने रमा और रानी को कुछ कतरनें दीं।  
उन्होंने गुल्ली के लिए रस्सी बनाने को कहा।  
गुल्ली को बाँधने वाली रस्सी नरम होनी चाहिए।  
दोनों बैठकर रस्सी बुनने लगीं।





12

रमा ने देखा बाबा गुल्ली को धीरे-धीरे खींच रहे थे।  
उन्होंने गुल्ली का मुँह पीलू के थनों पर लगा दिया।  
गुल्ली दूध पीने लगी।  
पीलू चुपचाप खड़ी हुई थी।

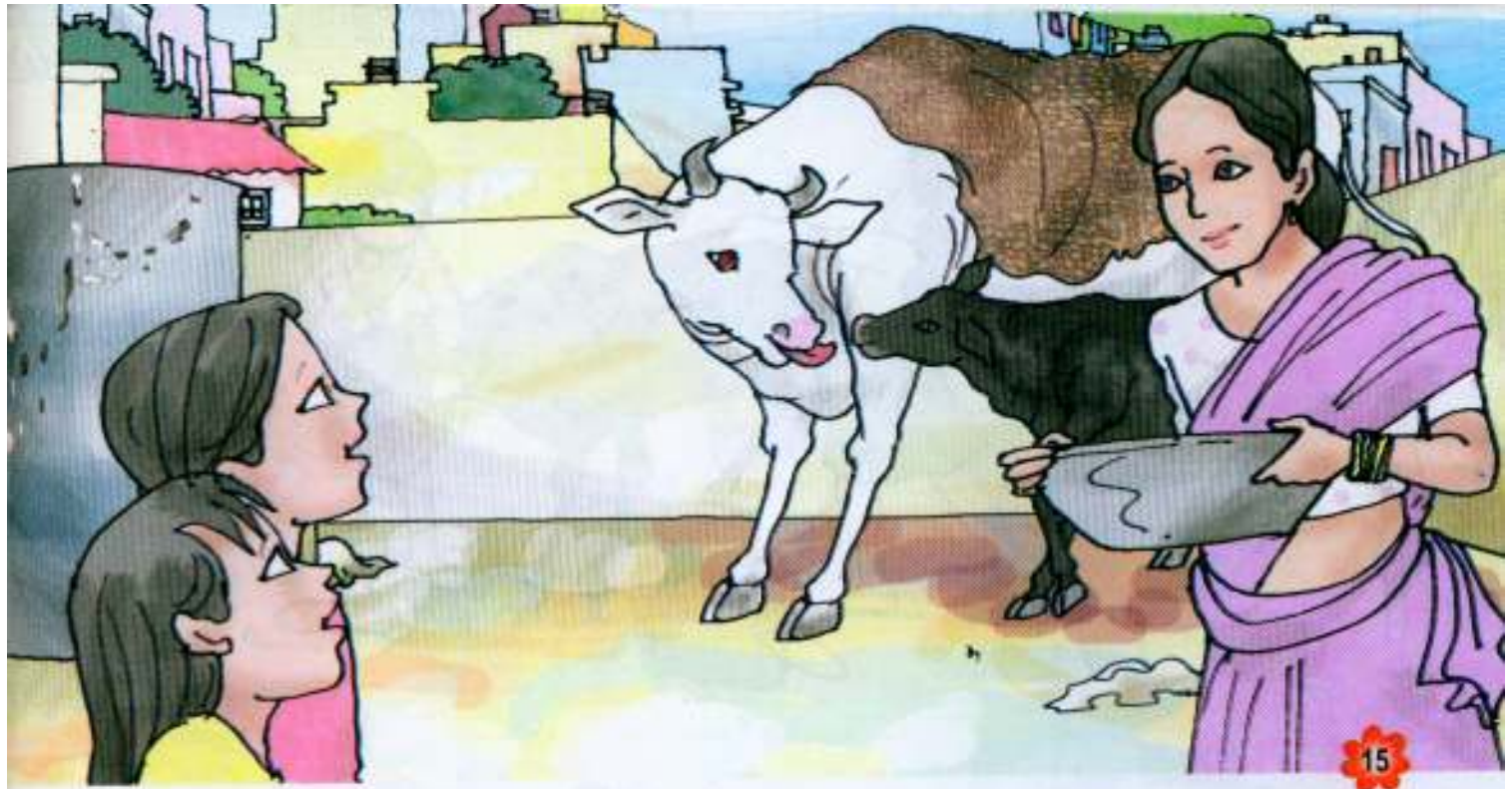


गुल्ली दूध पीती जा रही थी।  
उसकी पूँछ इधर-उधर गटक रही थी।  
इतने में मम्मी पीलू के लिए काढ़ा ले आई।  
पीलू काढ़ा पीने लगी।





थोड़ी देर में पापा ने गुल्ली को अलग कर लिया।  
फिर मम्मी पीलू का दूध दुहने लगीं।  
उस दिन पीलू का दूध कुछ अलग-सा था।  
दूध पीला-पीला और फटा-फटा था।



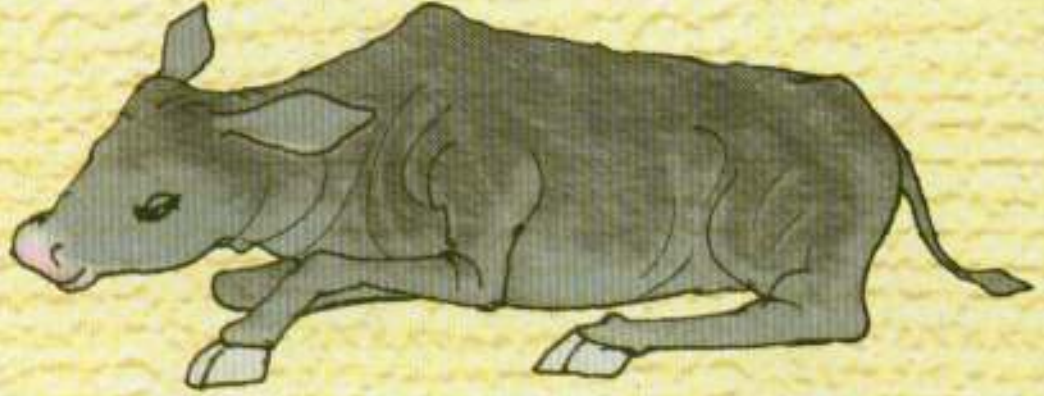
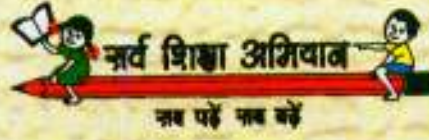
रमा और रानी मम्मी के पास पहुँची।  
उनका मन स्कूल जाने को नहीं था।  
मम्मी उनकी बात मान गई।  
लेकिन मम्मी ने एक शर्त रखी।





16

मम्मी ने कहा कि उन्हें गुल्ली को नहलाना पड़ेगा।  
यह सुनकर दोनों खुश हो गईं।  
रमा और रानी ने धीरे-धीरे गुल्ली को नहलाया।  
उन्होंने गुल्ली को नहलाकर नरम रस्सी से बाँध दिया।



2087



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING





पढ़ना है समझना



# नानी का चश्मा

**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, तुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**प्रशिक्षक** – जोएल गिल

**संज्ञा तथा आवरण** – निधि वाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर** – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा पाल

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामचन्द्र शर्मा, विभागाध्यक्ष, ध्वजा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक चावण्हेरी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एल.एफ.एम.,  
मुंबई; सुश्री नुवहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रंजित धनकर,  
निदेशक, दिगंबर, जयपुर।

80 बी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए,  
मधुप 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्ध-बैठ)

978-81-7450-889-8

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा को कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में सज्जनात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### इन.सी.ई.ओ.ए.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.ओ.ए.टी. के.एस. ओ. अरविन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562768
- 108, 100 पोट रोड, होली एम्बरटेराज, होम्बोर्गे, बरलिन III स्ट्रेज़, जर्मनी 1085 फोन : 080-26725740
- सर्वोच्च टर्म प्लान, डाकघर सर्वोच्च, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.एच.ए.सी. कैफे, निकर, धनकुल बस स्टॉप पश्चिमी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.एच.ए.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगौन, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री राजकुमार	मुख्य उत्प्रेषण अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : शंकर ठाकुर	मुख्य व्यापार अधिकारी : रीतम गुप्ता



# नानी का चश्मा



नानी



मुनमुन



रमा



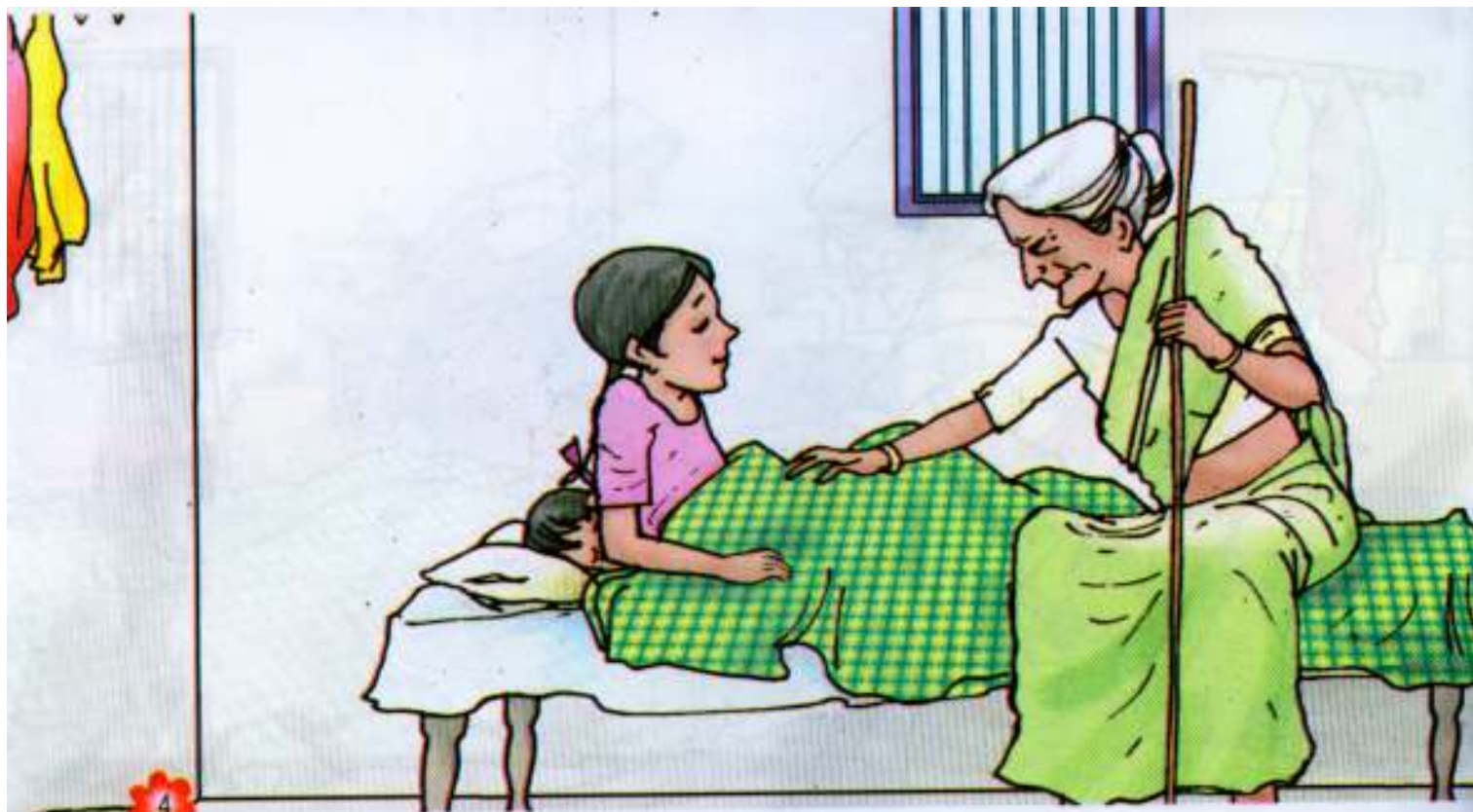
2

यह रमा की नानी हैं।  
रमा की नानी हर समय चश्मा लगाती हैं।  
नानी को किताबें पढ़ना पसंद है।  
नानी रोज़ सुबह अखबार पढ़ती हैं।





एक दिन नानी रमा को सुबह-सुबह उठाने लगीं।  
नानी को अपना चश्मा नहीं मिल रहा था।  
नानी को चश्मे के बिना मुश्किल हो रही थी।  
वह अपनी ज़रूरी चीज़ें नहीं ढूँढ़ पा रही थीं।



4

रमा बहुत गहरी नींद में थी।  
वह उठ नहीं रही थी।  
नानी ने रमा को बहुत प्यार से उठाया।  
उन्होंने रमा को चश्मा ढूँढ़ने के लिए कहा।





5

रमा नींद में ही चश्मा ढूँढ़ने लगी।  
उसने तकियों के नीचे चश्मा ढूँढ़ा।  
नानी चश्मे को कई बार वहाँ रख देती हैं।  
चश्मा तकियों के नीचे नहीं मिला।



6

नानी ने रमा से समय पूछा।  
रमा बोली कि छोटी सुई पाँच पर और बड़ी चार पर है।  
साढ़े पाँच बजने वाले थे।  
नानी को अखबार पढ़ना था और सैर करने जाना था।





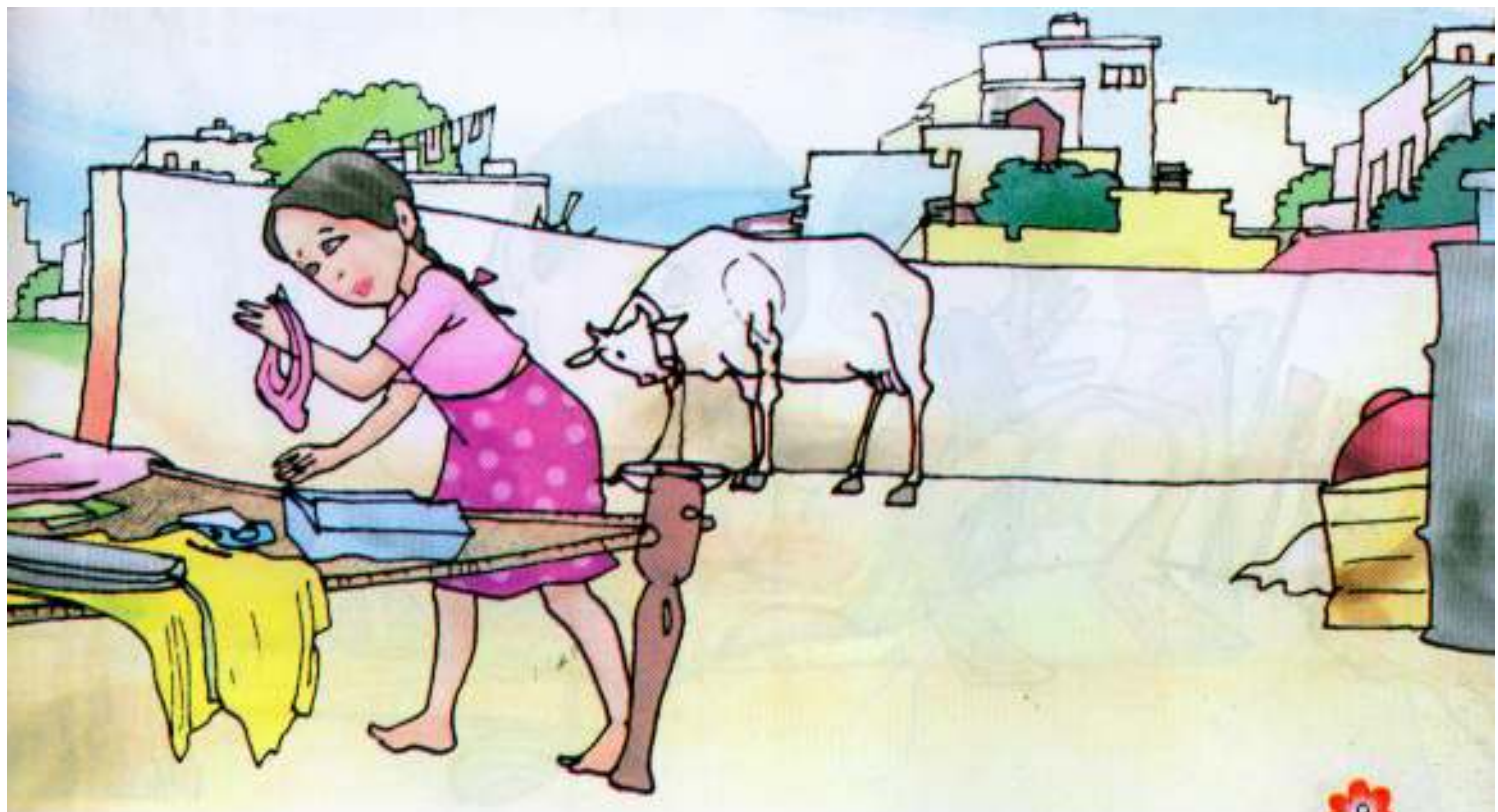
रमा ने नानी की मेज़ पर किताबों के बीच में चश्मा ढूँढ़ा।  
नानी मेज़ पर बैठकर अखबार और किताबें पढ़ती हैं।  
वह अक्सर किताबों के बीच में चश्मा छोड़ देती हैं।  
चश्मा मेज़ पर नहीं था।



8

रमा ने चश्मा गुसलखाने में ढूँढ़ा।  
गुसलखाने में बहुत सारे कपड़े पड़े हुए थे।  
नानी कभी-कभी चश्मा गुसलखाने में छोड़ देती हैं।  
चश्मा गुसलखाने में भी नहीं था।





रमा ने चश्मा आँगन में ढूँढ़ा।  
आँगन में बहुत सारा सामान पड़ा हुआ था।  
नानी अक्सर आँगन की चारपाई पर चश्मा छोड़ देती हैं।  
चश्मा चारपाई पर भी नहीं मिला।



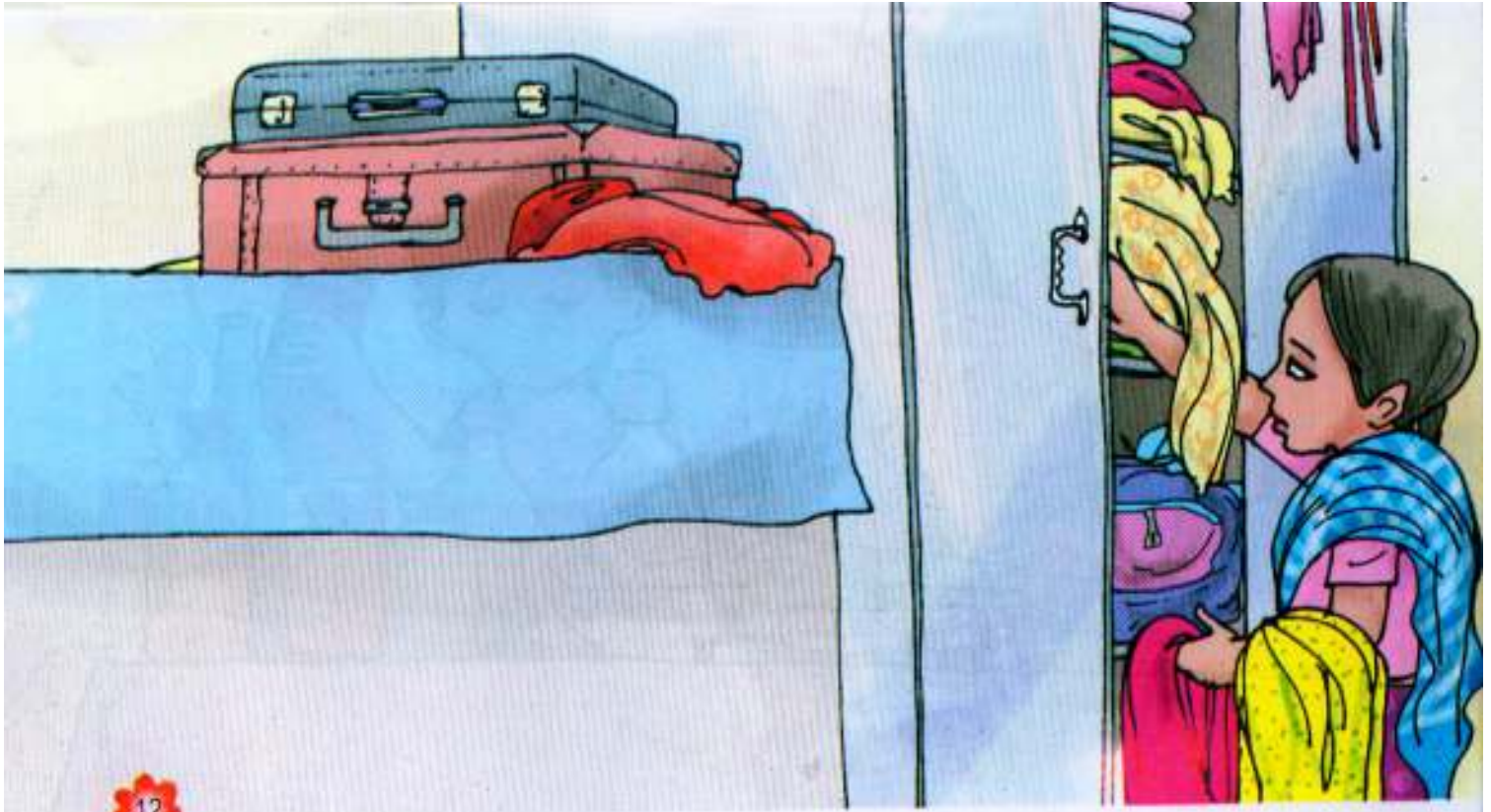
10

रमा ने चश्मा नानी के ऊन के थैले में ढूँढ़ा।  
थैले में ऊन के बहुत सारे गोले थे।  
उसमें आधे बुने हुए स्वेटर भी थे।  
चश्मा थैले में भी नहीं था।





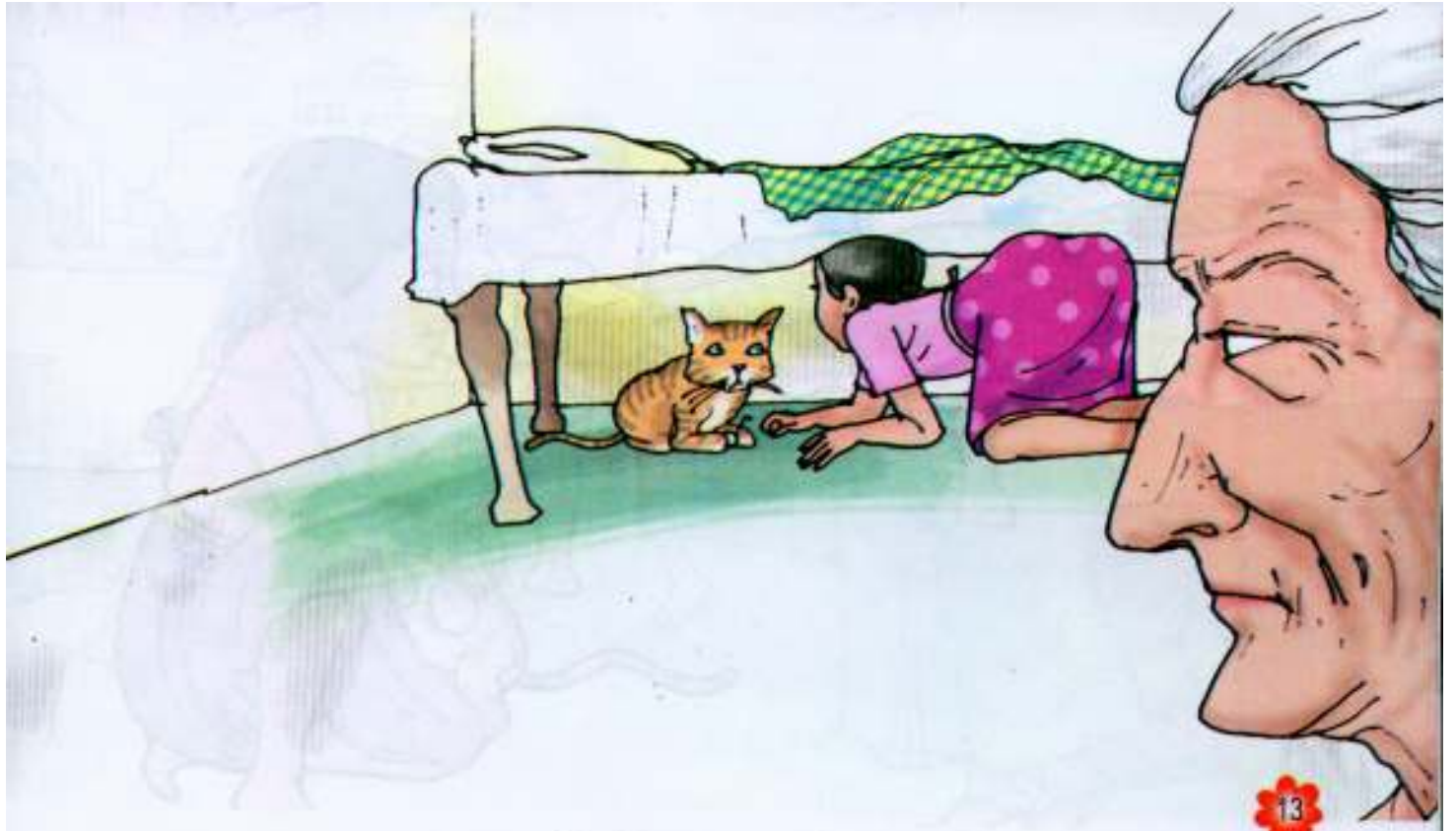
रमा ने चश्मा शीशे के पास ढूँढ़ा।  
वहाँ पर कंघियाँ और तेल की शीशियाँ रखी हुई थीं।  
नानी अक्सर कंघी करते समय चश्मा उतार देती हैं।  
चश्मा शीशे के पास भी नहीं था।



12

रमा ने चश्मा अलमारी में ढूँढ़ा।  
अलमारी में नानी की साड़ियाँ थीं।  
नानी कई बार अलमारी में चश्मा छोड़ देती हैं।  
चश्मा अलमारी में भी नहीं था।





रमा चश्मा ढूँढ़ने पलंग के नीचे घुसी।  
पलंग के नीचे मुनमुन बैठी हुई थी।  
मुनमुन के पैरों के बीच में कुछ था।  
वह ठीक से दिख नहीं रहा था।



14

रमा ने मुनमुन को बाहर निकाला।  
मुनमुन के साथ नानी का चश्मा भी आ गया।  
रमा ने फौरन चश्मा उठा लिया।  
वह चश्मा लेकर नानी के पास भागी।





नानी चश्मा देखकर बहुत खुश हो गई।  
उन्होंने चश्मा लगा लिया।  
वह अखबार पढ़ने बैठ गई।  
नानी बहुत देर तक अखबार पढ़ती रहीं।



16

नानी ने रमा को सैर के लिए बुलाया।  
रमा ने चश्मा मुनमुन को लगा दिया।  
मुनमुन चश्मा लगाकर बड़ी सुंदर लग रही थी।  
फिर तीनों सैर के लिए निकल गए।





2088



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पढ़ना है समझना



# चुन्नी और मुन्नी





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कातक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कृतिका एस. नरुला

सज्जा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नौलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुल माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक गावडेपे, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विरचविद्यालय, वरुण; प्रोफेसर फरीद अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एम. एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुजहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एच. पेज पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पेंकज प्रिंटिंग प्रेस, बी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए,  
मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

987-81-7450-890-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' को सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञातात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिप्रॉड्यूसिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 : फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फोर्ट रोड, इंदी एम्बरेश, होस्तेकेरे, कानपुर 201 005 : फ़ोन : 0522-26725740
- नवजीवन टाउट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 : फ़ोन : 079-27541446
- सो.एच.एच.सी. कैम्प, निक्टः धनकुल बस स्टॉप पश्चिमी, कोलकाता 700 114 : फ़ोन : 033-25530434
- सो.इ.एच.एच.सी. कॉम्प्लेक्स, पालीगंज, गुवाहाटी 781 025 : फ़ोन : 0363-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार मुख्य उत्पदन अधिकारी : लिल कुमार  
मुख्य संपादक : श्वेता उम्लाल मुख्य व्यापार प्रबंधक : तीरथ गंगुनी

# चुन्नी और मुन्नी



माधव



मुन्नी



चुन्नी



काजल





माधव और काजल के घर में दो छिपकलियाँ रहती थीं।  
एक छिपकली सफ़ेद रंग की थी।  
दूसरी छिपकली काले रंग की थी।  
दोनों छिपकलियाँ घर की दीवारों पर चिपकी रहती थीं।



माधव और काजल को छिपकलियाँ अच्छी लगती थीं।  
उन्होंने छिपकलियों के नाम भी रख दिए थे।  
वे सफ़ेद छिपकली को चुन्नी कहते थे।  
काली छिपकली का नाम मुन्नी था।





चुन्नी और मुन्नी पूरे घर की दीवारों पर घूमती रहती थीं।  
वे एक-दूसरे के पीछे भागती रहती थीं।  
वे कभी-कभी छत पर उल्टी चिपकी दिखाई देती थीं।  
काजल और माधव काम छोड़कर उन्हें देखते रहते थे।



कभी-कभी चुन्नी और मुन्नी गायब हो जाती थीं।  
काजल उन्हें पूरे दिन ढूँढ़ती रहती थी।  
माधव भी उन्हें ढूँढ़ नहीं पाता था।  
चुन्नी-मुन्नी कहीं कोने में घुस जाती थीं।





6

चुन्नी और मुन्नी रात को आवाज़ें निकालती थीं।  
माधव को लगता जैसे वह उससे बात कर रही हों।  
माधव कई बार उनसे बात करने की कोशिश करता था।  
वह चुन्नी और मुन्नी की तरह आवाज़ निकालता था।



चुन्नी और मुन्नी कई बार बहुत नीचे आ जाती थीं।  
वे ज़मीन पर भी दौड़ती थीं।  
काजल ने उनको रसोई में भी देखा था।  
वह रसोई के डिब्बों के पीछे घुस जाती थीं।





8

चुन्नी और मुन्नी कीड़े-मकोड़े खाती थीं।  
वे अक्सर तिलचट्टे को पकड़े हुए दिखती थीं।  
चुन्नी तिलचट्टे को मुँह में दबा लेती।  
मुन्नी मच्छर पकड़ती और चट कर जाती।



चुन्नी एक दिन मुन्नी के पीछे भाग रही थी।  
काजल को लगा कि जैसे पकड़म-पकड़ाई खेल रही हों।  
मुन्नी सरपट दीवार पर भागी जा रही थी।  
चुन्नी उसके पीछे-पीछे थी।





अचानक चुन्नी और मुन्नी अलग हो गई।  
काजल ने देखा कि मुन्नी की पूँछ गायब थी।  
चुन्नी के मुँह में मुन्नी की पूँछ थी।  
मुन्नी की पूँछ कट गई थी।



काजल ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी।  
माधव दौड़कर आया।  
काजल बहुत घबराई हुई थी।  
उसने बताया कि चुन्नी ने मुन्नी की पूँछ खा ली।





माधव ने बिना पूँछ की मुन्नी देखी।  
दोनों बहुत दुखी हो गए।  
मुन्नी फिर भी इधर-उधर दौड़ रही थी।  
चुन्नी कहीं छुप गई थी।



रात को माधव मुन्नी की पूँछ के बारे में सोचता रहा।  
काजल भी मुन्नी की पूँछ के बारे में सोच रही थी।  
दोनों को चुन्नी पर बहुत गुस्सा आ रहा था।  
वे मुन्नी के बारे में बातें करते हुए सो गए।





14

सुबह उठते ही दोनों मुन्नी को ढूँढ़ने लगे।  
मुन्नी रसोई की दीवार पर थी।  
वह रोज़ की तरह मच्छर खा रही थी।  
चुन्नी छत पर उल्टी चिपकी हुई थी।



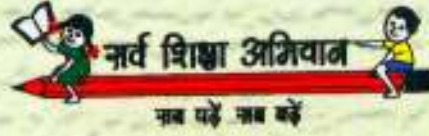
काजल और माधव रोज़ मुन्नी को देखते रहते थे।  
वे चुन्नी से अभी भी नाराज़ थे।  
एक दिन मुन्नी बहुत नीचे आकर तिलचट्टा पकड़ रही थी।  
माधव की नज़र उस पर पड़ी।





16

माधव ने देखा मुन्नी की नई पूँछ आ गई थी।  
वह काजल को बुलाकर लाया।  
काजल ने भी मुन्नी की छोटी-सी पूँछ देखी।  
दोनों समझ गए कि छिपकली की नई पूँछ आ जाती है।



2089



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बद्धा सैट)  
987-81-7450-890-4





पढ़ना है समझना



# मिमी के लिए क्या लूँ?



**प्रथम संस्करण :** अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेहन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, मुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**चित्रांकन** – कृतिका एम. नरुला

**सज्जा तथा आवरण** – निधि बाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर** – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संपुका निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्य शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर भंडुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग टेक्नोप्लेट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वरुंडा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वचंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री बुल्लत डसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रंजित धनकर, निदेशक, दिगंतर, बंधपुर।

80 जी.एस.एम. पेस पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सॉफ्टवेयर, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, जी-28, इंदिरा नगर एरिया, साइट-ए, सयुग 281004 द्वारा मुद्रित।

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में सज्जनात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षा

प्रकाशक को पूर्वानुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562768
- 108, 109 पीट रोड, हंसी एमप्लोयर्स, लॉर्डकेरे, बनारस 221 005 **फोन** : 080-26725240
- नवजीवन टुस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27543446
- सी.इन्फ्यूसी. कैम्पस, निकट: धनकुल चम स्टीप फील्ड, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.इन्फ्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगँज, मुंबई 400 021 **फोन** : 0361-2674669

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार **मुख्य उत्प्रेषण अधिकारी** : शिवा कुमारा  
मुख्य संचालक : श्रेष्ठ उत्प्रेषण **मुख्य व्यापार प्रबंधक** : नीतय गणुली



# मिमी के लिए क्या लूँ?



माधव



मिमी



2

माधव के पास एक बकरी थी।  
उस बकरी का नाम मिमी था।  
माधव मिमी को बहुत प्यार करता था।  
मिमी भी माधव के आस-पास ही घूमती रहती थी।





मिमी का रंग सफ़ेद और भूरा था।  
उसके कान बड़े-बड़े थे।  
मिमी के बाल बहुत चमकते थे।  
मिमी की आँखें बड़ी प्यारी थीं।



4

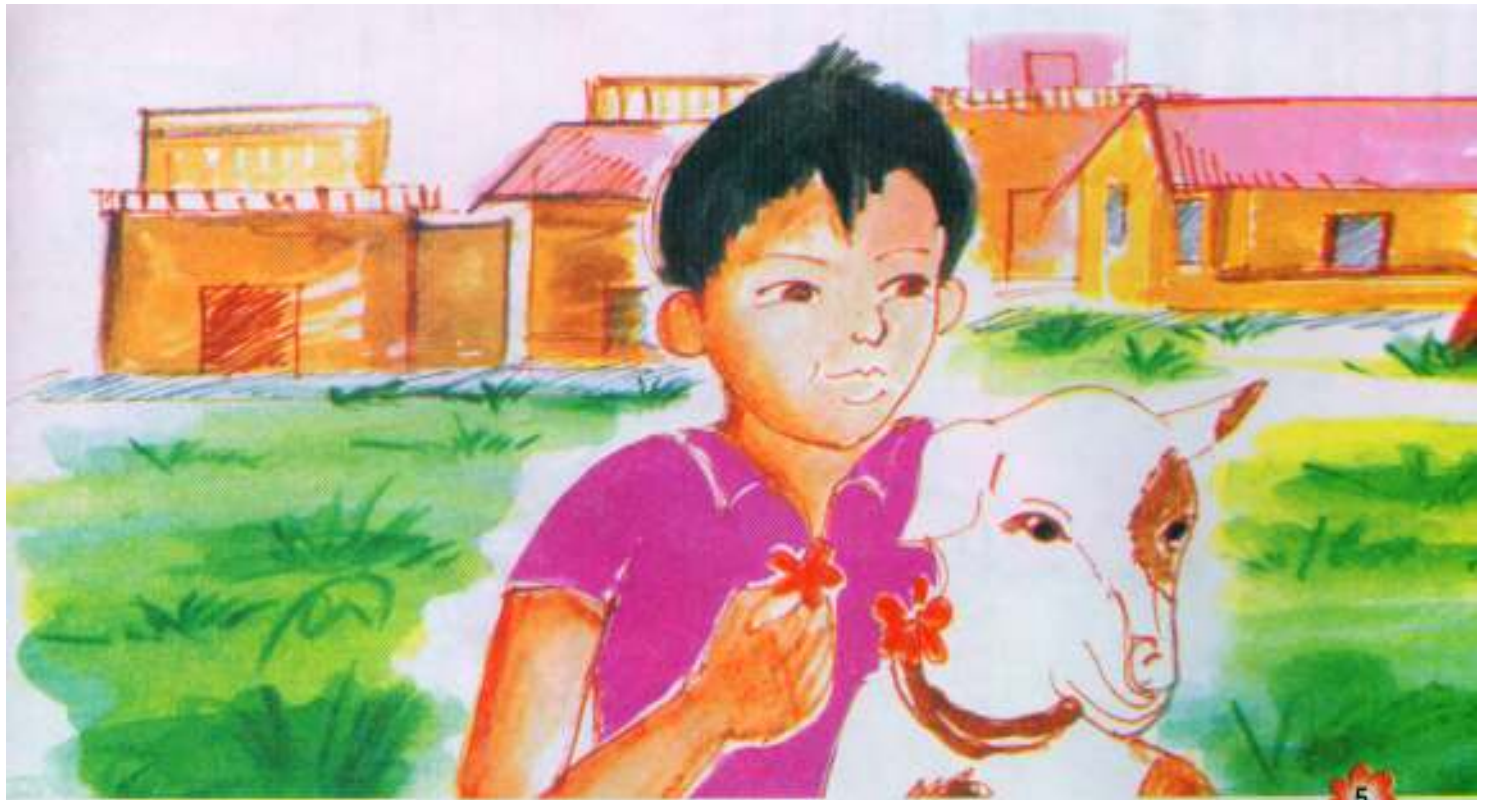
मिमी बहुत मुलायम थी।

माधव दिनभर उसे सहलाता रहता था।

वह उसे अपनी गोद में लिए फिरता था।

माधव को मिमी के मुलायम-मुलायम कान बहुत पसंद थे।





मिमी पूरे एक साल की हो गई थी।  
मिमी का जन्मदिन आया।  
माधव उसका जन्मदिन मनाना चाहता था।  
वह मिमी के लिए एक तोहफ़ा खरीदना चाहता था।



6

माधव ने मम्मी से तोहफ़े के लिए पैसे माँगे।  
मम्मी ने बीस रुपये दे दिए।  
माधव ने मिमी को नहला-धुलाकर तैयार किया।  
वह मिमी को लेकर बाज़ार की तरफ़ निकल पड़ा।





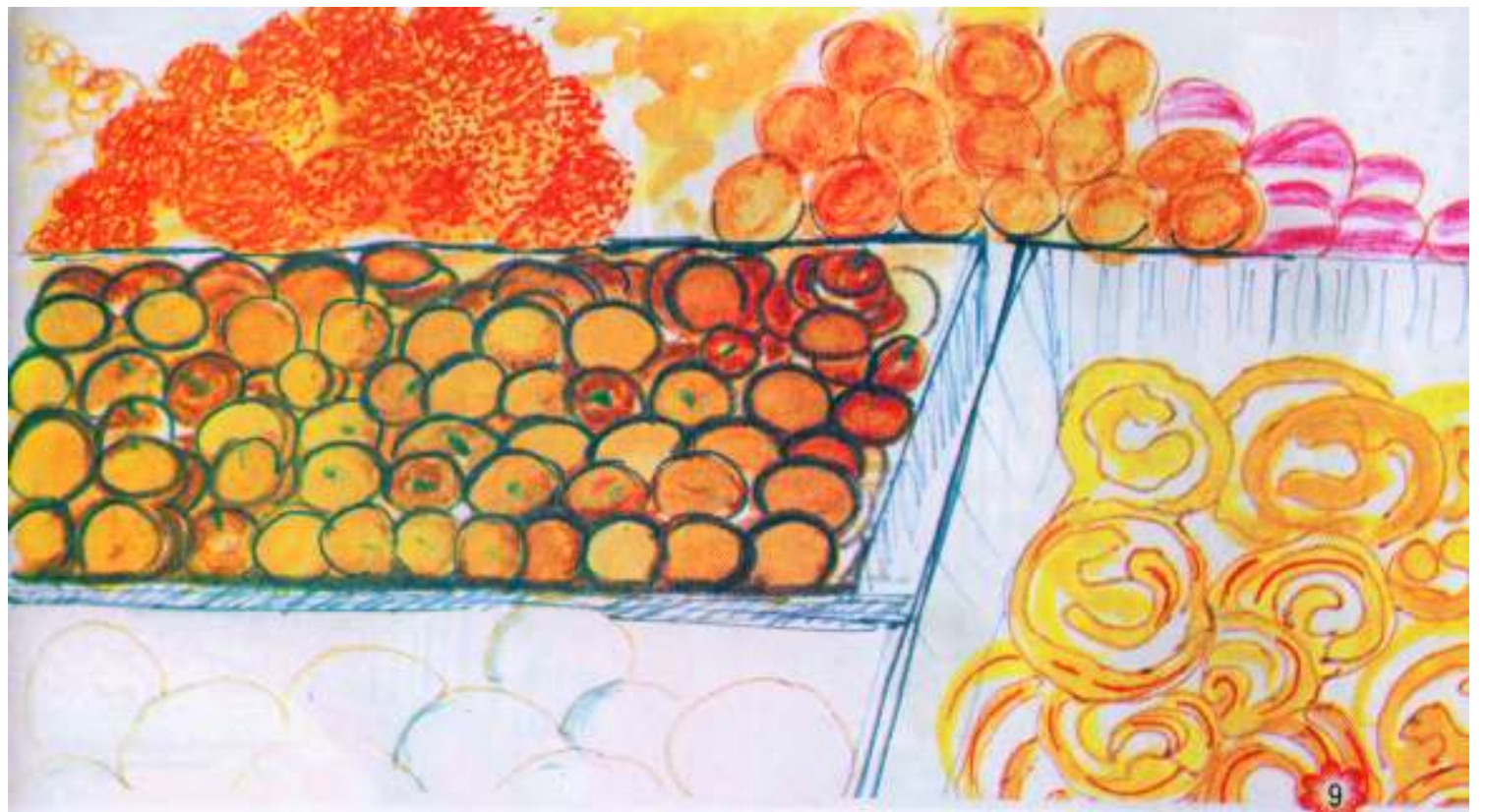
माधव ने मिमी की रस्सी पकड़ रखी थी।  
थोड़ी देर बाद माधव ने रस्सी खोल दी।  
मिमी फ़ौरन इधर-उधर उछलने लगी।  
माधव को मिमी का उछलना-कूदना बहुत पसंद था।



8

बाज़ार में सबसे पहली दुकान हलवाई की थी।  
दुकान में खूब सारी मिठाइयाँ थीं।  
हलवाई के पास खूब सारे लड्डू और रसगुल्ले थे।  
उसके पास बहुत सारा दूध, दही और शरबत भी था।





तभी माधव की नज़र दूसरी तरफ़ की मिठाइयों पर पड़ी।  
वहाँ रसगुल्ले, जलेबी और पेड़े रखे हुए थे।  
माधव सोचने लगा कि मिमी के लिए क्या ले।  
एक दोना जलेबी कैसी रहेगी?



अगली दुकान कपड़ों की थी।

दुकान पर बहुत सारे लोग कपड़े खरीद रहे थे।

वहाँ कमीज़ें, कुर्ते और पाजामे लटके हुए थे।

कुछ कपड़े शीशे की अलमारियों में रखे हुए थे।





माधव कमीजों की तरफ़ देखने लगा।  
उसने पीली, नीली, हरी और गुलाबी कमीजें देखीं।  
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।  
लाल छींट वाली कॉलर की कमीज़ कैसी रहेगी?



अगली दुकान बर्तनों की थी।  
दुकान पर खूब सारे बर्तन थे।  
वहाँ बहुत सारे बर्तन स्टील के थे।  
कुछ बर्तन पीतल के भी थे।





माधव सारे बर्तनों को देखने लगा।  
वहाँ थालियाँ, कटोरियाँ, चम्मचें और गिलास रखे हुए थे।  
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।  
दूध के लिए एक कटोरा कैसा रहेगा?



14

अगली दुकान लुहार की थी।  
उसकी दुकान पर तरह-तरह की चीज़ें थीं।  
वहाँ तवे, कड़छी, जंजीरें और खूब सारी कीलें थीं।  
लुहार गर्म-गर्म भट्टी पर कुछ बना रहा था।



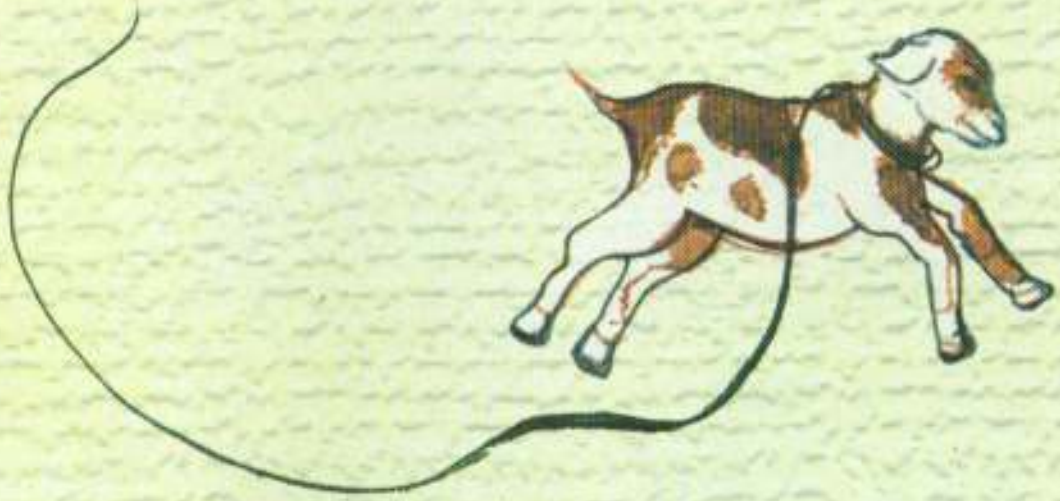
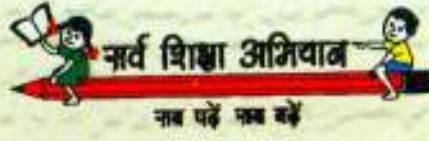


माधव ने चारों तरफ़ नज़र घुमाई।  
माधव सोचने लगा कि वह मिमी के लिए क्या ले।  
उसकी नज़र घुँघरुओं पर पड़ी।  
माधव ने मिमी के लिए घुँघरू ले लिए।



माधव ने मिमी के दोनों पैरों में घुँघरू पहना दिए।  
घुँघरू लाल रंग के सुंदर से धागे में बँधे हुए थे।  
मिमी कूदती-फाँदती माधव के साथ चल दी।  
सब लोग उसके घुँघरूओं की छुन-छुन सुनने लगे।





2090



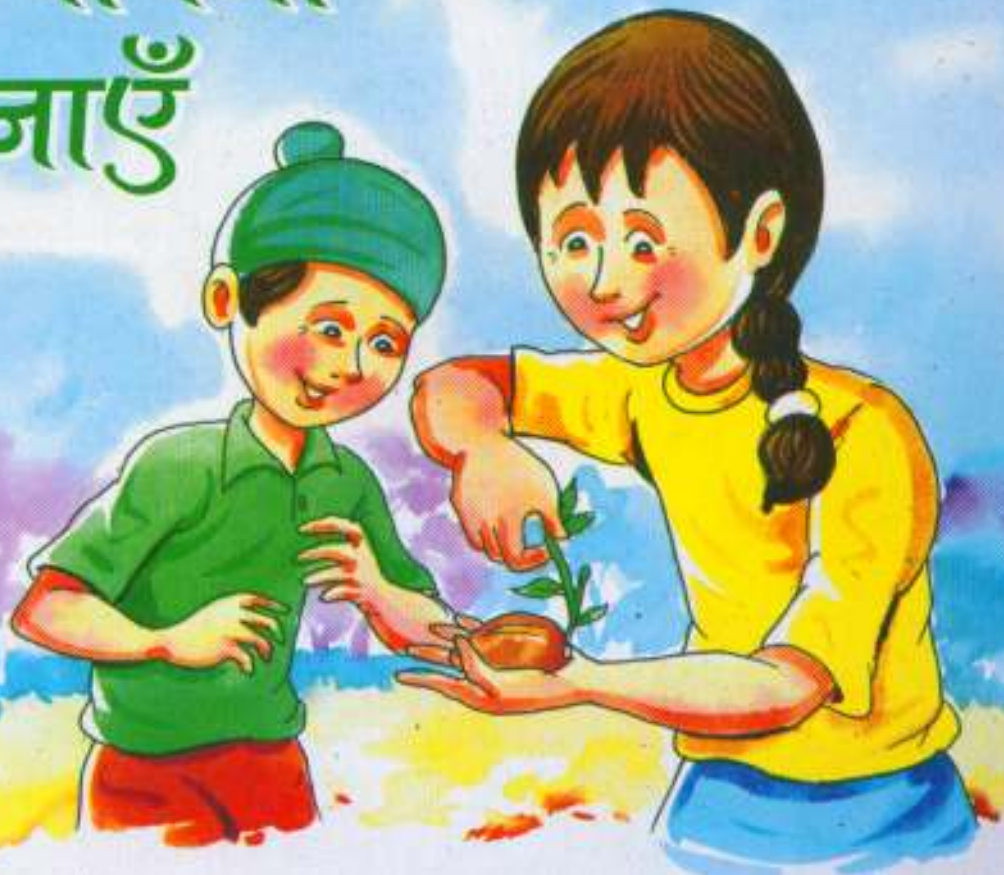
रु 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पढ़ना है समझना

# चलो पीपनी बनाएँ





**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

**PD 10T NSY**

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलटल विश्वास, मुकेश मल्लवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सवस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**चित्रांकन** – निधि बाधवा

**सज्जा तथा आवरण** – निधि बाधवा

**डि.टी.पी. ऑपरेटर** – अर्चना गुप्ता, अशुत गुप्ता, सीमा पाल

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफेसर फरीद अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिना मिलन इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वचंद, रोडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुवाहट हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंबर, जबपुर।

80 जी.एस.एस. केस पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, माइटे-ए, मधुप 281004 द्वारा मुद्रित।

**ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)**

**978-81-7450-892-8**

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोचकता की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापा तथा इलेक्ट्रॉनिकी, यहाँ तक कि फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण नहीं है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. केम्प, श्री अरविन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 109 पीपल रोड, इली एक्सप्रेसवे, होम्बेकरे, बरसावती III स्टेशन, बंगलूर 560 085 फ़ोन : 080-26725740
- नवजीवन टाउट फ्लोर, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद-380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.इन्फ्यू.सी. केम्प, लिफ्ट-थमरुल वाम स्टॉप चौकटो, कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530434
- सी.इन्फ्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगौन, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : सी. राजकुमार मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : जेनेत उण्णल मुख्य व्यापक प्रबंधक : तीर्थम मंगुली

# चलो पीपनी बनाएँ



बबली



मदन



नाज़िया



जीत





एक दिन बबली बहुत खुश थी।  
वह सारे घर में पी-पी करती घूम रही थी।  
उसने अपने लिए एक पीपनी बनाई थी।  
पीपनी में से बड़े ज़ोर की आवाज़ निकलती थी।



नाज़िया और मदन उसके घर आए थे।  
मदन का मन पीपनी बजाने को कर रहा था।  
उसने बबली से पीपनी माँगी।  
बबली ने पीपनी देने से मना कर दिया।





मदन बोला कि मुझे पीपनी बनाना सिखा दो।  
नाज़िया भी पीपनी बनाना सीखना चाहती थी।  
बबली सिखाने के लिए मान गई।  
वह सबको लेकर घर के बाहर गई।



बबली ने सबसे आम की गुठलियाँ ढूँढ़ने के लिए कहा।  
बाहर आम के बहुत सारे छोटे-छोटे पौधे दिख रहे थे।  
कई पौधे गुठलियों में से निकले हुए थे।  
सब आम की गुठलियाँ ढूँढ़ने में जुट गए।





बबली ने समझाया कि आम की कैसी गुठली चाहिए।  
गुठली में से छोटा-सा पौधा निकला होना चाहिए।  
सबसे पहले नाज़िया को आम की वैसी गुठली मिली।  
फिर मदन और जीत को भी गुठलियाँ मिल गईं।



बबली ने सबसे गुठलियाँ धोने के लिए कहा।  
आँगन में एक बाल्टी में पानी रखा हुआ था।  
सबने बाल्टी में डालकर अपनी गुठली साफ़ की।  
सबको इकट्ठे बाल्टी में हाथ डालने में बड़ा मज़ा आया।





बाल्टी का पानी गंदा हो गया था।  
सबने फिर नल पर अपनी गुठली धोयी।  
नल की धार में गुठली का सारा कचरा निकल गया।  
सबकी गुठलियाँ एकदम साफ़ हो गईं।



बबली ने फिर गुठली का छिलका निकालने को कहा।  
उसने एक गुठली का छिलका निकाल कर दिखाया।  
सबने अपनी-अपनी गुठली के छिलके निकाल लिए।  
छिलकों के अंदर से एक और गुठली निकल आई।





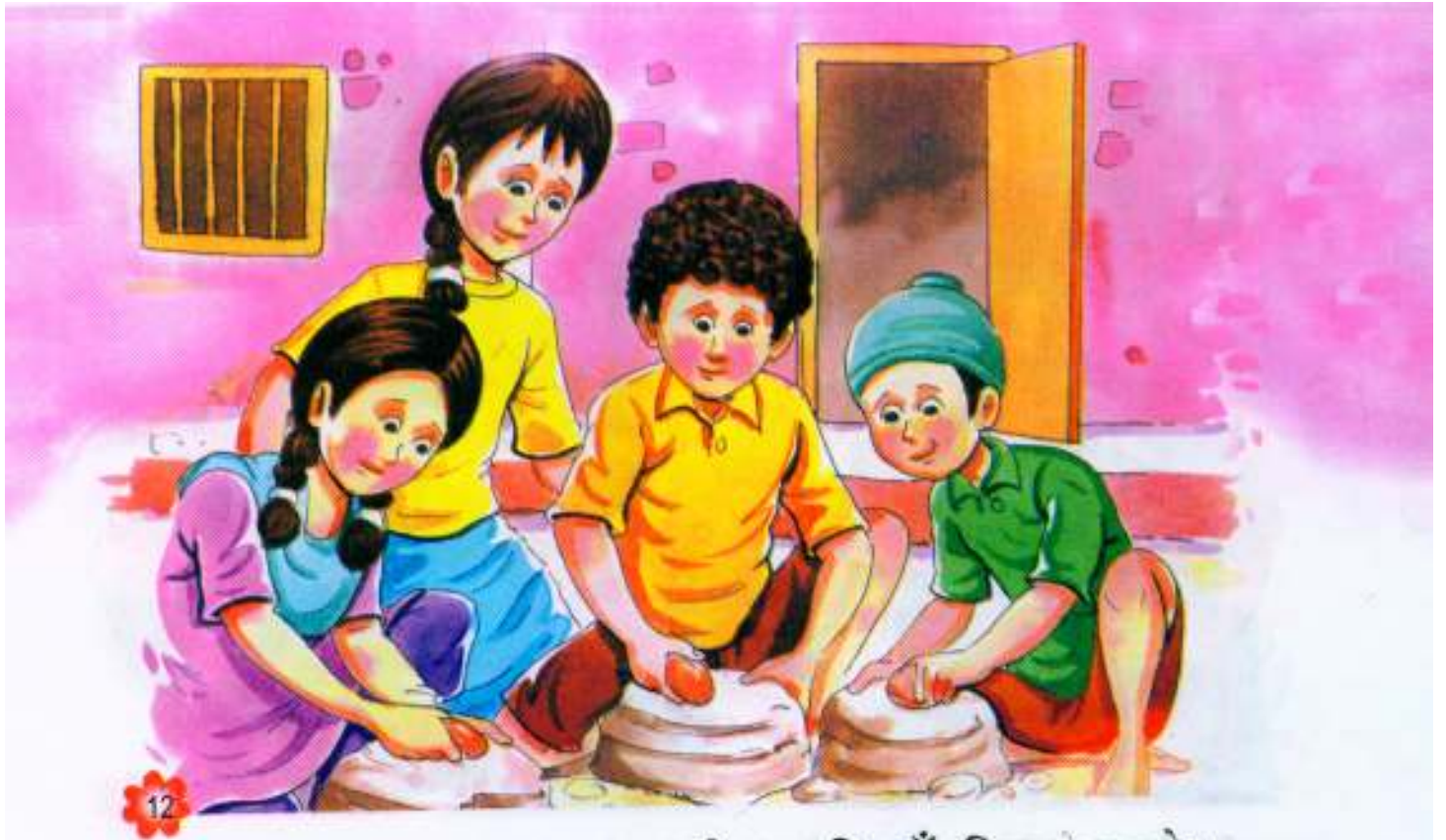
10

सब अंदर की गुठली को ध्यान से देखने लगे।  
गुठली में से आम की खुशबू आ रही थी।  
हर गुठली में से छोटा-सा पौधा निकला हुआ था।  
सबने धीरे-से उस पौधे को अलग किया।



बबली ने सबसे गुठलियाँ घिसने के लिए कहा।  
बबली ने समझाया कि गुठली को धीरे-से घिसना चाहिए।  
गुठली तब तक घिसो जब तक दो फाँकें न दिखने लगें।  
बबली ने एक गुठली घिसकर दिखाई।





12

सब पत्थर पर अपनी गुठलियाँ घिसने लगे।  
मदन ने अपनी गुठली बहुत धीरे घिसी।  
नाज़िया ने अपनी गुठली ज़ोर-ज़ोर से घिसी।  
जीत ने भी गुठली घिस ली।



सबकी गुठलियों में दो फाँकें दिखने लगीं।  
बबली ने बताया कि पीपनी बन गई थी।  
उसने सबकी पीपनी हाथ में लेकर देखी।  
बबली ने मदन की पीपनी थोड़ी और घिसी।





बबली ने पीपनी में फूँकने के लिए कहा।  
मदन अपनी पीपनी पी-पी करके बजाने लगा।  
वह पी-पी करते हुए भागा।  
नाज़िया की पीपनी तो बजी ही नहीं।



बबली ने नाज़िया से दूसरी गुठली लाने के लिए कहा।  
नाज़िया एक और गुठली लेकर आयी।  
उसने अपनी गुठली को धोया और घिसा।  
इस बार नाज़िया की पीपनी बज गई।





नाज़िया ने खूब ज़ोर से पीपनी बजायी।  
मदन भी ज़ोर-ज़ोर से पीपनी बजा रहा था।  
जीत की पीपनी भी बज रही थी।  
सबने खुश होकर अपनी-अपनी पीपनी बजायी।



2091



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



# तबला



पढ़ना है समझना





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता घण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सोमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - जोएल गिल

संज्ञा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, चैतन चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, माध्यमिक विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
देवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, प्रिण्टर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में राखिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अखिल मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, ए-28, इंदिरापुरा एरिया, राइट-ए,  
मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धा-बैट)

978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में सज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिरूप, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरवि मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 108 फ्लैट रोड, हेवी इन्फ्रस्ट्रक्चर, होस्टेल्, बरालाकरी III फ्लैट, बंगलुरु 560 085  
फ़ोन : 080-26725746
- नवजीवन टुन्डू भवन, इन्फ्रस्ट्रक्चर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.इन्फ्रस्ट्रक्चर, कैंपस, निकटः धनकुल बस स्टॉप पवित्राटी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25510454
- सी.इन्फ्रस्ट्रक्चर, कॉम्प्लेक्स, मालीगौन, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2678869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार  
मुख्य संपादक : रवींद्र ठाकुर

मुख्य तालाबन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यवहार अधिकारी : शैलम नागुर्ती



# तबला



पापा



बबली



जीत



2

यह जीत के पापा हैं।  
इनके पास एक तबला है।  
जीत के पापा बहुत अच्छा तबला बजाते हैं।  
जीत को पापा का तबला बजाना बहुत पसंद है।





जीत का मन भी तबला बजाने को करता है।  
पापा तबले को हमेशा अलमारी में बंद रखते हैं।  
पापा कहते हैं कि वह जीत को तबला बजाना सिखाएँगे।  
उसके बाद जीत को तबला मिलेगा।



4

जीत के स्कूल की छुट्टियाँ हो गई थीं। वह बहुत खुश था।  
जीत ने सोचा कि वह रोज़ सुबह देर तक सोएगा।  
उसे सुबह जल्दी उठकर नहाना भी नहीं पड़ेगा।





कुछ दिनों तक जीत खूब सोया।  
वह दिनभर खेलता था।  
कहानियों की किताबें पढ़ता था।  
रात को जल्दी सो जाता था।



6

इन सबसे जीत का मन जल्दी ही ऊब गया।  
पापा ने देखा कि जीत ऊबा हुआ लग रहा था।  
पापा ने उसे अपना पुराना तबला दे दिया।  
जीत तबला पाकर बहुत खुश हुआ।





पापा ने जीत को तबला सिखाना शुरू किया।  
उन्होंने जीत को तबले की पहली ताल सिखाई।  
जीत दिनभर यह ताल बजाता रहा।  
ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना



8

जीत रात को तबला अपने पास रखकर सोया।  
वह सपने में भी पहली ताल बजाता रहा।  
जीत नींद में पहली ताल बोलता भी रहा।  
ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना





सुबह होते ही जीत पापा के पास तबला लेकर बैठ गया।  
पूरे घर में तबले की ना-घी-घी-ना गूँज रही थी।  
जीत की कलाई में दर्द होने लगा।  
इसके बावजूद जीत तबला बजाता रहा।



पापा ने जीत को तबले की एक और ताल सिखा दी।  
धा-धिन-धा, धा-धिन-धा  
जीत के मजे आ गए।  
वह रात तक बारी-बारी से दोनों तालें बजाता रहा।





सुबह होते ही जीत का मन हुआ कि तबला बजाए।  
उसने रात को तबला बरामदे में छोड़ा था।  
तबला बरामदे में नहीं था।  
जीत गाने लगा ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना।



12

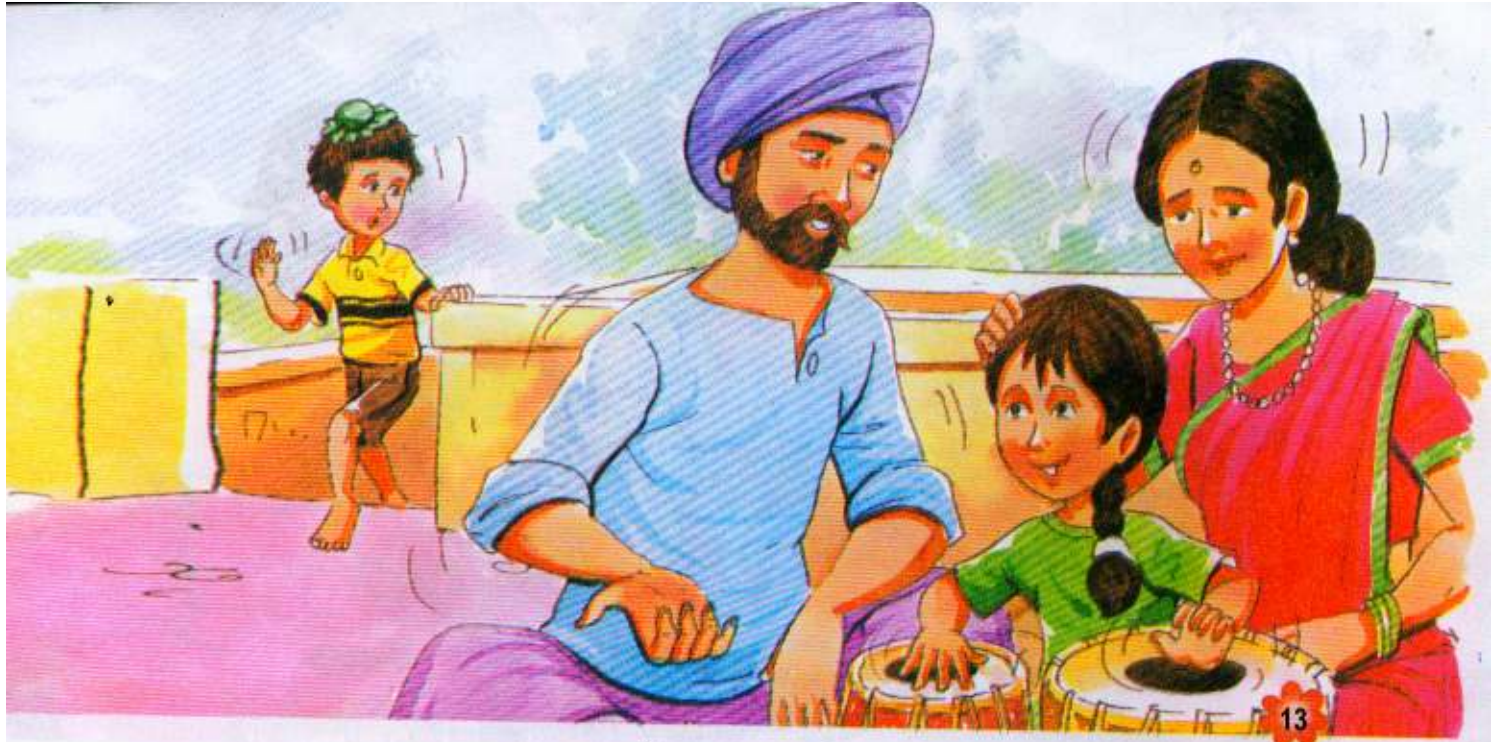
जीत आँगन में गया।

उसे लगा पापा ने तबला धूप दिखाने के लिए रखा होगा।

तबला आँगन में नहीं था।

तभी जीत को तबला बजने की आवाज़ सुनाई दी।





आवाज़ छत पर से आ रही थी।  
जीत छत पर गया।  
वहाँ मम्मी, पापा और बबली बैठे हुए थे।  
बबली तबला बजा रही थी।



पापा बबली को भी पहली ताल सिखा रहे थे।  
ना-घी-घी-ना, ना-घी-घी-ना।  
बबली ताल गा रही थी और उसे बजा रही थी।  
मम्मी भी बबली का तबला बजाना देख रही थीं।





जीत बबली से लड़ने लगा।  
वह बोला कि तबला उसका है।  
जीत ने बबली से तबला छीनने की कोशिश की।  
बबली बोली कि तबला उसका भी है।



16

पापा ने दोनों की लड़ाई रोकी।  
पापा बोले कि तबला दोनों के लिए है।  
बबली सुबह तबला बजाना सीखेगी।  
जीत शाम को तबला बजाना सीखेगा।



स्तर 1

स्तर 2

स्तर 3

स्तर 4



2092



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



पढ़ना है समझना

# मिली की साइकिल





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता घाण्ड़े, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सोम कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

धिप्रांकन - जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी, ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, पाठ्य विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
देवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्या; प्रोफेसर फरीद अहमदुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वादे, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. राधनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, डिग्रेडर, जयपुर।

80) जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, खे-28, इन्डियन एरिया, साइट-ए,  
मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-मेट)  
978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को प्रतिलिपि तैयार करना, प्रसारित करना, फोटोकॉपी करना, डिजिटल रूप में प्रसारित करना, या किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. केंद्र, श्री अरविन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फ्लैट रोड, डेवी एम्बरेशन, होस्टेलेर, बाराकरी III ब्लॉक, जयपुर 360 085  
फोन : 089-26725746
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाक्टर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकुल बस स्टॉप पतिहटी, कोलकाता 700 014  
फोन : 033-25510454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगंज, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2678869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार  
मुख्य संपादक : रवींद्र ठाकुर

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यवहार अधिकारी : नीलम चौधरी

# मिली की साइकिल



मिली की मम्मी



तोसिया



मिली





एक दिन मिली खेल रही थी।  
उसने कुछ बच्चों को साइकिल चलाते हुए देखा।  
मिली का मन भी साइकिल चलाने को हुआ।  
मिली ने मम्मी-पापा से एक साइकिल माँगी।



3

अगले दिन पापा ने मिली को एक साइकिल ला दी।  
साइकिल थोड़ी पुरानी थी पर अच्छी हालत में थी।  
मिली उसे देखकर बहुत खुश हुई।  
लाल रंग की साइकिल पर नीली गद्दी थी।





मिली ने मम्मी से साइकिल सिखाने के लिए कहा।  
मम्मी मिली को साइकिल चलाना सिखाने लगीं।  
वे दोनों सुबह जल्दी उठकर एक खुले मैदान में गईं।  
मिली ने साइकिल सीखना शुरू कर दिया।



मम्मी ने मिली को साइकिल की गद्दी पर बैठाया।  
मिली ने साइकिल का हैंडल दोनों तरफ़ से पकड़ लिया।  
मिली ने धीरे-धीरे पैडल मारे।  
मम्मी हैंडल और गद्दी से साइकिल को पकड़े रहीं।





थोड़ी देर में मम्मी ने साइकिल छोड़ दी।  
मिली साइकिल के भार को सँभाल नहीं पायी।  
वह साइकिल से गिर गई।  
उसके हाथ में थोड़ी-सी चोट लग गई।



मिली थोड़ी देर तक रोई फिर साइकिल चलाने लगी।  
मिली दोबारा साइकिल पर बैठी।  
मम्मी ने साइकिल सँभाली।  
मिली धीरे-धीरे साइकिल चलाती रही।





अगले दिन दोनों फिर सुबह मैदान में पहुँच गईं।  
आज मम्मी ने साइकिल पीछे से पकड़ी।  
मिली की साइकिल चारों तरफ़ डगमगा रही थी।  
मिली ऐसे ही काफ़ी देर तक साइकिल चलाती रही।



उस दिन मिली ने शाम को भी साइकिल चलाना सीखा।  
मिली अकेले ही साइकिल को हाथ से खींचती रही।  
उसने साइकिल पर चढ़ने की काफ़ी कोशिश की।  
मिली अकेले साइकिल पर चढ़ नहीं पाई।





अगले दिन सुबह मिली की साइकिल डगमगाई नहीं।  
वह मम्मी की मदद से साइकिल पर चढ़ गई।  
मम्मी साइकिल के पीछे-पीछे चल रही थीं।  
मिली साइकिल को धीरे-धीरे चलाती रही।



थोड़ी देर बाद मिली साइकिल को दौड़ाने लगी।  
मम्मी उसके पीछे-पीछे भागीं।  
थोड़ी देर बाद मम्मी ने साइकिल छोड़ दी।  
कुछ दूर जाकर मिली साइकिल से गिर गई।





मिली को साइकिल चलाना आ गया था।  
मिली साइकिल पर अपने-आप चढ़ नहीं पाती थी।  
मिली अपने-आप साइकिल से उतर भी नहीं पाती थी।  
मिली को साइकिल से चढ़ना-उतरना सीखना था।



मिली दिनभर साइकिल के बारे में सोचती रहती थी।  
उसके हाथ हैंडल की तरह चलते रहते थे।  
वह रात को भी सपने में साइकिल चलाती थी।  
सुबह होते ही साइकिल लेकर निकल पड़ती थी।





मिली सीधी-सीधी साइकिल चला लेती थी।  
उसे साइकिल से उतरने-चढ़ने में मुश्किल होती थी।  
वह साइकिल से उतरते समय गिर जाती थी।  
मिली को साइकिल ऊँची लगती थी।



साइकिल पर बैठकर मिली के पैर नीचे नहीं टिकते थे।  
मिली कई बार गिर चुकी थी।  
इसके बावजूद वह खुश रहती थी।  
उसने तोसिया को यह बात बताई।





तोसिया ने उसे एक बड़ा-सा पत्थर दिखाया।  
मिली पत्थर पर पैर रखकर साइकिल पर चढ़ गई।  
अब तो मिली के मज़े आ गए।  
दोनों स्कूल भी साइकिल से जाने लगीं।



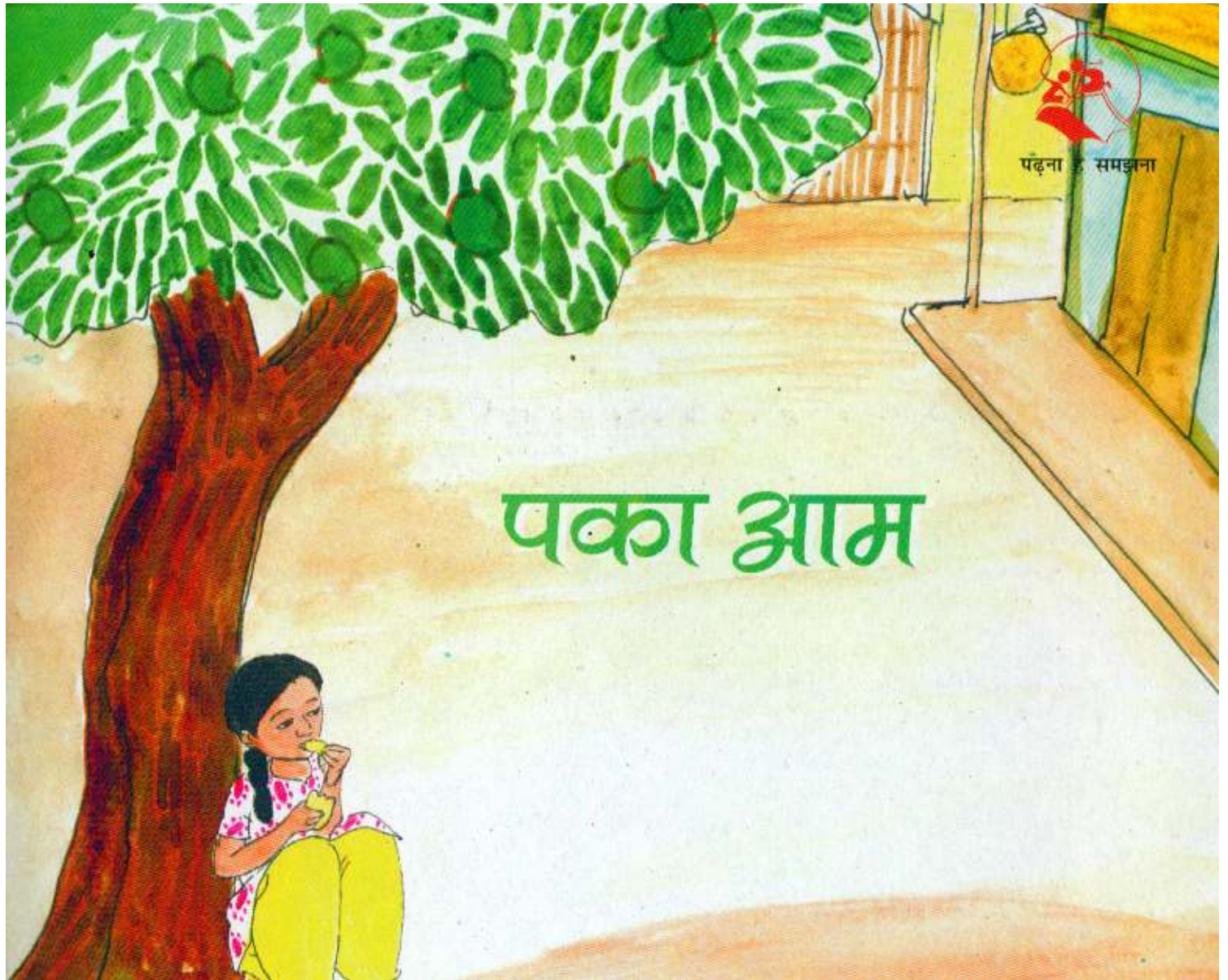
2093



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING





# पका आम

प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मलवीय,  
राधिका मेनन, शारिली शर्मा, लता घाण्ड़े, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सोम कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

धिशांकन - जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.टी.पी, ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वदुषा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, पाठ्य विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
देवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्या; प्रोफेसर फरीद अहमदुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. राखनम सिन्हा, सी.ई.ओ. आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, डिग्री, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अश्विन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, खे-28, इंदिरापुरम एरिया, साइट-ए,  
मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-मेट)  
978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्णअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को ज्ञापन तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिप्रॉड्यूसिंग, स्कैनिंग, अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग या प्रतिलिपि द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अश्विन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फ्लैट रोड, हेम्ली एम्बेडमेंट, होम्बेकरे, बरसातकरी III फ्लैट, जयपुर 360 085  
फ़ोन : 089-26725748
- नवजीवन टुस्ट भवन, राजकपूर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.एच.एल.सी. कैंपस, निकट, धनकुल बस स्टॉप पिनकोड, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- सी.एच.एल.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगंज, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2678869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार  
मुख्य संपादक : रवींद्र ठाकुर

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यवहार अधिकारी : नीलम तनुजी



# पका आम



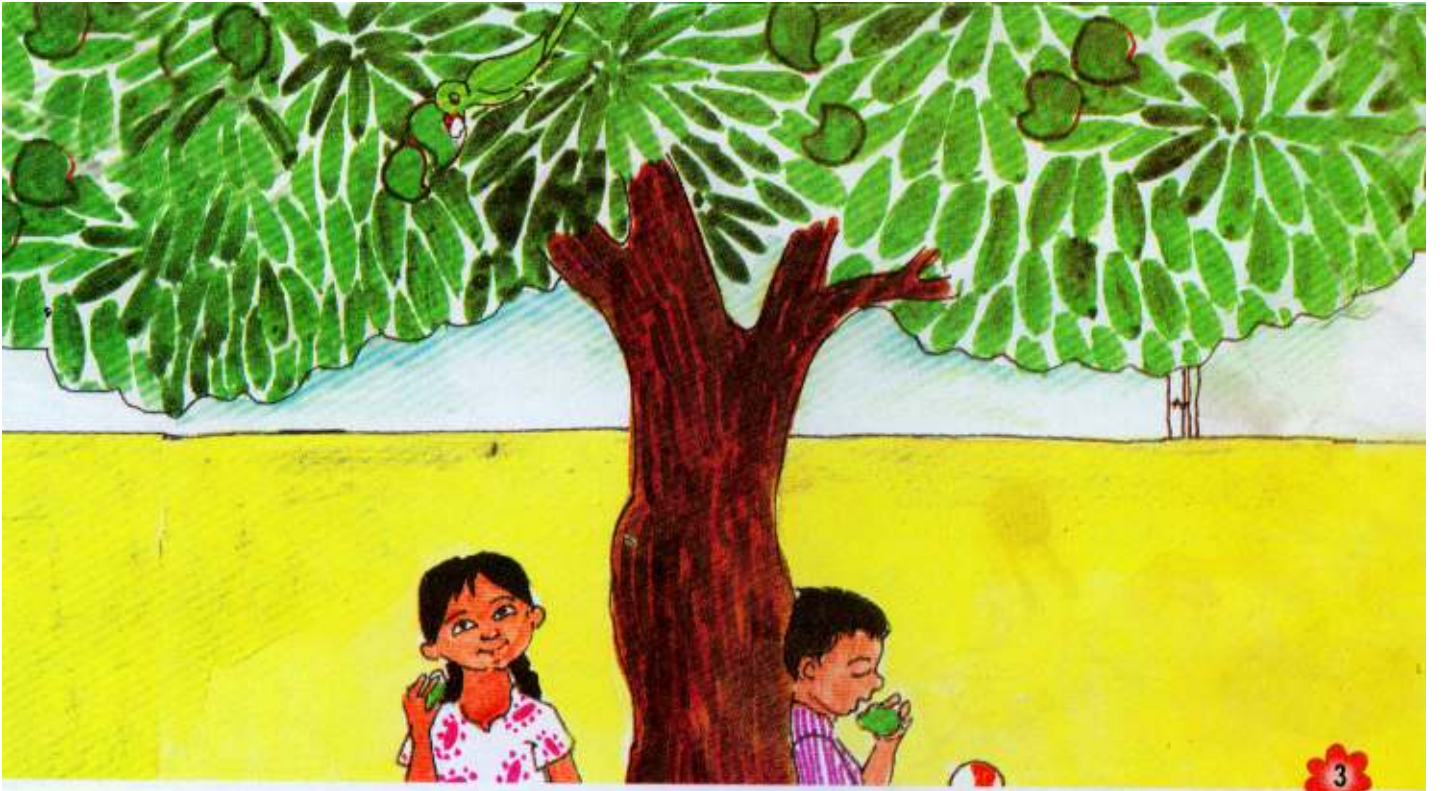
तोसिया



2

तोसिया के स्कूल में एक आम का पेड़ था।  
उस पर बहुत आम लगते थे।  
स्कूल के सभी बच्चे उसके आम खाते थे।  
कभी-कभी आम के पेड़ पर बंदर भी आते थे।





उस पेड़ के आम कभी पक ही नहीं पाते थे।  
बच्चे कच्चे आम ही खा जाते थे।  
तोते भी हरे आम कुतरते रहते थे।  
तोसिया भी कच्चे आम पर नमक लगाकर खाती थी।



4

स्कूल के पीछे एक छोटा-सा तालाब था।  
तालाब के किनारे एक बड़ी-सी चट्टान थी।  
तोसिया की माँ उस चट्टान पर कपड़े धोती थी।  
तोसिया भी अपनी माँ के साथ वहाँ आती थी।





एक दिन तोसिया माँ के साथ तालाब पर आई।  
तोसिया ने माँ के साथ कपड़े धुलवाए।  
उसने माँ के साथ कपड़े चट्टान पर सूखने के लिए डाले।  
कपड़े सुखाते समय उसकी नज़र आम के पेड़ पर गई।



6

तोसिया ने देखा सबसे ऊँची डाली पर एक आम था।  
वह आम बिल्कुल पका हुआ था।  
आम पत्तों के बीच में छुप गया था।  
उसे न तोतों ने देखा था न बच्चों ने।





7

उस दिन तेज़ धूप थी इसलिए कपड़े जल्दी सूख गए।  
तोसिया ने माँ के साथ कपड़े उठवाए।  
फिर वे दोनों घर की तरफ़ चल पड़ीं।  
तोसिया चलते-चलते आम को ही देख रही थी।



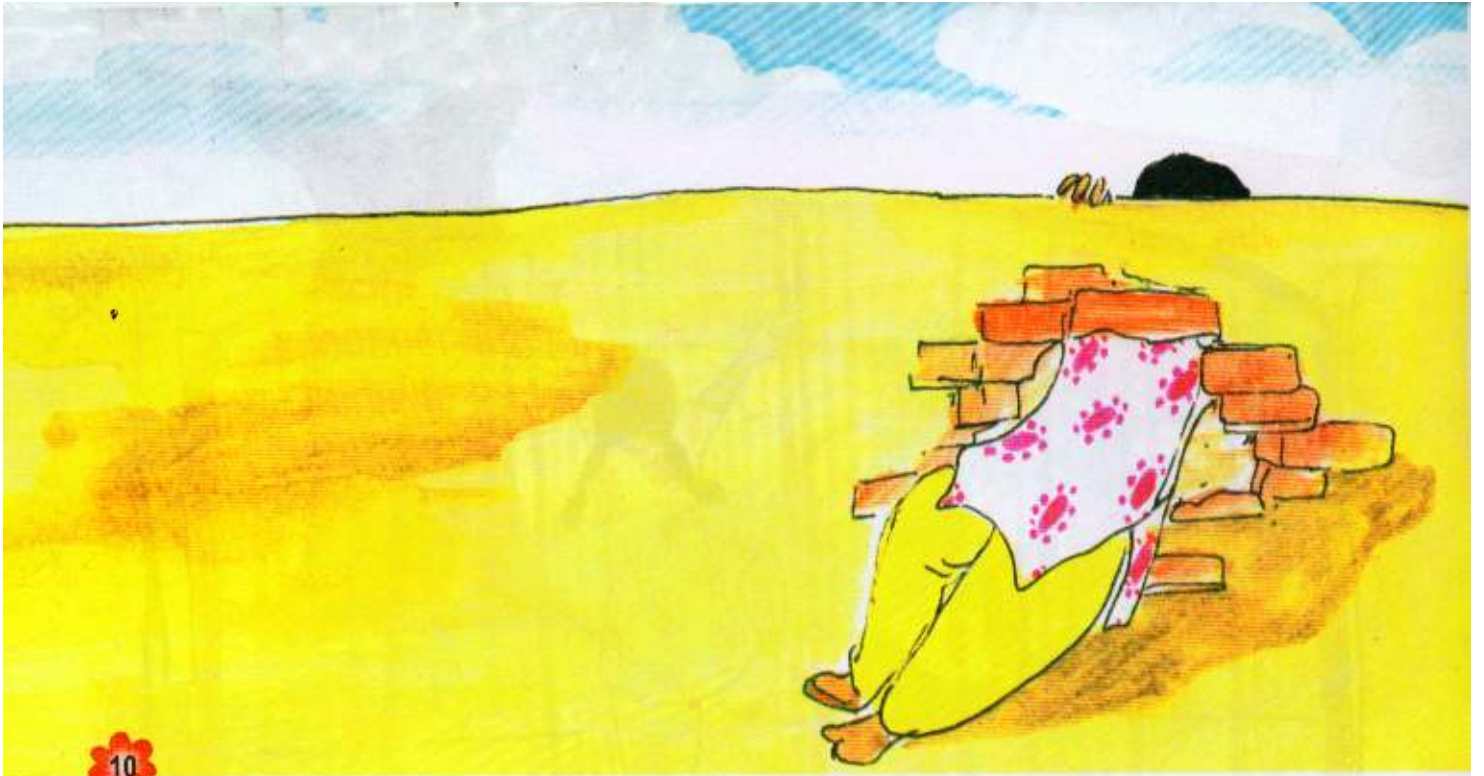
8

घर में सबने दोपहर का खाना खाया।  
खाना खाकर सब सो गए।  
तोसिया चुपचाप घर से निकल कर बाहर आ गई।  
उसने चप्पल नहीं पहनी जिससे कि आवाज़ न आए।





तोसिया नंगे पैर स्कूल पहुँची।  
तोसिया ने स्कूल के फ़ाटक पर चढ़ने की कोशिश की।  
फ़ाटक का लोहा बहुत गरम हो गया था।  
तोसिया फ़ाटक पर चढ़ नहीं पाई।



10

तोसिया स्कूल की चारदीवारी के साथ-साथ चली।  
वह उस कोने में पहुँची जहाँ कुछ ईंटें निकली हुई थीं।  
तोसिया उन ईंटों के सहारे दीवार पर चढ़ी।  
वह आसानी से दीवार के उस पार कूद गई।





स्कूल में सन्नाटा था।  
सारे कमरों पर ताला लगा हुआ था।  
तोसिया भाग कर आम के पेड़ के पास पहुँची।  
उसे पेड़ पर चढ़ना अच्छी तरह आता था।



12

तोसिया तने को पकड़ कर ऊपर चढ़ी।  
वह एक डाल से दूसरी डाल पर चढ़ रही थी।  
तोसिया डाल पर अपने पैर जमा कर रखती थी।  
आखिर तोसिया सबसे ऊँची डाल पर पहुँच ही गई।





पका हुआ आम तोसिया की आँखों के सामने था।  
आम काफ़ी बड़ा और पीला था।  
तोसिया ने चारों तरफ़ देखा।  
तालाब के किनारे कोई भी नहीं था।



तोसिया ने हाथ बढ़ाकर आम तोड़ लिया।  
नाक के पास लाकर उसे सूँघा।  
तोसिया थोड़ी देर तक डाल पर ही बैठी रही।  
उसे आम की खुशबू अच्छी लग रही थी।





तोसिया सावधानी से पेड़ से नीचे उतरी।  
वह पेड़ की छाया में बैठ गई।  
तोसिया ने आराम से चूस-चूसकर आम खाया।  
उसने आम की गुठली भी चूसी।



16

तोसिया स्कूल की दीवार फाँदकर बाहर आ गई।  
वह दौड़कर घर पहुँची।  
घर में सब सो रहे थे।  
तोसिया भी हाथ धोकर सो गई।



- स्तर 1
- स्तर 2
- स्तर 3
- स्तर 4



2094



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND



पढ़ना है समझना

# गेहूं





**प्रथम संस्करण :** अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण :** दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता शण्ड़े, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सौम्य कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक -** लतिका गुप्ता

**धिप्रांकन -** जोएल गिल

**संज्ञा तथा आवरण -** निधि बाधवा

**डि.टी.पी. ऑपरेटर -** अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

**आभार ज्ञापन**

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशासनिक संस्धान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, पाठ्य विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुल माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

**राष्ट्रीय समीक्षा समिति**

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महान्या राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्या; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वादे, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एच. एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुसहत इमर, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, प्रिण्टर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अश्विन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, ए-28, इंदिरापुरा, साइट-ए, मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-बैट)

978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. केंद्र, श्री अश्विन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 108 फ्लैट रोड, हैली एम्बरेशन, होम्बेकरे, बरालोकरी III स्टेशन, कोल्हापुर 560 085  
फ़ोन : 089-26725746
- नवजीवन टुस्ट भवन, राजस्थान नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.इन्फ़ो.सी. केंद्र, निकट धनकुल बस स्टॉप पवित्रटी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25530454
- सी.इन्फ़ो.टी. कॉम्प्लेक्स, मल्लीशिव, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2678869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. लक्ष्मणम्  
मुख्य संपादक : रवींद्र ठाकुर

मुख्य संपादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यवहार अधिकारी : नीलम नागती

गेहूँ



जमाल



मम्मी



पापा





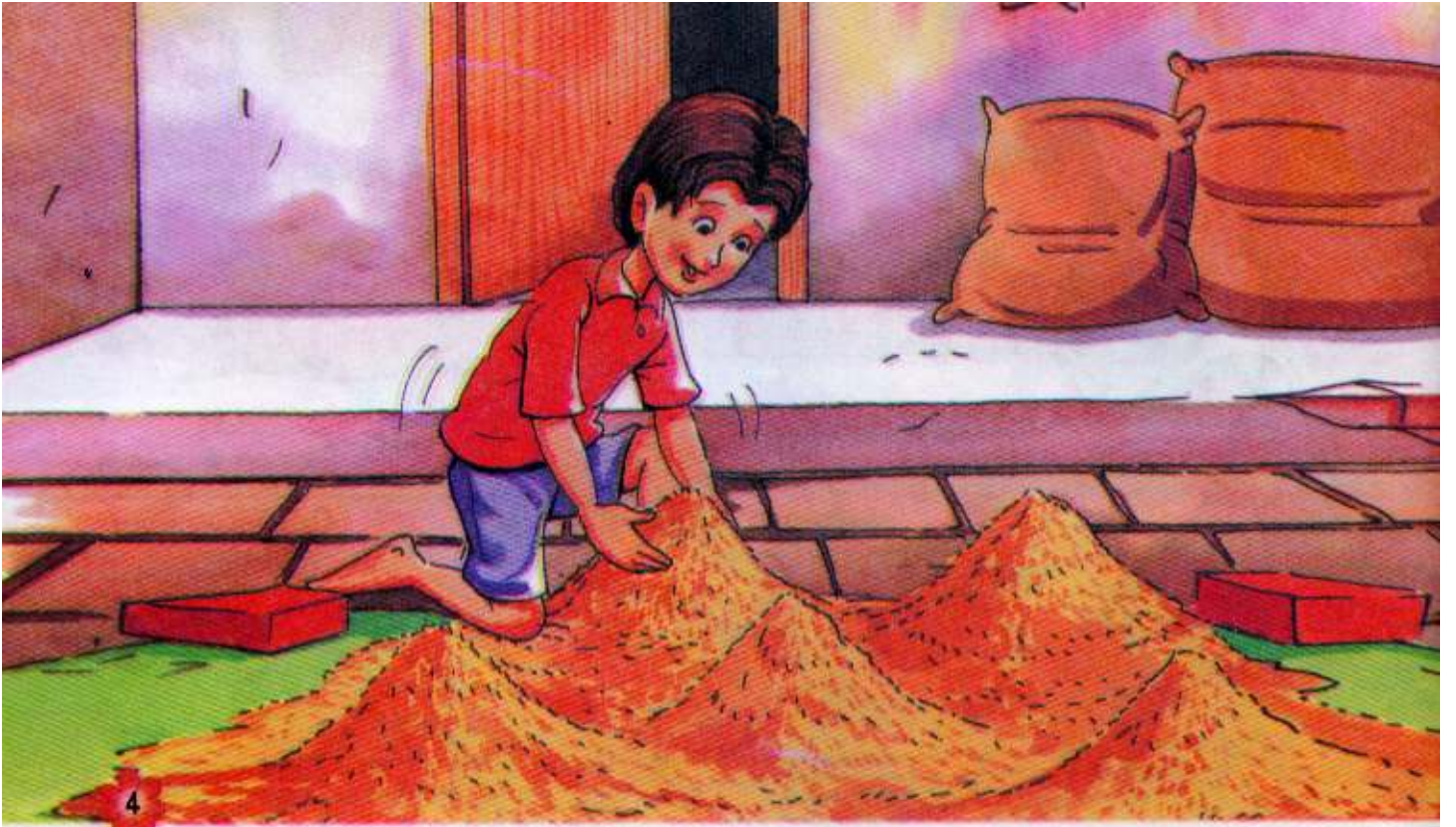
2

एक दिन जमाल की मम्मी ने गेहूँ धोए।  
गेहूँ खूब सारे थे।  
गेहूँ पानी में धुलकर खूब चमक रहे थे।  
जमाल ने मम्मी के साथ गेहूँ धुलवाए।

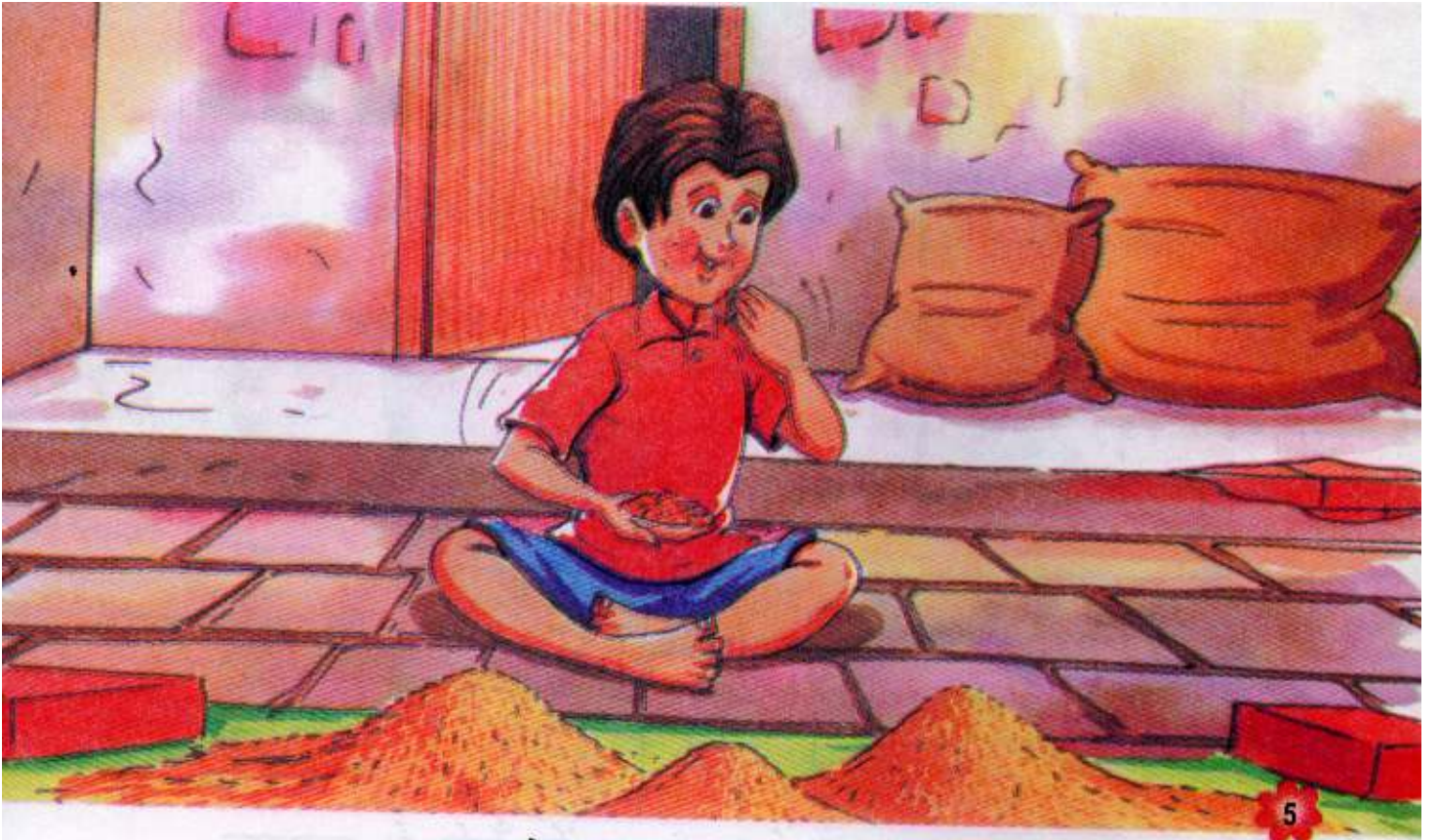


मम्मी ने गेहूँ आँगन में सुखा दिए।  
उन्होंने जमीन पर दो चादरें बिछाईं।  
दोनों चादरों पर गेहूँ फैला दिए।  
जमाल ने भी मम्मी के साथ गेहूँ फैलवाए।





मम्मी थककर सो गई।  
जमाल के तो मजे आ गए।  
उसने गीले गेहूँ के दानों से पहाड़ बनाए।  
एक चादर पर गेहूँ के पाँच पहाड़ बने।



जमाल ने कुछ दाने मुँह में डाले।  
उसने गेहूँ के गीले दाने चबाए।  
खूब चबाए।  
खूब चबाए।





जमाल बिजूका भी बना।  
वह दोनों हाथ फैलाकर खड़ा हो गया।  
तीन चिड़ियाँ गेहूँ के दाने खाने के लिए आईं।  
जमाल ने चिड़ियों को देखा पर भगाया नहीं।





जमाल ने गेहूँ में से अपना नाम भी लिखा।  
उसने पहले अपना नाम हिंदी में लिखा।  
फिर जमाल ने अपना नाम अँग्रेज़ी में लिखा।  
उसने अपने मम्मी-पापा का नाम भी लिखा।





जमाल ने गेहूँ के कुछ दाने हथेलियों में रगड़े।  
खूब रगड़े।  
खूब रगड़े।  
उसकी हथेलियाँ लाल हो गईं।



जमाल थक कर वहीं लेट गया।  
वह लेटकर भी गेहूँ पर उँगली फेरता रहा।  
जमाल को गेहूँ में उँगली फेरते-फेरते नींद आ गई।  
वह सो गया।



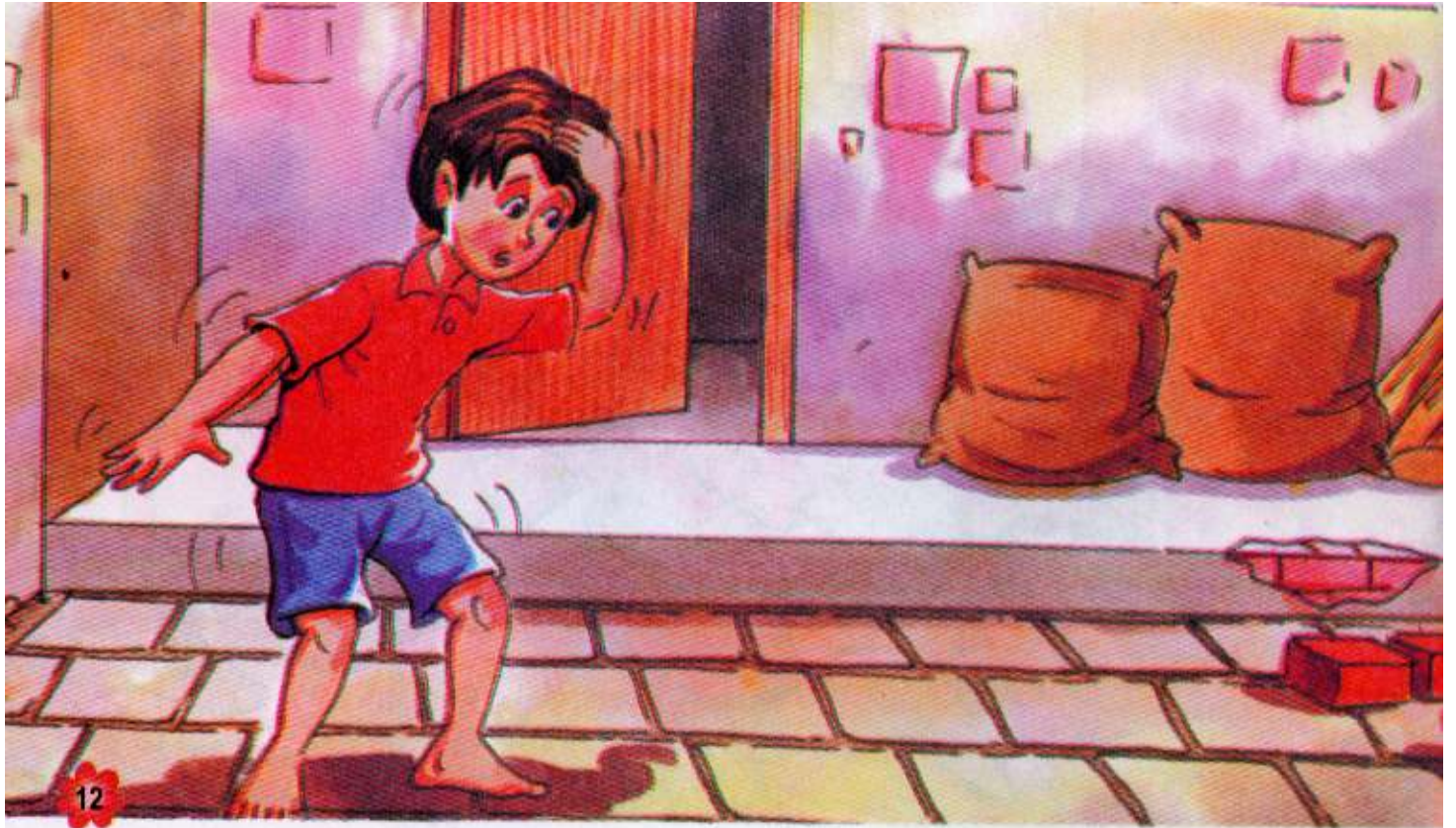


मम्मी ने जमाल को गोद में उठाया।  
उसे ले जाकर बिस्तर पर सुला दिया।  
जमाल गहरी नींद में था।  
वह सोता ही रहा।



जमाल की आँख खुली तो वह बिस्तर पर था।  
उसने उठ कर आस-पास गेहूँ ढँढ़े।  
जमाल तो कमरे के अंदर था।  
गेहूँ आँगन में थे।





जमाल भागकर आँगन में गया।  
वह गेहूँ ढूँढ़ने लगा।  
पर गेहूँ तो वहाँ थे ही नहीं।  
दोनों चादरें भी गायब थीं।



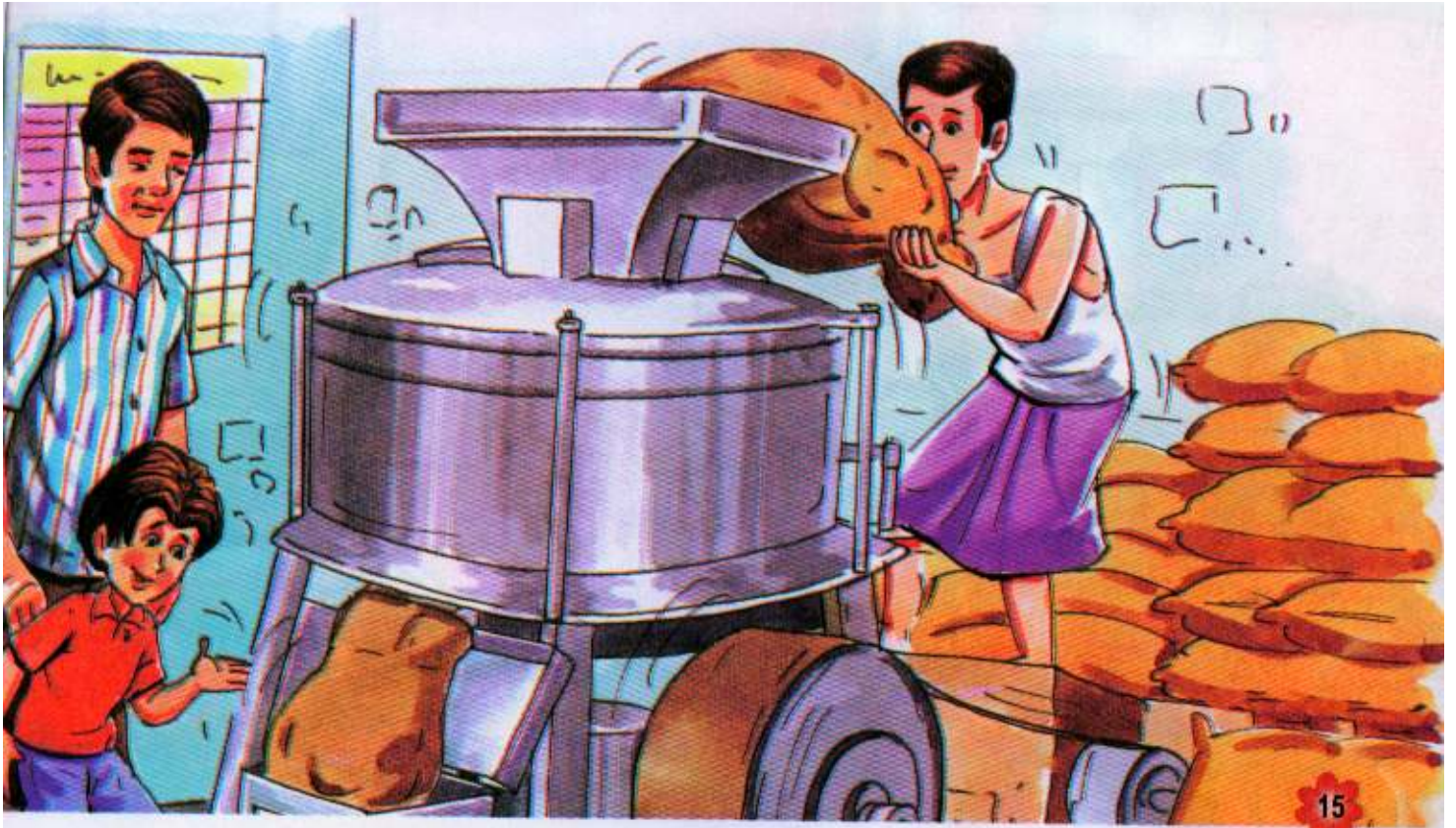
जमाल मम्मी के पास गया।  
मम्मी गेहूँ बीन रही थीं।  
पापा भी गेहूँ बीन रहे थे।  
जमाल फिर गेहूँ से खेलने लगा।





मम्मी-पापा ने गेहूँ एक कनस्तर में भरे।  
पापा ने कनस्तर पकड़ा।  
मम्मी ने उसमें गेहूँ डाले।  
जमाल ने भी कनस्तर में गेहूँ डलवाए।



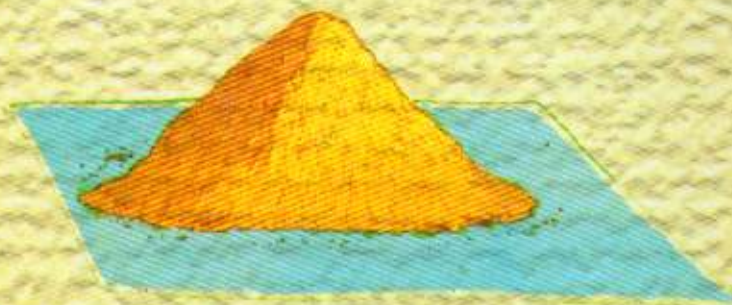


पापा फिर गेहूँ पिसवाने गए।  
जमाल भी उनके साथ गया।  
उसने आटे की चक्की चलते हुए देखी।  
जमाल को आटे की खुशबू बहुत अच्छी लगी।





जमाल और पापा आटा लेकर घर लौटे।  
उन्होंने आटे का कनस्तर रसोई में रखा।  
मम्मी ने ताजा-ताजा आटा गूँधा और रोटियाँ सेंकीं।  
जमाल ने गरम-गरम रोटियाँ खाईं।



2095



रु. 10.00

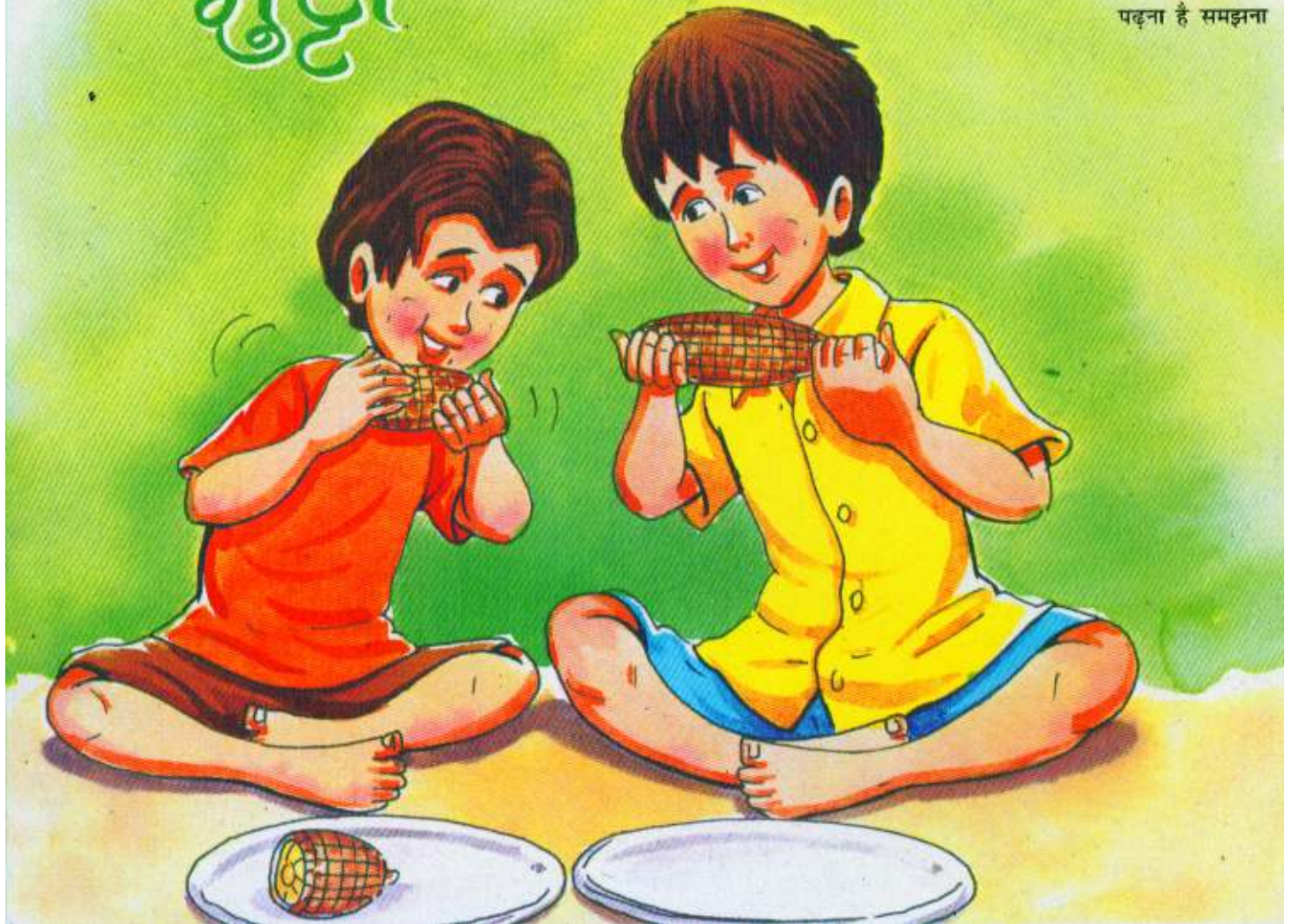
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



# भुट्टा



पढ़ना है समझना





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता षण्ड़े, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सोमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - जोएल गिल

संज्ञा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, चैतन चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, माध्यमिक विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
देवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, प्रिण्टर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में राखिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अश्विन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, ए-28, इंदिरापुरा एरिया, साइट-ए,  
मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-बैट)

978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में सज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अश्विन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016, फ़ोन : 011-26562708
- 108, 108 फ्लैट रोड, हेल्थी एम्प्लोयर्स, होस्टेल्, बरालाकरी III फ्लैट, बंगलुरु 560 085  
फ़ोन : 080-26725746
- नवजीवन टुन्डू भवन, इन्दिरा नवजीवन, अहमदाबाद 380 014, फ़ोन : 079-27541446
- सी.इन्फो.सी. कैंपस, निकटः धनकुल बस स्टॉप पवित्रटी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25510454
- सी.इन्फो.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगौन, गुवाहाटी 781 021, फ़ोन : 0361-2678869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार  
मुख्य संपादक : रवीन्द्र ठाकुर

मुख्य तालाबन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य व्यवहार अधिकारी : शैलम नागुर्ती



# भुट्टा



मदन



जमाल



पापा के दोस्त

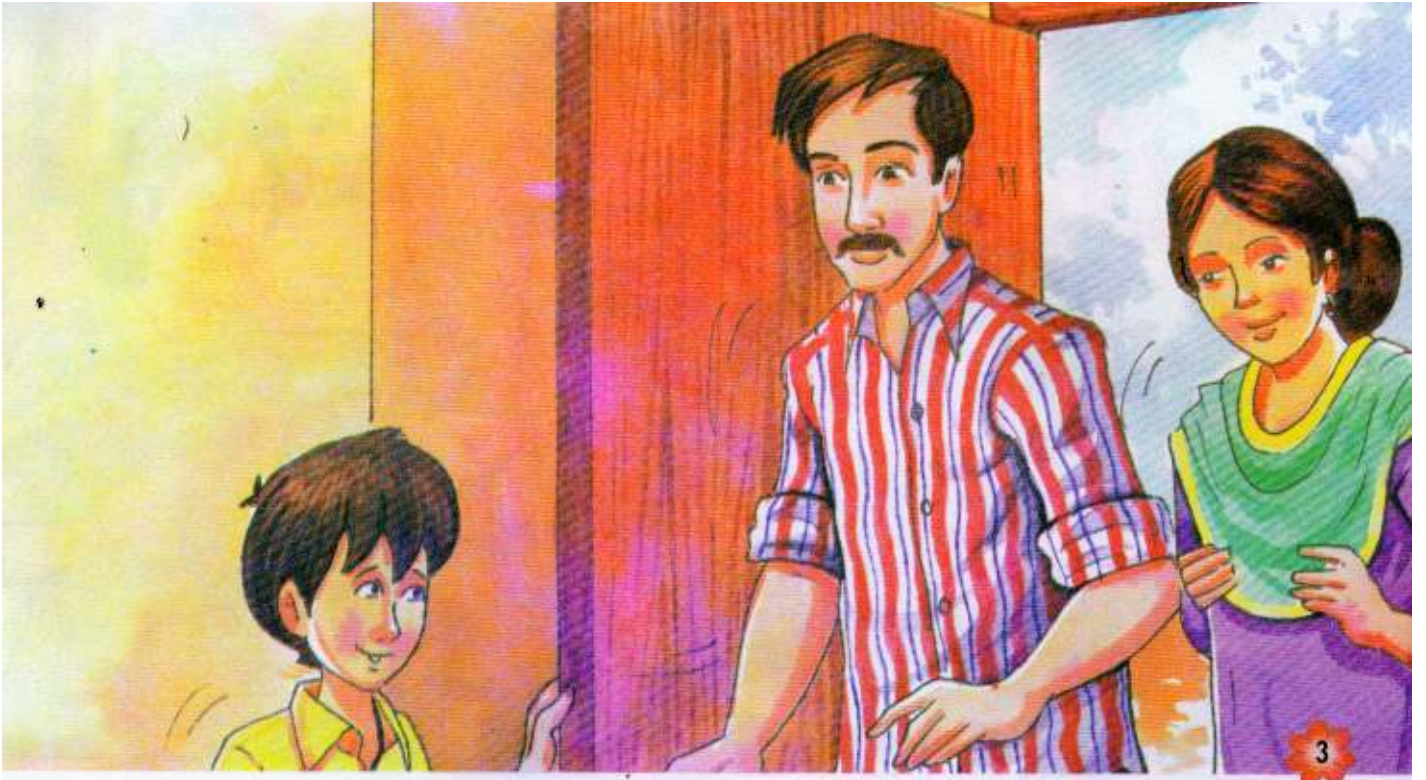


दोस्त की पत्नी

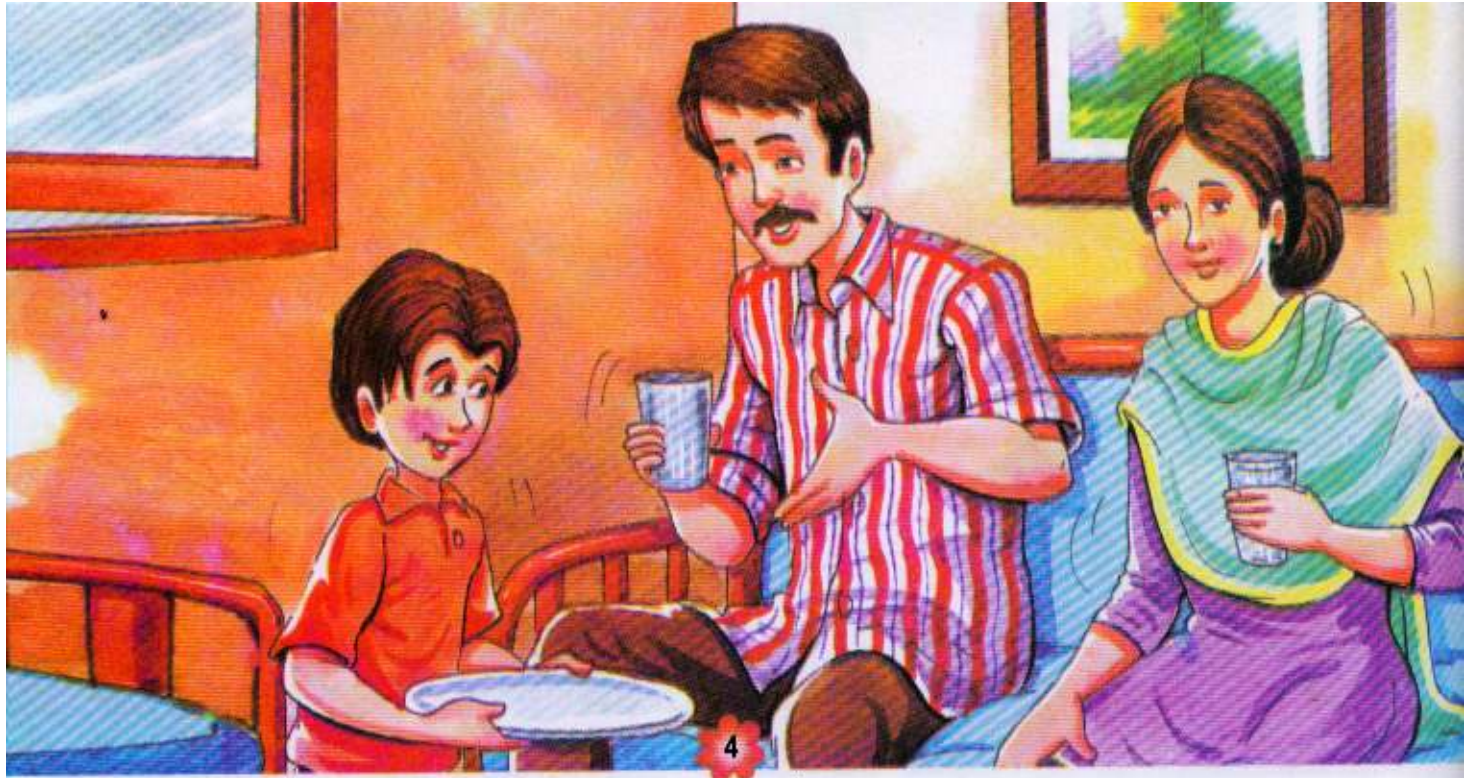


एक दिन जमाल और मदन घर में अकेले थे।  
घर के सब लोग बाज़ार गए हुए थे।  
जमाल और मदन घर-घर खेल रहे थे।  
जमाल मम्मी बना था और मदन पापा।





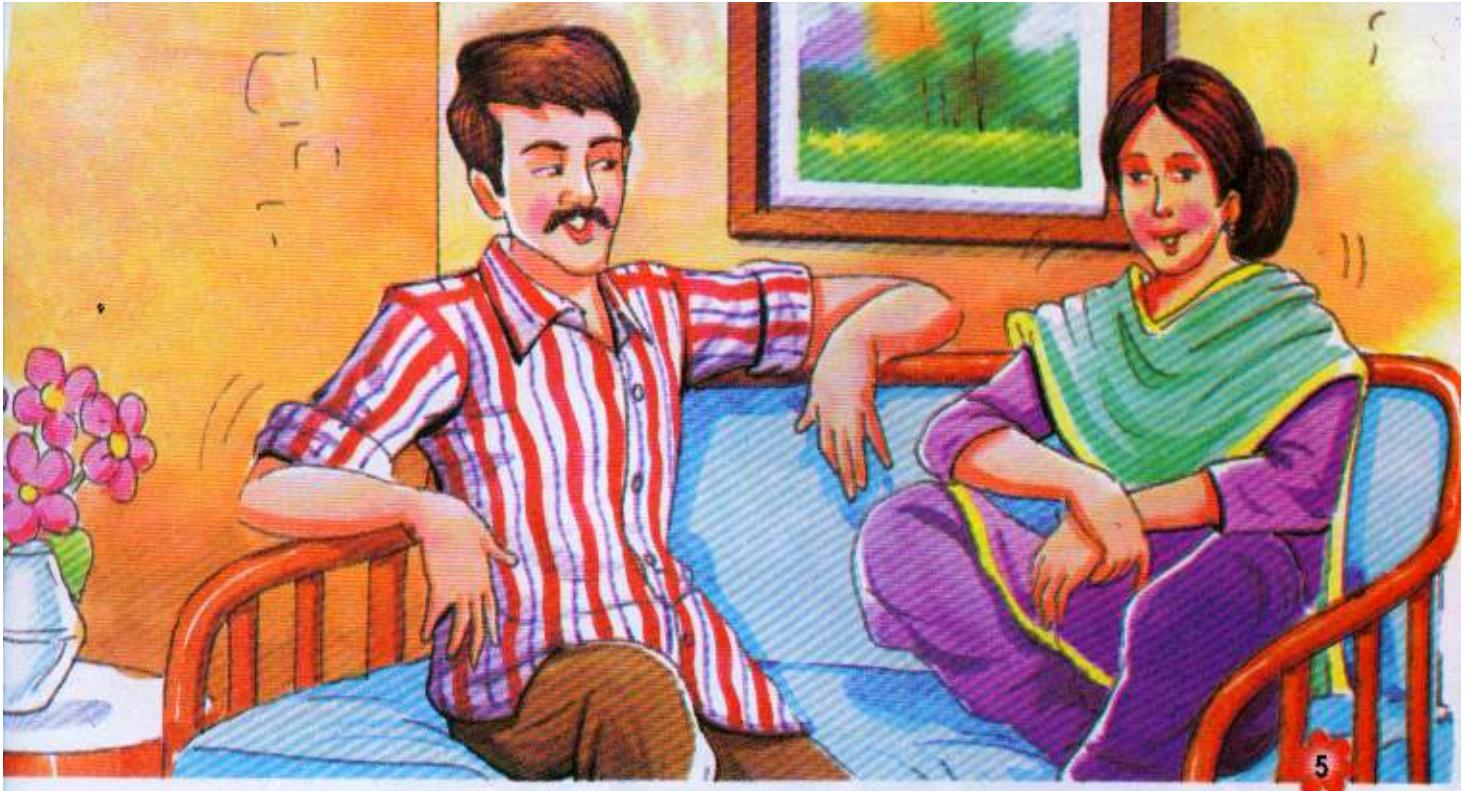
तभी घर की घंटी बजी।  
मदन ने दरवाज़ा खोला।  
पापा मम्मी से मिलने कोई आया था।  
मदन ने उन्हें अंदर बैठाया।



4

जमाल ने उनको पानी लाकर दिया।  
वे जमाल के पापा के दोस्त थे।  
उनके साथ उनकी पत्नी भी आई थीं।  
उन्होंने जमाल से मम्मी-पापा के बारे में पूछा।





जमाल ने बताया कि सब बाज़ार गए हुए हैं।  
मदन बोला कि पापा सब्ज़ी लेकर जल्दी ही लौट आएँगे।  
पापा के दोस्त और उनकी पत्नी इंतज़ार करने लगे।  
वे आराम से पैर फैलाकर बैठ गए।



6

जमाल और मदन रसोई में आ गए।  
जमाल चाय बनाने लगा।  
मदन खाने के लिए कुछ ढूँढ़ने लगा।  
मदन को डिब्बों में कुछ नहीं मिला !





7

मदन की नज़र टोकरी में रखे भुट्टों पर पड़ी।  
उसने चारों भुट्टे उठा लिए।  
मदन ने सोचा कि भुट्टे भूने जाएँ।  
जमाल चाय बनाने में ही लगा हुआ था।

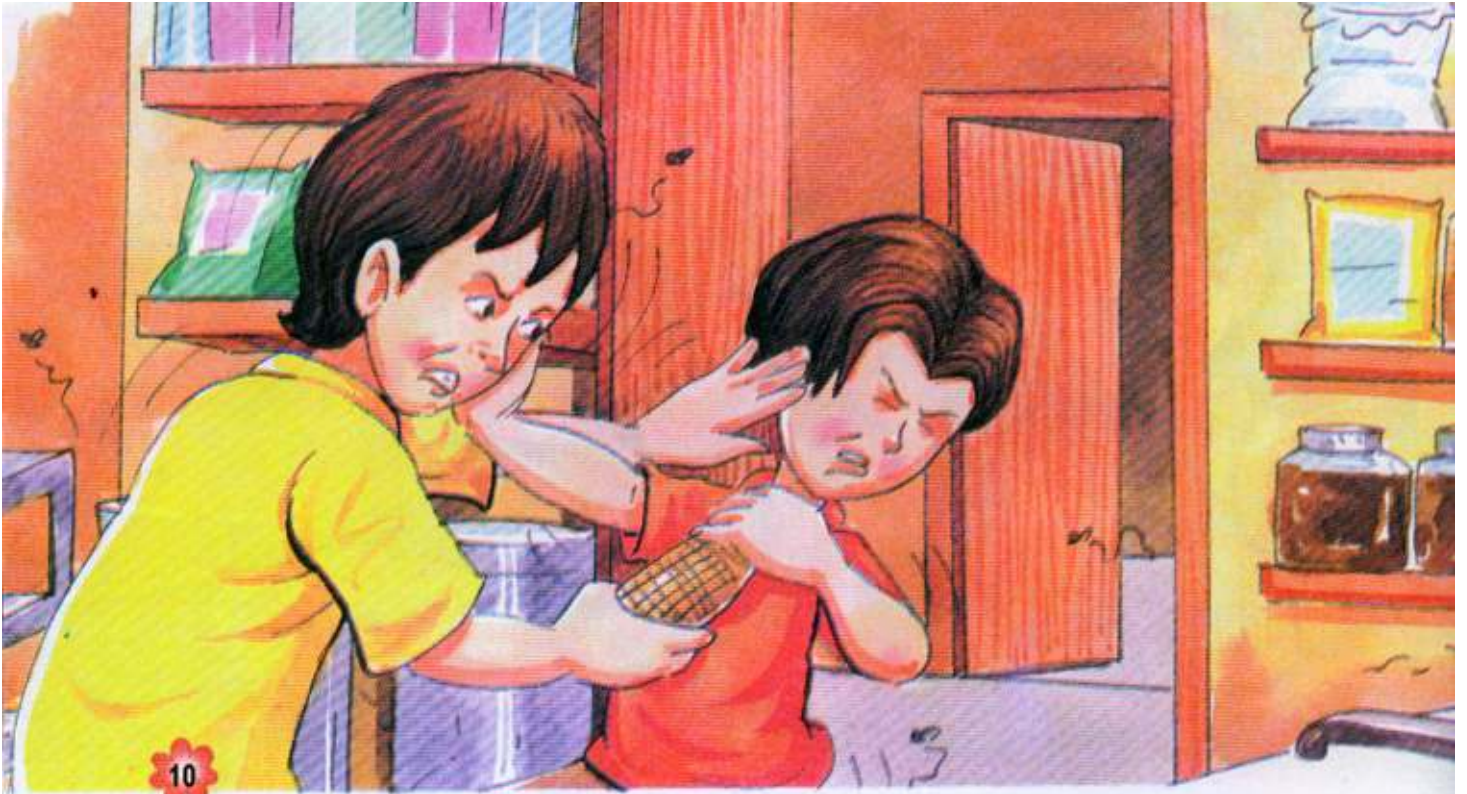


मदन भुट्टों को छीलने लगा।  
उसने भुट्टों के छिलके और बाल निकाले।  
जमाल ने चाय को प्यालों में छाना।  
उसने मदन के हाथ में भुट्टे देखे।





जमाल ने पूछा कि भुट्टों का क्या करोगे।  
मदन ने कहा कि वह भुट्टे भूनने जा रहा है।  
जमाल ने उससे भुट्टे छीन लिए।  
वह बोला कि भुट्टे उबालकर खाएँगे।



जमाल और मदन में भुट्टों को लेकर लड़ाई हो गई।  
मदन भुट्टे भूनना चाहता था।  
जमाल भुट्टे उबालना चाहता था।  
बनी हुई चाय एक तरफ़ रखी थी।





मदन ने दो भुट्टे जमाल को दे दिए।  
उसने जमाल से कहा कि जो करना है कर लो।  
जमाल ने भुट्टों के दो-दो टुकड़े कर दिए।  
वह भुट्टों को उबालने लगा।



12

मदन चाय देने बाहर चला गया।  
जमाल ने एक पतीले में पानी भरा।  
उसने भुट्टों के टुकड़े पतीले में डाले।  
पतीले को गैस पर चढ़ा दिया।





मदन रसोई में वापस आया।  
वह दूसरी गैस पर भुट्टा भूनने लगा।  
जमाल उबलते हुए भुट्टों को हिलाता रहा।  
उसने पतीले में थोड़ा नमक भी डाला।



14

मदन का भुट्टा चट-चट आवाज़ कर रहा था।  
मदन उसको उलट-पलट कर भून रहा था।  
भुट्टा भुनकर भूरा-काला हो गया था।  
जमाल अपने उबलते हुए भुट्टों को हिला रहा था।





मदन ने अपना दूसरा भुट्टा भुनने रख दिया।  
उसने अपने पहले भुट्टे पर नींबू और नमक लगाया।  
जमाल ने भी अपने भुट्टे पंतीले में से निकाल लिए।  
उसने अपने भुट्टों पर मसाला लगाया।



दोनों अपने-अपने भुट्टे लेकर आए।  
पापा के दोस्त ने भुना हुआ भुट्टा खाया।  
उनकी पत्नी ने उबला हुआ भुट्टा खाया।  
उन्होंने जमाल और मदन के भुट्टों की खूब तारीफ़ की।





2096

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी  
NCERT

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

# तोता



पढ़ना है समझना





प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता शण्ड़े, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सोमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - जोएल गिल

सञ्चा तथा आवरण - निधि बाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, चैतन चौधरी, अशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रशासनिक  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्राथमिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष, माध्यमिक विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुल माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
देवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वरधा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन  
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,  
निदेशक, प्रिण्टर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में राखिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अश्विन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, ए-28, इन्डियन एरिया, साइट-ए,  
मधुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-बैट)  
978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में सज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

#### सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

#### एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अश्विन्द मार्ग, नवी दिल्ली 110 016, फ़ोन : 011-26562708
- 108, 108 फ्लैट रोड, हेवी इन्फ्रस्ट्रक्चर, होस्टेल्, बरालाकरी III फ्लैट, बंगलुरु 560 085  
फ़ोन : 080-26725746
- नवसंवेदन टुन्डू भवन, इन्फ्रस्ट्रक्चर नवसंवेदन, अहमदाबाद 380 014, फ़ोन : 079-27541446
- सी.इन्फ्रस्ट्रक्चर, कैंपस, निकटः धनकुल बस स्टॉप पवित्रटी, कोलकाता 700 114  
फ़ोन : 033-25510454
- सी.इन्फ्रस्ट्रक्चर, कॉम्प्लेक्स, मालीगौन, गुवाहाटी 781 021, फ़ोन : 0361-2678869

#### प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजकुमार मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार  
मुख्य संपादक : रवींद्र ठाकुर मुख्य व्यवहार अधिकारी : शैलम नागुर्ती

# तोता



काजल

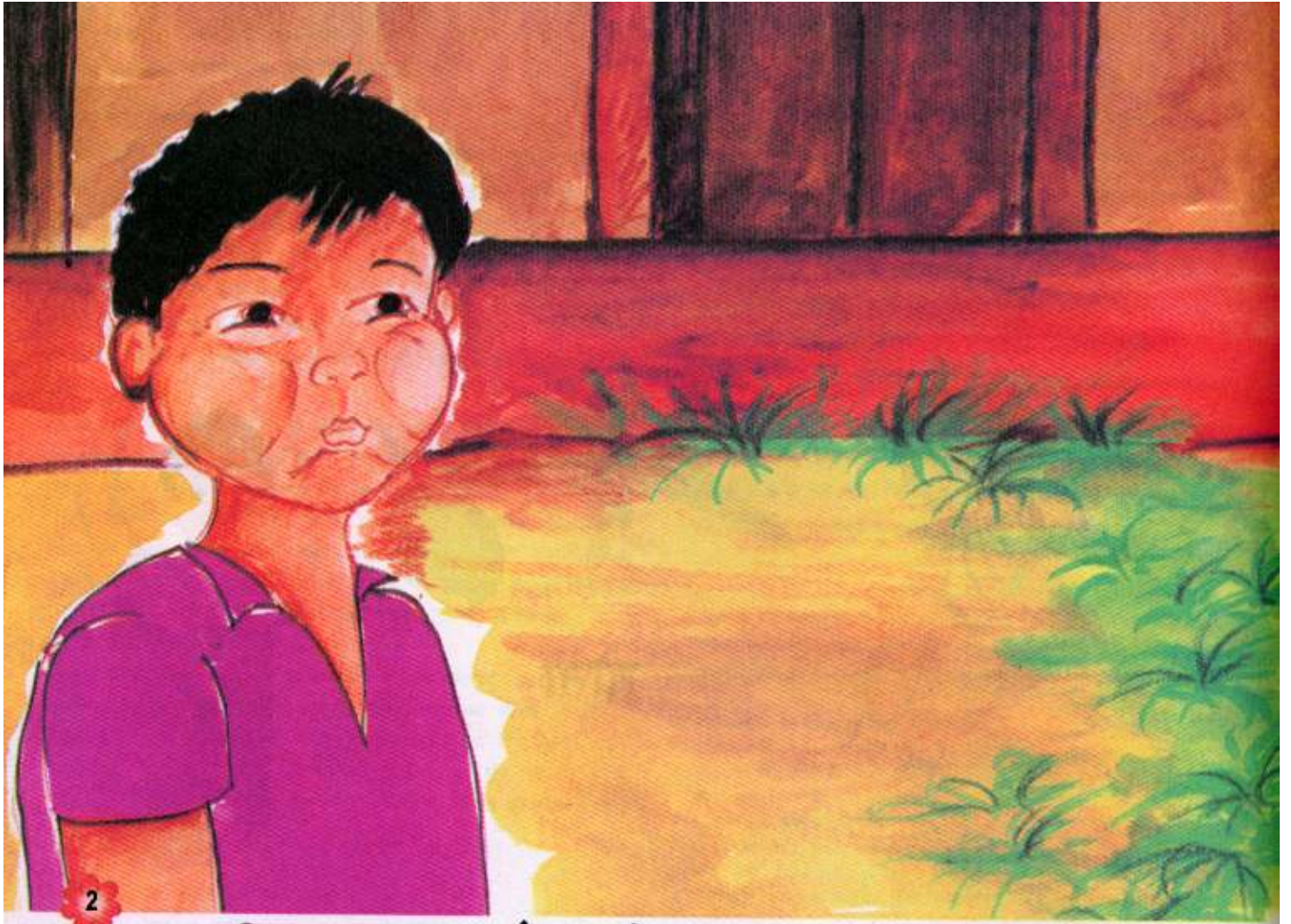


तोता



माधव





2

एक दिन माधव आँगन में कुल्ला कर रहा था।





उसकी नज़र चौकी पर बैठे एक तोते पर पड़ी।





4

माधव ने काजल को तोता दिखाया।





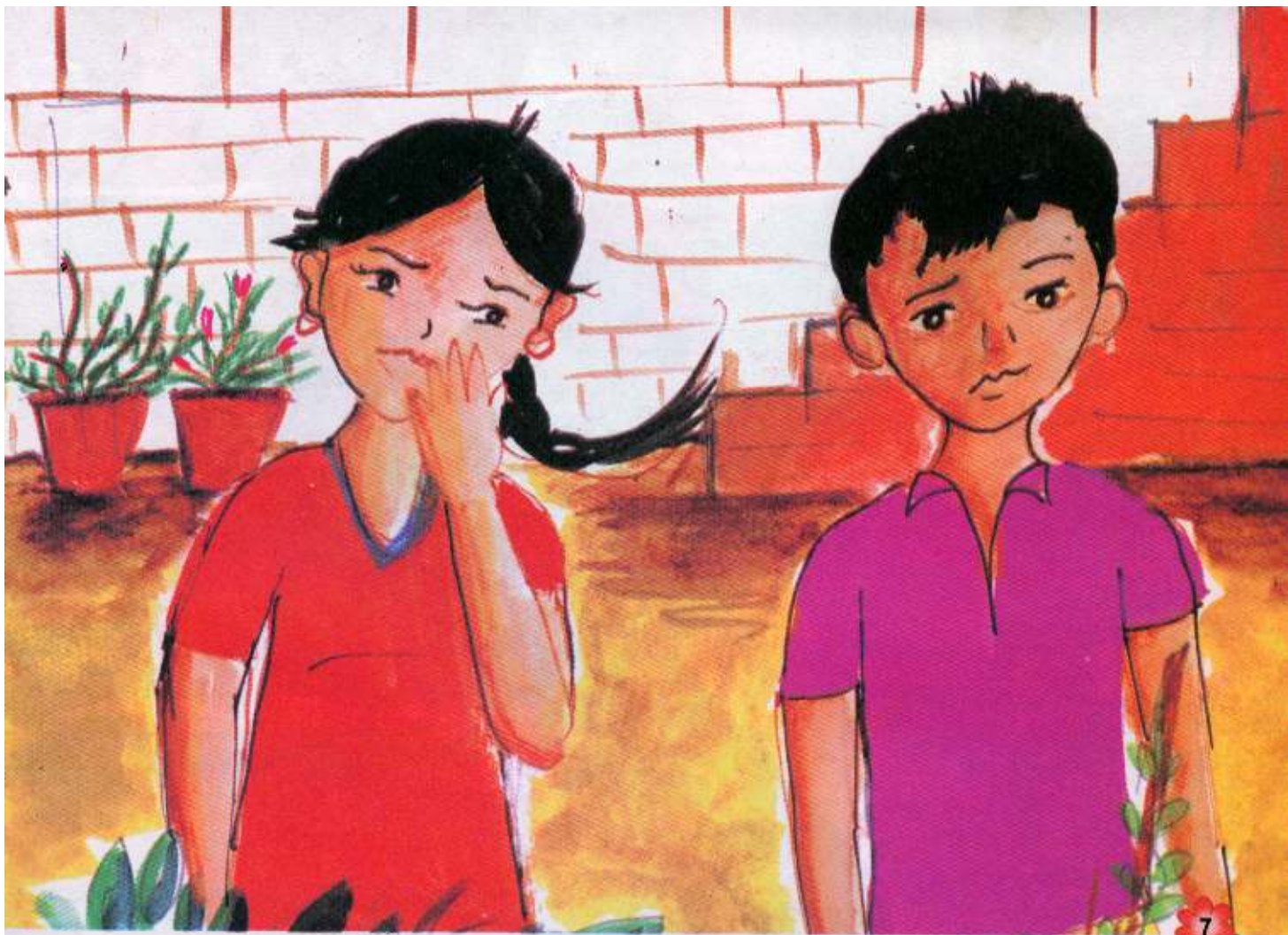
तोता धीरे-धीरे चल रहा था।





6

साथ वह उड़ नहीं पा रहा था।



माधव और काजल उसको पास से देखने लगे।

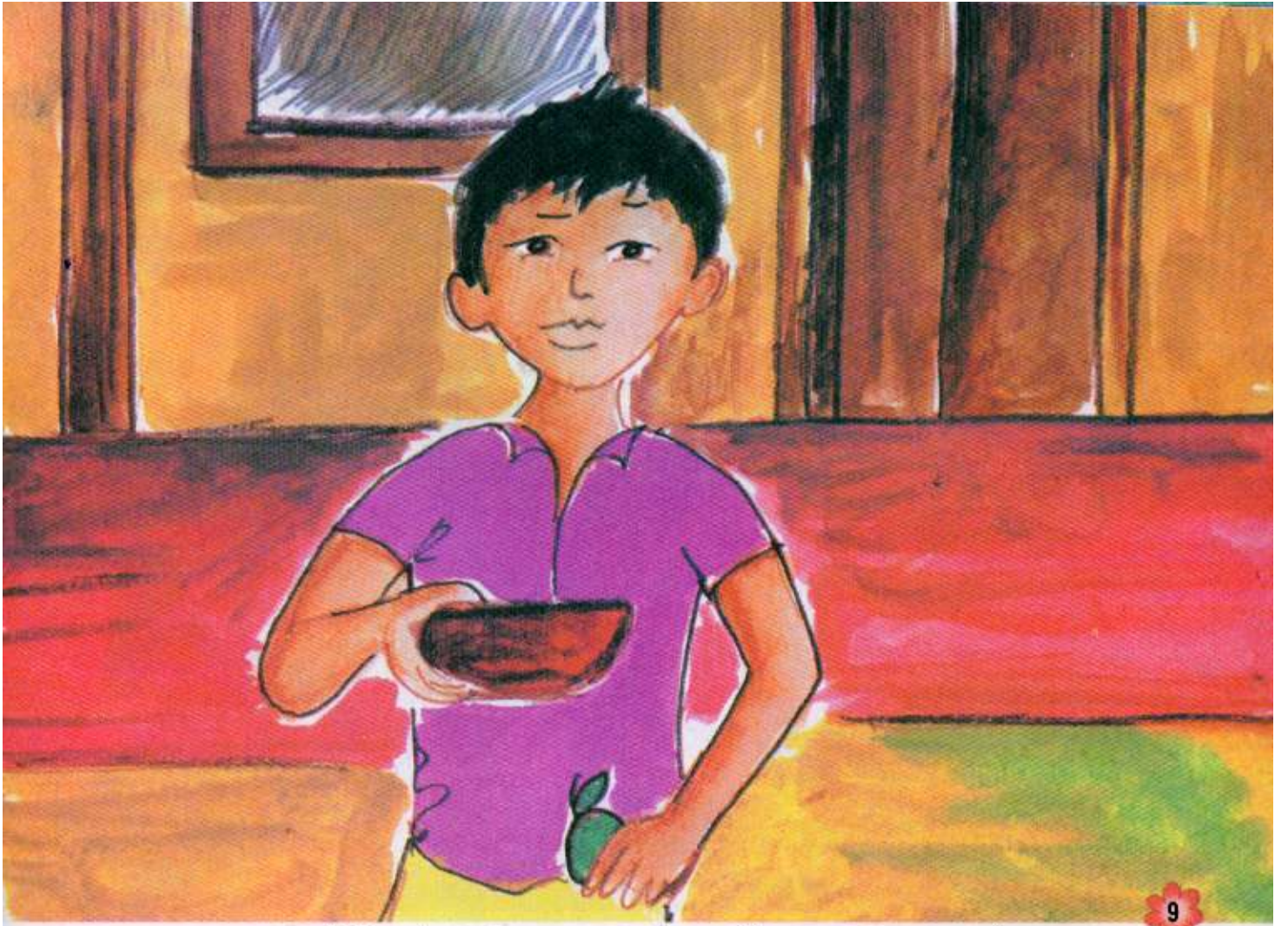




8

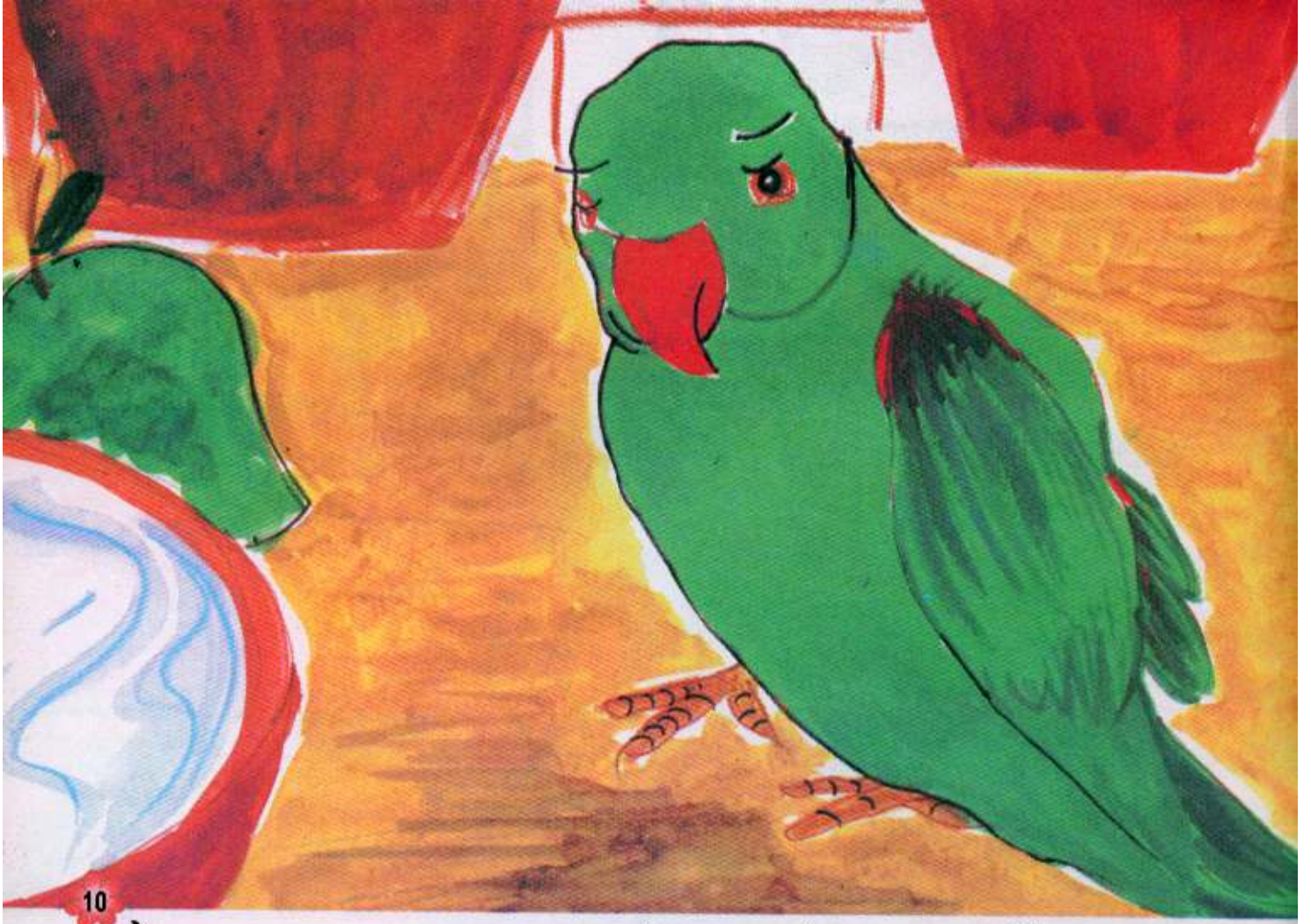
तोते को चोट लगी हुई थी।





माधव तोते के लिए पानी और अमिया ले आया।





10

तोता इतना डरा हुआ था कि उसने कुछ नहीं खाया।





वह धीरे-धीरे चल कर गमलों के पीछे छिप गया।





12

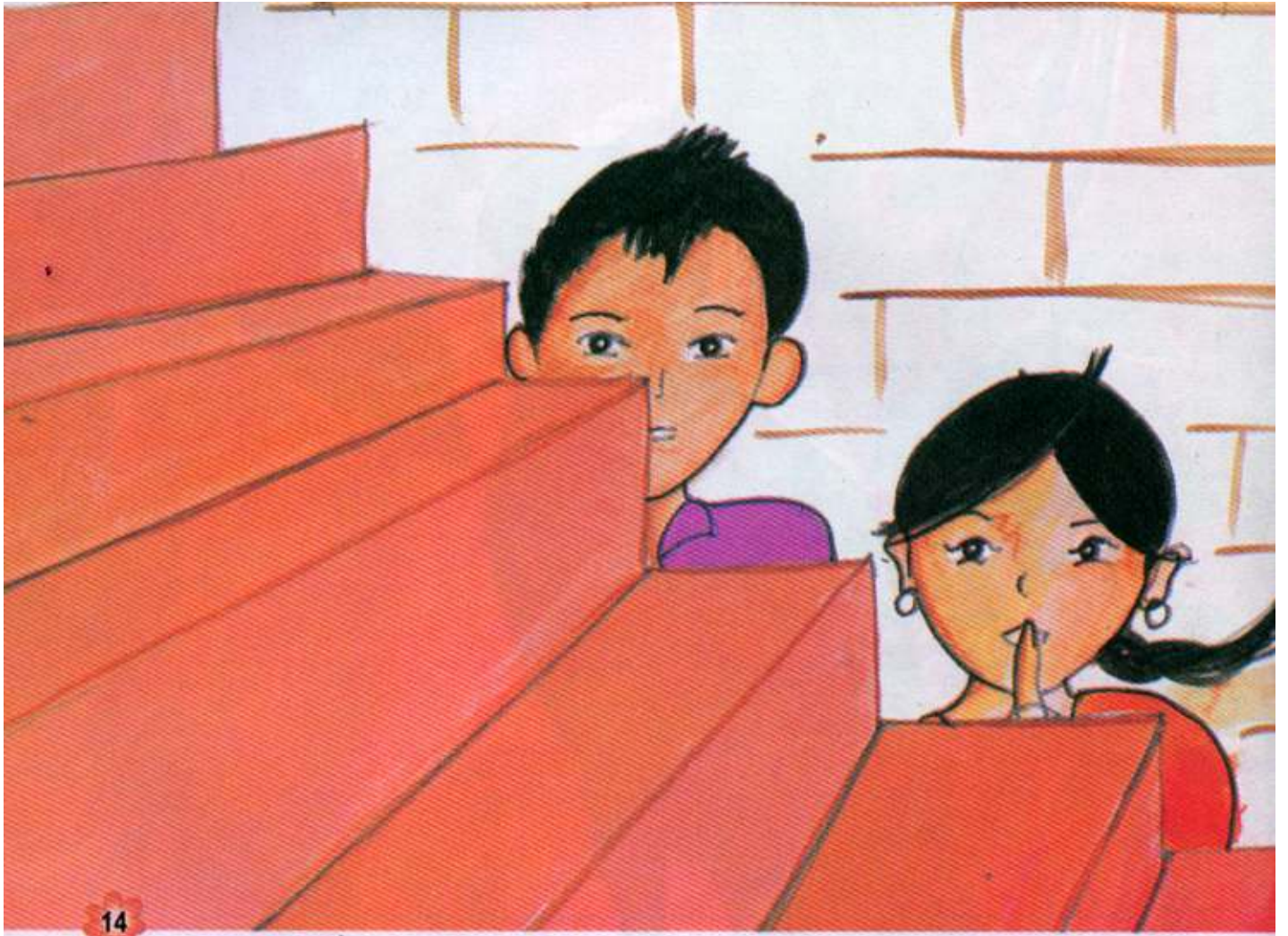
काजल ने पानी और अमिया वहीं सरका दिए।





तोते ने फिर भी कुछ नहीं खाया।



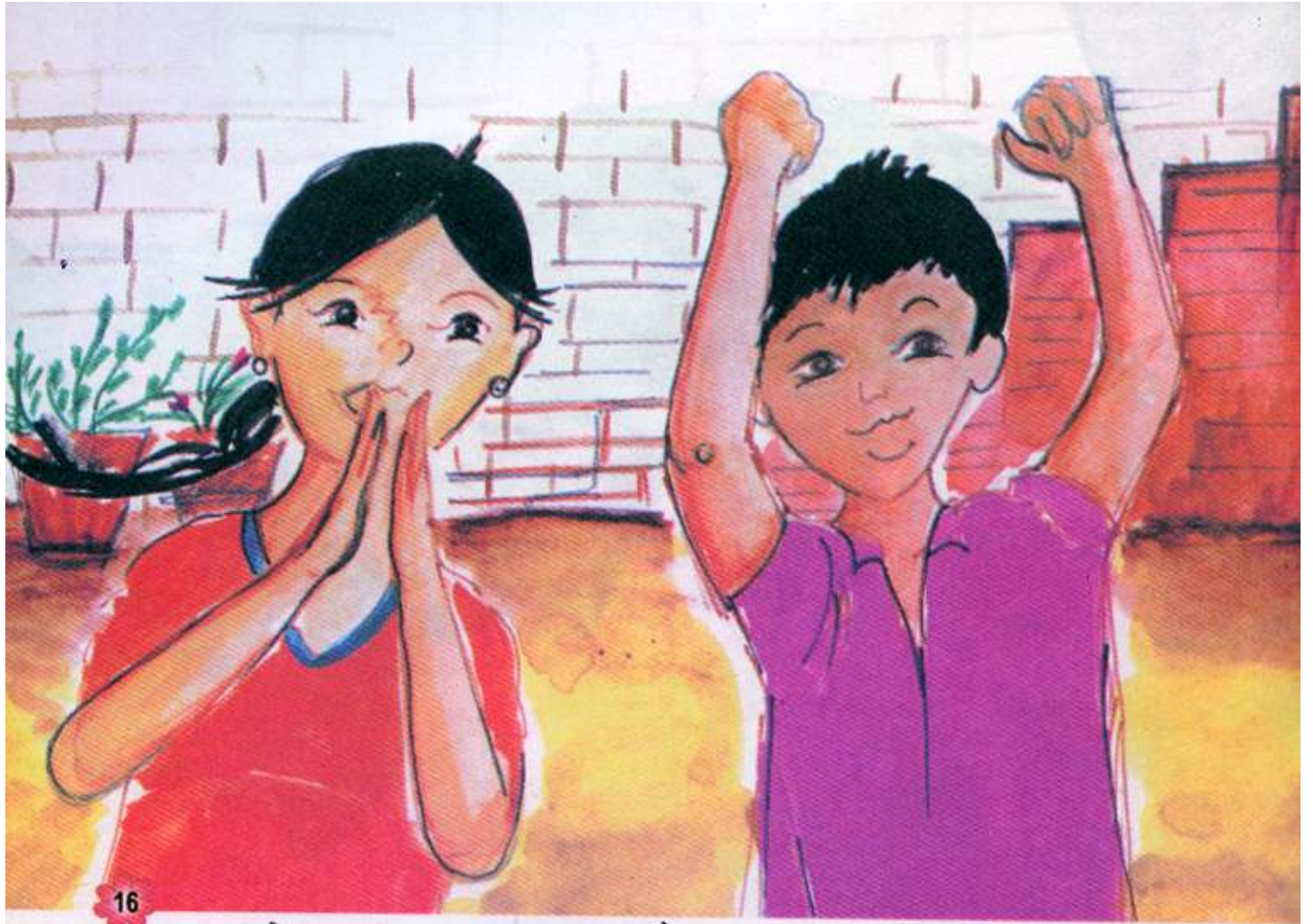


माधव और काजल सीढ़ियों के पीछे छिप गए।



तोते ने धीरे से अमिया खाई और पानी पी लिया।





16

यह देख कर काजल और माधव खुश हो गए।



2097



रु.10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING